आचार्यश्री जी की ५० पूजा एवं ५० आरतियों का संकलन

श्री पूजांजलि विद्या

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना

कृति	:	श्री पूजांजलि विद्या
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	द्वितीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	100/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

सतीशचंद्र-श्रीमती मीना,

देवेन्द्रकुमार-श्रीमती नीलम (LIC),

ई. दीक्षा, दिशा, नमन जैन

समस्त फणीश परिवार (दुमदुमा) पृथ्वीपुर

अनुक्रमणिका (INDEX)

श्री विद्यागुरु हिंदी पूजन

1. निज गुरु के तुम... 05
2. विद्यासागर गुरु अनगारी... 09
3. गुरु बिन इस संसार... 14
4. विद्यागुरु अनुपम गणी... 18
5. जग में गुरु आदर्श... 21
6. मौन मधुर मुस्कान... 25
7. मुख आँखों की बात क्या... 29
8. महा अर्चना गुरु की... 32
9. गुरुवर की अर्चना... 35
10. गुरु गुरु हैं गोविंद... 38
11. गाय दूध से शोभती... 41
12. गुरु बिन इस संसार... 44
13. पूजा के परमेश... 48
14. विद्या गुरुवर परम तपस्वी... 51
15. शिष्यों के गरुदेव हैं... 54
16. गुरुवर ने हर भक्त का... 58
17. घर में मन जब नहीं लगे... 61
18. दिव्य देशना कहती रोज... 64
19. यही है प्रार्थना गुरुवर... 66
20. आए गुरु के द्वार... 68
21. हम पूजन पाठ रचाएँ... 71
22. आश लगाकर आए हैं... 73
23. डोर बँधी जब श्रद्धा की... 76
24. झालर घंटी सुनकर... 78
25. गुरु आन हैं गुरु बान हैं... 80

26. आप शब्द हैं आप अर्थ हैं... 83
27. गुरु बिन भक्त कहाँ... 85
28. गुरु ही हैं विश्वास... 88
29. श्री विद्या गुरु... 90
30. हमारे तुम्हारे... 93
31. जन्मों जनम तुमको ध्याते... 95
32. आस्था के ईश्वर... 98
33. आओ जी! आओ जी!... 101
34. गुरु आन हैं... 104
35. चल रे! गुरु दर्शन को... 107
36. श्रद्धा के श्रद्धान हैं... 110

श्री विद्यागुरु बुदेली पूजन

37. मोरे गुरुवर... 112
38. अरे श्रद्धा कौ चौक... 116
39. कितै भगत हम... 118
40. हम सबकौ सौभाग्य... 121
41. दुनियाँ कौ सौभाग्य... 124
42. नगरी में लच गऔ हल्ला रे... 126
43. अपनौ भाग्य जगा लो रे... 129
44. बुंदेली वारे बड्डे बाबा... 132
45. बाबा हिलतई नइंया रे... 136
46. कही महारी मानौ... 139
47. जब सें पांव परे... 142
48. मजे मजे सें रें हैं... 145
49. बब्बा भी कै रये... 147
50. अंगना दोरौ घर भर... 150
51. मुनिश्री सुव्रतसागरजी पूजन–(तुम्हें सारथी बना लिया) 153
52.आरती–विद्या 156

श्री विद्यागुरु पूजन—१

स्थापना

(दोहा)

निज गुरु के तुम गुरु बनें, भक्तों के गुरु ईश।
सब पूजें विद्या गुरु, मान इष्ट जगदीश॥

(जोगीरासा)

पुण्य उदय शुभ मेरा आया, गुरुदर्शन तब पाया।
दर्शन से सब अघ नश जाते, पाते शिव-सुख छाया॥
करके गुरु विद्यासागर जी, आह्वानन अब तेरा।
हृदय कमल पै आन विराजो, मेटो भव दुख फे रा॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

भव रोगों भोगों में फँ सकर, खुद को दुखी बनाया।
अब तक हम तो स्वस्थ हुये ना, सब उपचार कराया॥
जनम-जरा-मृति नाश सकें हम, औषध रत्नत्रय दो।
सो चरणों में अर्पित यह जल, हमको निर्मल कर दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पदार्थ जग में जो शीतल, तन का ताप मिटाते।
पर मन का संताप कभी ये, शान्त नहीं कर पाते॥
शमन दमन की कला सीख गुरु, भव संताप हटाते।
सो अन्तर की शीतलता को, चन्दन नित्य चढ़ाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सब पद दुख कारक हैं, ये सब नश्वर होते।
इनको पाने मचल रहे जो, वे प्राणी नित रोते॥
इनको तजकर बने दिगम्बर, निज पद में रम जाने।
सो चरणों में अर्पित अक्षत, अक्षयपद को पाने॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इस धरती पर राज्य चलाया, सबको जिनने जीता।
ऐसे चक्री योद्धाओं को, कामदेव ने जीता॥

किन्तु कठिन व्रत बह्मचर्य धर, तुमने उसे हराया।
इस बैरी से बच पाने को, पुष्प चढ़ाने आया॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा-तृषा से पीड़ित जग-जन, सुधा-जहर सब खाते।
किन्तु रोग ये मिट ना पाते, नित-नित बढ़ते जाते॥
सो अनशन ऊनोदर तप से, गुरु ये सभी मिटाते।
क्षुधा रोग को नाश सकें हम, सो नैवेद्य चढ़ाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक चन्दा सूरज सारे, अल्प प्रकाश दिलाते।
नश्वर ऐसे साधन जग से, मोह तिमिर न हटाते॥
अघतम को गुरु तुमने नाशा, सम्यक् दीपक द्वारा।
हम भी पायें आत्म ज्योति सो, अर्चन दीपक द्वारा॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की सारी ज्वालाओं से, भस्मसात सब होता।
किन्तु कर्म को जला सके जो, ताप न ऐसा होता॥
फिर भी गुरुवर ध्यान-अग्नि से, कर्म समूह जलाते।
ऐसे ही हम कर्म जलायें, सो यह धूप चढ़ाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सब फल होते नित्य सुलभ हैं, जगह-जगह मिल जाते।
इनको पाकर सुख ना पाएँ, नहीं मोक्ष फल पाते॥
तभी मोक्ष दुर्लभ फल पाने, गुरु इनको ठुकराते।
गुरु-कृपा से हम यह पाएँ, सो फल नित्य चढ़ाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक जल चन्दन अक्षत औ, पुष्प दीप चरु लाया।
और सुगन्धित धूप फलों मय, अर्घ चढ़ाने आया॥
करूँ समर्पित अर्घ गुरु को, पद अनर्घ को पाने।
आया गुरु पूजन के द्वारा, भव-भव बन्ध नशाने॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

गुरु की पूजा कर करूँ, जयमाला गुणगान।
भक्ति भाव श्रद्धा सहित, यह मंजिल सोपान॥

(जोगीरासा)

जब यह सारा देश हमारा, सहता रहा गुलामी।
और अँधेरे मिथ्यातम से, सब जग को हैरानी॥
उसी समय तुम आए धरा पर, बंधन तिमिर हटाने।
सब जग को रोशन कर देने, निज अधिकार दिलाने॥१॥

शरद पूर्णिमा के तुम चन्दा, माँ श्रीमति सुत प्यारे।
मल्लप्पा के राज दुलारे, सबके नित्य सहारे॥
कर्नाटक में जन्म लिया था, विद्याधर कहलाये।
तोता पीलू नाम सुहाये, दया धर्म अपनाये॥२॥

फिर लौकिक शिक्षा को पाकर, मोक्षमार्ग मन भाया।
फिर आचार्य देशभूषण से, ब्रह्मचर्य व्रत पाया॥
फिर कर्नाटक बेलगाँव वा, ग्राम सदलगा त्यागा।
फिर दक्षिण से उत्तर आकर, भाग्य सितारा जागा॥३॥

श्री आचार्य ज्ञानसागर के, पद में शीश झुकाया।
और कृपा गुरुवर की पाकर, पूजित मुनिपद पाया॥
राजस्थान अजमेर नगर में, तीस जून अड़सठ को।
विद्यासागर बनकर पाये, आतम के वैभव को॥४॥

दूर बुराई से नित रहना, ज्ञान ध्यान रत रहना।
गुरुकुल अपना संघ बनाकर, श्री नारी से बचना॥
देकर अच्छी शिक्षा गुरु ने, लीनी आत्म समाधि।
तुमको अपना सुगुरु बनाकर, दी आचार्य उपाधि॥५॥

गुरु की समाधि पूर्ण कराकर, निज कर्तव्य निभाया।
गंगा यमुना सरस्वती का, वरद हस्त गुरु पाया॥

कुन्दकुन्द के तुम कुन्दन हो, मूलाचार निभाते।
इस कलयुग में वसुन्धरा पर, धर्म ध्वजा फहराते॥६॥
वैरागी परिवार आपका, मोक्षमार्ग पर चलता।
जो भी आता शरण आपकी, फू ल सरीखा खिलता॥
भक्त आपके हम अज्ञानी, ज्ञानमृत से भर दो।
'सुव्रत' धरकर शिव-सुख पाएं, गुरुवर ऐसा वर दो॥७॥

(दोहा)

गुरुवर के गुण गान को, धरूँ जनम हर बार।
जयमाला मैं क्या करूँ, गुरुवर गुण भण्डार॥
फिर भी श्रद्धावश करूँ, नित पूजन गुणगान।
जैसे दीपक से करें, सूरज का सम्मान॥
गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

सच्चे गुरु की प्राप्ति ही परमात्मा की प्राप्ति है।

श्री विद्यागुरु पूजन—२

स्थापना (चौपाई)

विद्यासागर गुरु अनगारी, भक्तों के भगवन् उपकारी।
ज्ञान सिन्धु के शिष्य निराले, हम सबके दुख हरने वाले॥
द्रव्य सँजोकर हम सब लाये, और भक्ति पूजन को आये।
भक्तों की विनती सुन आओ, मनमन्दिर में गुरु वस जाओ॥

(दोहा)

मन को हम मन्दिर बना, गुरुवर को भगवान।
हृदय कमल आसीन कर,करते पूजन ध्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

जल से तन धोना तो छोड़ा, रत्नत्रय से नाता जोड़ा।
उसी नीर से खूब नहाते, निज पर चेतन को चमकाते॥
रत्नत्रय सागर के स्वामी, भक्त आपके हम अज्ञानी।
थोड़ा ये जल हमको दे दो, अपनी शरण हमें भी ले लो॥
गुरु पूजन को आए हम, करें समर्पित नीर।
गुरु कृपा कर नाश दो, जन्म जरा मृतु पीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चन्दन आदिक त्यागे, किन्तु सदा समता अनुरागे।
इससे शीतलता नित पाते, सबके भव संताप नशाते॥
समता रस के सागर-मीठे, समता से हम बिल्कुल रीते।
समता रखना हमें सिखादो, सबका भव संताप नशा दो॥
गुरु पूजन को आए हम, करें समर्पित गन्ध।
गुरु कृपा कर नाश दो, भवाताप दुख द्वन्द्व॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जगपद त्यागी गुरु कहलाते, पर अक्षयपद पर ललचाते।
तभी दिगम्बर रूप बनाया, शिवपद दायक हमें सुहाया॥
इसकी महिमा कही न जाए, निजपर का यह बोध कराए।
अक्षयपद ये ही दिलवाता, इसे दिला दो हे गुरुदाता!॥

मोती सम तंदुल लिये, गुरु पूजन को आये।
अक्षय पद की दो दिशा, पूजत गुरु मुनिराय॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव है सबका राजा, आप बजाये उसका बाजा।
ब्रह्मचर्य धर उसे हराया, वह लज्जित हो शीश झुकाया॥
भव-भव में ये हमें घुमाए, सेवा हमसे सदा कराए।
रक्षा उससे करो हमारी, दे दो गुरुवर मोक्ष सवारी॥
शुद्ध पुष्प से हम करें, गुरु पूजन शुभ काम।
हे गुरुवर! हर लीजिए, कामदेव का काम॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस भोजन त्यागे सारे, पर ज्ञानामृत पिये सदा रे।
अनशन ऊनोदर करते हो, भोग विषों से नित डरते हो॥
भोग भोगना हम सब चाहें, किन्तु भोग कर हम पछतायें।
हम तर जायें दे दो बिन्दु, गुरु ज्ञानामृत के हो सिन्धु॥
लेकर ये नैवेद्य हम, गुरु पद में नत शीश।
क्षुधा रोग का दुख मिटे, दो ऐसा आशीष॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं प्रदर्शन तुम करते हो, कोना ढूंढ़ ध्यान करते हो।
मोह शत्रु तुम से भय खाए, ज्ञान-जोत से वह नश जाए॥
मोह शत्रु से हम घबराए, इसीलिय गुरु द्वारे आए।
आतम ज्योतित अब कर देना, मोह तिमिर जल्दी हर लेना॥
दीप ज्योति से हम करें, गुरु पूजन सम्मान।
महामोह तम नाश दो, गुरुवर कृपा निधान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप गन्ध से ना हर्षाते, पर चारित्र सुगन्ध लुटाते।
जिससे जग महका है सारा, कर्म जलाते गुरु तप द्वारा॥
राग-द्वेष से सब जग मैला, विषय भोग का वैभव फैला।
अष्ट कर्म दल हमें रुलाते, आतम बगिया ना महकाते॥

धूप सुगन्धी खे करें, गुरु पद का गुणगान।
धूम उड़ा दो कर्म का, गुरु संयम दो दान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

यहाँ सभी फल हैं गुस्से में, हम ना आते गुरु हिस्से में।
गुरुवर फल खाना सब त्यागे, किन्तु मोक्षफल से अनुरागे॥
हम इससे विपरीत हुए हैं, मोक्ष महाफल नहीं छुए हैं।
गुरु दृष्टि अब हम पर डालो, चरण शरण में हमको पालो॥
फल लेकर पूजा करें, और झुकाते माथ।
महामोक्ष फल हेतु अब, गुरुवर दीजे पाथ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य गुरु को ना भाते, पर षट् द्रव्यों को नित ध्याते।
शुद्धातम पाने की इच्छा, देते लेते अच्छी शिक्षा॥
बहुत-२ हम अर्घ चढ़ाये, पर हम अनरघ ना बन पाये।
अब क्या गुरु को भेंट चढ़ाऊँ, गुरु चरणों में खुद चढ़ जाऊँ॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ ले, करें समर्पित आज।
अनर्घपद अनुपम मिले, कृपा करो गुरुराज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

गुरु सद्गुण के कोश हैं, विद्या के भण्डार।
रत्नत्रय के ईश हैं, नैया खेवनहार॥
बने दिगम्बर त्याग सब, गुरुवर मालामाल।
मन-भौंरा गुरुपद रमे, करूँ तभी जयमाल

(चौपाई)

गुरु कहलाते हैं अनगारी, ना रखते वाहन ना गाड़ी।
फिर भी गुरु का नाम निराला, शिववाहन पर मिलने वाला॥
सदा दिगम्बर गुरु रहते हैं, नहीं पास में कुछ रखते हैं।
फिर भी सारा जग दीवाना, गुरु सम दूजा और न माना॥

जग-पद वैभव जो रहा, तुलता होता मोल।
अतुलनीय गुरुवर रहे, अनुपम शुचि अनमोल॥
सन्त शिरोमणि गुरु कहलाते, मणियाँ रत्न जिन्हें न भाते।
पर रत्नत्रय के लोभी हैं, किन्तु दान गुरु देते भी हैं॥
सेवा किये बड़े-बाबा की, तभी बने छोटे-बाबा जी।
कहलाते तो बाबा छोटे, किन्तु काम भाते ना छोटे॥
जग की जड़-माया रही, गुरुवर उससे दूर।
तभी दुखों से दूर हैं, शिव-सुख से भरपूर॥
बड़ा संघ है भीड़ बड़ी है, स्वागत में सब प्रजा खड़ी है।
आगे पीछे नित है मेला, गुरु मन चंगा और अकेला॥
रहते हो बालक के जैसे, हमें लगो ना बालक जैसे।
गुरुपालक सबजग के स्वामी, जयहो जयहो तुम्हें नमामि॥
विद्यागुरु के पद रमें, सुरगुरु चक्री लोक।
हम श्रद्धा से पूजते, पल-पल देते धोक॥
नहीं किसी का तुम पथ देखो, और किसी को भी ना देखो।
किन्तु कहो नित देखो-देखो, हम ना समझें क्या यह देखो॥
जो भी आते लेने दीक्षा, उनकी लेते आप परीक्षा।
भगा बुलाकर बुला भगाना, देखो चलो बाद में आना॥
पापों के भण्डार हम, गुरुपद से नित दूर।
गुरुपद हमको अब मिले, दे दो शिवसुख पूर॥
पढ़े लिखे विद्वान कहाते, वे तुम पद में आ घबराते।
फिर भी खुद को आप बताते, अपढ़ अँगूठा छाप कहाते॥
पहले सब गुरु आप छुड़ाते, अपने पीछे हमें घुमाते।
मालामाल करो फिर स्वामी, जयहो-जयहो शिव सुखदानी॥
देख भालकर तुम चलो, थको छको ना आप।
सायवान आतम करो, गुरु का गजब प्रताव॥
गुरु अध्यात्म सरोवर हंसा, पूरी करें सभी की मंशा।
फिर भी कहते क्या करता मैं, बस गुरु आज्ञा सिर धरता मैं॥

दिन गुरुवार आपको प्यारा, गुरु पालक का लिये सहारा॥
कथनी-करनी में गुरुता है, वाह! वाह! क्या गुरु नाता है॥
गुरुवर जग में यों रहें, कीच बीच अरविन्द।
ज्ञानसूर्य विद्या गुरु, हो मुनियों के इन्द्र॥
गुरुवर हँसते और हँसाते, भक्तों के दुख दूर भगाते।
'समय-सहज''गुरु-भक्ति' सहारे, गिरि सागर सूरज से प्यारे॥
सर्वोदय सिद्धोदय वाले, तीर्थ दयोदय संयम वाले।
भाग्योदय के भाग्य विधाता, संयम पथ के आप प्रदाता॥
'कुलगुरु' के उपदेश से, 'गुरुकुल' संघ बनाए।
चलकर गुरुपद चिह्न पर, धर्म ध्वजा फहराए॥
मौन रहें या मीठा बोलें, व्यर्थ नहीं अपना मुख खोलें।
मूलाचार सहित है चर्या, समयसार मय अन्तर चर्या॥
बड़ी दूसरी गुरु की कक्षा, कौन समझ सकता वह अच्छा।
लिखना गुरु को लगे न अच्छा, किन्तु लगे निज लखना सच्चा॥
बहुत- बहुत यों गुण रहें, गुरुवर के आधीन।
कौन पूर्ण उनको कहे, होते कभी न हीन॥
जयमाला देती विजय, गुणमाला गुणदान।
गुरुपद माला मोक्ष दे, गुरु दे 'सुव्रत' दान॥
गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥
(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—३

स्थापना (दोहा)

गुरु बिन इस संसार में, कौन हरे मन मैल?
कौन पूर्ण इच्छा करे? कौन दिखाये गैल?

(ज्ञानोदय)

विद्या-गुरु तीर्थंकर जैसे, समवसरण सा संघ रहा।
बाल ब्रह्मचारी गुरु साधक, चौथे जैसा काल यहाँ॥
दर्शन पूजन को हम आये, थाल सजाकर द्रव्यों की।
मन मन्दिर में आन विराजो, लाज रखो गुरु भक्तों की॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

रोते-रोते हम जन्मे हैं, रो-रोकर ही मर जाते।
इसी रीति से हर जीवन को, व्यर्थ नष्ट हम कर जाते॥
या तो घर या मरघट देखा, देखा ना आतम अपना।
प्रासुक जल यह तुम्हें समर्पित, हरो हमारी भव-भ्रमणा॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख से छुटकारा चाहें पर, दुखदायक ही कर्म करें।
सदा सुखी रखना चाहें पर, सुखदायक ना कर्म करें॥
भव ज्वाला में जलते-जलते, भव ज्वाला से घबराये।
अपने जैसी शीतलता को, चन्दन वन्दन को लाये॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव - संसार नहीं क्षय होता, चारों गतियाँ सदा रहें।
इनमें कभी नहीं हम अक्षय, इनमें सब ही दुखी रहें॥
तुम अक्षय-पद के अभिलाषी, बने दिगम्बर शिव-पन्थी।
तन्दुल से हम पूजन करते, अक्षयपद दो निर्ग्रन्थी!॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्यारा-प्यारा सुन्दर आतम, कामदेव की कर यारी।
शील स्वभाव नशाकर अपना, बना भिखारी संसारी॥

ब्रह्मचर्य धर यथाजात बन, कामदेव का दर्प हरा।
मेरा मुझसे मिलन करा दो, दिलवाओ गुरु रूप खरा॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

कभी देह की भूख रुलाती, कभी-कभी मन तड़पाता।
षट्रस मिश्रित भोजन इनको, कभी तृप्त ना कर पाता॥
तप करके तुम ज्ञानामृत से, क्षुधा वेदनी नाश करो।
अपने में हम तुष्ट रहें गुरु, आओ उर में वास करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मय परिवार मोह राजा ने, हमें हराया पीटा है।
पर उसको संयम-सेना से, गुरुवर तुमने जीता है॥
सम्यक् संयम ज्ञान-दीप से, मोहबली को हम मारें।
ऐसा गुरु आशीष हमें दो, अघ अज्ञान तिमिर टारें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दीन-हीन हम अटके भटके, अष्ट कर्म के कर्दम में।
चिदानन्द की मधुर गंध को, खोज सके ना आतम में॥
तुम चारित्र सुगन्ध लुटाते,मन वच तन से पावन हो।
कर्मों की दुर्गंध मिटाकर, सुरभित कर दो आतम को॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम छलबल से किलकिल करते, कल उसका फल दुखदायी।
तुम पल-पल में मंगल करते, फूल खिलें फल सुखदायी॥
जग का दल-दल फल बल तजकर, आप मचलते शिवफल को।
अकल लगा गुरु नकल करें हम, ऐसा मंगल संबल दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

करतल जल वन्दन चन्दन है, अक्षत पूजन पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप श्रद्धा है, नियम धूप फल गुरु-भक्ति॥
यथा शक्ति से इन द्रव्यों को, भाव भक्तिमय हम लायें।
विद्या के सागर विद्या दो, शीश झुका हम गुण गायें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

गुणाधार गुरुदेव हैं, भगवन् के प्रतिरूप।
दोष हरें निर्मल करें, दिलवाते शिवरूप॥

(ज्ञानोदय)

विद्याधर कर्नाटक वाले, तजकर गाँव बन्धु अपने।
ज्ञानसिन्धु से दीक्षा लेकर, चलते सच करने सपने॥
विद्याधर से विद्यासागर, गुरु ने यूँ ही बना दिया।
ज्ञान-ध्यान तप संयम द्वारा,वैरागी को सजा दिया॥१॥
गुरु के पदचिह्नों पर चलकर, यश-वैभव सुख कमा रहे।
और साधना सम्यक् करके, करम-भरम सब नशा रहे॥
करते हो उपकार सभी पर, रमते हो बस अपने में।
सबके उर में बस करके भी, दुख देते ना सपने में॥२॥
गुरु आधार सदा श्रद्धा के, सो सब जग ने पूजा है।
गुरुवर को भगवन् सा माना,गुरु जैसा ना दूजा है॥
हिन्दू गुरु को हरिहर कहते,और कहें शिवशंकर भी।
तथा सिक्ख गुरुनानक मानें, इस्लामी पैगम्बर ही॥३॥
हम भक्तों की अद्भुत श्रद्धा, तीर्थंकर जैसा कहते।
हम आधार सहित यह बोलें, इसका कारण अब कहते॥
वृषभनाथ सम धर्म बताते, अजितनाथ सम विजय दिए।
संभवप्रभु सम जग त्यागी हो, अभिनन्दन सम अभय किए॥४॥
सुमतिनाथ सम सुमति विधायक, पद्मप्रभु सम खिले हुए।
सुपार्श्व प्रभु सम सुन्दर ज्ञानी, चन्द्रप्रभु सम धुले हुए॥
पुष्पदन्त सम वैरागी हो, शीतल प्रभु सम शीतल हो।
श्री श्रेयांशनाथ सम श्रेयश, वासुपूज्य सम मंगल हो॥५॥
विमलनाथ सम विमल धवल हो, अनन्त प्रभु सम भ्रान्ति हरो।
धर्मनाथ सम धर्मी मर्मी, शान्तिनाथ सम शान्ति करो॥
कुन्थुनाथ सम करुणावाले, अरहनाथ सम विरह हरो।
मल्लिनाथ सम मोह नशाते, मुनिसुव्रत सम राह करो॥६॥

नमीनाथ सम श्रेष्ठमान्य हो, नेमिनाथ सम पालक हो।
पार्श्वनाथ सम परिषह जेता, महावीर सम नायक हो॥
इन गुण को आधार बनाकर, तीर्थंकर जैसे कहते।
मंगल-मंगल जग कल्याणी, सबका मंगल तुम करते॥७॥
तुम्हें पुकारे 'सुव्रत' स्वामी, हृदय निलय में आ जाओ।
भाव भक्ति की इस गंगा को, गुरुवर पावन कर जाओ॥
अर्जी हमारी मर्जी तुम्हारी, ठुकराओ या प्यार करो।
आज नहीं तो कल या परसों, जब चाहो भव पार करो॥८॥

(दोहा)

विद्यासागर गुरु रहे, सब जग के आधार।
भगवन् सम जयवन्त हों, हमें करें भव पार॥
गुरुपद में विश्राम हो, गुरुपद का हो ध्यान।
धन्य-धन्य जीवन बने, और मिले शिवधाम॥
गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

जो शांत है
जिससे शांति
मिलती है
वह संत है

श्री विद्यागुरु पूजन—४

स्थापना (दोहा)

विद्यागुरु अनुपम गणी, हितकारी शुभ धाम।
जगत् पूज्य गुरुदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

(लय -मुझे ऐसा वर दे दे)

वसु द्रव्यों को लाए, गुरु पूजन अब करना।
हम भक्तों को गुरुवर, बस तुमसा ही बनना॥ बस तुमसा...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

पा जन्म जरा मृत्यु, हम भव-भव में रोए।
गुरु चरणों बिन अपनी, निर्मलता को खोए॥
गुरु रत्नत्रय जल दो, अब निर्मल चित करना।
हम भक्तों को गुरुवर, बस तुमसा ही बनना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में हम, नित-नित जलते रहते।
तुम समता रस पीते, निज आतम में रमते॥
सम समता रस दे दो, अब शीतलता वरना।
हम भक्तों को गुरुवर, बस तुमसा ही बनना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तज आतम वैभव हम, चौरासी में भटके।
तुम अक्षय पद पाने, आए जग को तज के॥
निज की स्थिरता दे दो, अब अक्षय पद वरणा।
हम भक्तों को गुरुवर, बस तुमसा ही बनना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम कामदेव द्वारा, दुख पाते बन भोगी।
तुम ब्रह्मचर्य धरकर, सुख पाते बन योगी॥
शिव संयम पथ दे दो, भव भोगों से बचना।
हम भक्तों को गुरुवर, बस तुमसा ही बनना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

हम भक्ष्य-अभक्ष्य भखें, फिर भी भूखे रहते।
कर अनशन ऊनोदर, तुम ज्ञानामृत चखते॥
श्रुत ज्ञानामृत दे दो, अब रोग सभी हरना।
हम भक्तों को गुरुवर,बस तुमसा ही बनना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम बनकर के मोही, गाफिल होकर फिरते।
तुम बनकर निर्मोही, रोशन निज-पर करते॥
दृग-ज्ञान उजाला दो, अब अघ तम सब हरना।
हम भक्तों को गुरुवर, बस तुमसा ही बनना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्मों से हारे, अटके भटते पिटते।
तुम कर्म विजेता हो,जग को सुरभित करते॥
शुभ ध्यान कला दे दो, अब कर्म चूर करना।
हम भक्तों को गुरुवर, बस तुमसा ही बनना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्मों के फल में, नित राग-द्वेष करते।
तुम कर्मों के फल को, शिवफल पाने सहते॥
वसु कर्म हरो सारे, अब शिवफल को वरना।
हम भक्तों को गुरुवर, बस तुमसा ही बनना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ अर्घ्य सदा नश्वर, सोचें क्या भेंट करें।
जिससे रोना नाशें, सुख शान्ति प्राप्त करें॥
तन-प्राण-अर्घ्य अर्पण, दे दो गुरु अब शरणा।
हम भक्तों को गुरुवर, बस तुमसा ही बनना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

सभी लोक के गीत तज, गायें विद्यागान।
'विद्यागुरु' संसार में, करते हैं कल्याण॥

(लय- मुझे ऐसा वर दे दे...)

तुम विद्या के सागर, विद्यासागर न्यारे।
हो शिष्य गुरु गुरु के, जग के पालनहारे॥
हम को सद्विद्या दो, हम आतम सुख पायें।
बन करके तुम जैसे, हम मोक्षमहल पायें॥१॥
मल्लप्पा श्रीमति के, हो सुत गुरु हितकारी।
तुम सन्त शिरोमणि हो, संयम करुणाधारी॥
गुरु ज्ञान दिवाकर हो, अघतम् सबका हरते।
गुरु के पथ पर चलकर, जग को रोशन करते॥२॥
तुम 'समय-सहज' गुरु हो, 'गुरु-भक्ति' के स्वामी।
पालक ज्ञाता श्रुत के, गुरु शिवपथ अनुगामी॥
गुरु आप दिगम्बर हो, सो तीर्थंकर जैसे।
हितु कौन हमारा है, तुमको भूलें कैसे॥३॥
गुरु सबसे तारक हो, सो तारण-तरण रहे।
अघ कर्म नशाते सो, निजशासक चरण कहे॥
सबके मन मन्दिर में, गुरु भगवन् से रहते।
पर तुम तो अपने में, समता धरकर रमते॥४॥
लौकिक परिजन तज के, पूजो तुम धर्म पिता।
हितु नेह भ्रात साथी, जिनवाणी माँ शुचिता॥
है क्षमा सखी सुन्दर, शुभ दया बहिन प्यारी।
है शान्ति पत्नि हितकर, सुख सुत करुणा पुत्री॥५॥
गुरु पर्वत से ऊँचे, हो गहरे सागर से।
हो बड़े गगन से तुम, हो रतन सुधाकर से॥
शीतल शशि चन्दन से, सूरज से तेजस्वी।
दोषों से दूर रहो, हो निर्मल ओजस्वी॥६॥
हे क्षेमंकर! गुरुवर, शिवनेता शिवपथ के।
अब हमें सहारा दो, हम भव-वन में भटके॥
हमको पथ साहस दो, भूलें ना गुरु पद को।
गुण 'सुव्रत' ले तुम से, पायें हम शिवपद को॥७॥

(दोहा)

करते हम गुणगान हैं, बदल-बदल कर गीत।
विद्या पाकर हम करें, मुक्ति रमा से प्रीत॥
गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—५

स्थापना (दोहा)

जग में गुरु आदर्श हैं, भगवन् के प्रतिरूप।
गुण गाकर वैभव मिले, सजता आतम रूप॥

(तर्जः-इतनी शक्ति हमें देना दाता)

करने विद्यागुरुवर की पूजा, लाये द्रव्यों की थाली सजा के।
मन के मन्दिर में गुरु को विराजें, भाव भक्ति से सादर बुलाके॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

हमने पीये हैं सागर दुखों के, होके रोगी दुखी हम फिरे हैं।
जीते मरते सदा हम रहे हैं, अटके भटते जगत में पड़े हैं॥
भव के रोगों से मुक्ति दिला दो, राह रत्नत्रयों की दिखा के।
मन के मन्दिर में गुरु को विराजें, भाव भक्ति से सादर बुला के॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव की ज्वाला में ऐसे जले हम, जैसे अग्नि में जलते हैं तिनके।
बर्फ पानी व चन्दन की ठण्डी, ताप हर न सकी मेरे मन के॥

ताप संसार का तुम मिटा दो, तोष समता का अमृत पिला के।
मन के मन्दिर में गुरु को विराजें, भाव भक्ति से सादर बुला के॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जगत् में रहीं जो उपाधि, दुख की दाता वे नश्वर रुलाएँ।
तुमने उनको सदा को है त्यागा, आश अक्षय अनुपम लगाएँ॥
राह हमको भी इसकी बता दो, पूजूँ तन्दुल से सिर को झुका के।
मन के मन्दिर में गुरु को विराजें, भाव भक्ति से सादर बुला के॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हर तरफ काम राजा का डेरा, ये ही सबसे कराए गुलामी।
तुम यथाजात इसको हराए, करके आतम रमण लोक स्वामी॥
हमको आतम विहारी बना दो, जीतें हम भी इसी को हरा के।
मन के मन्दिर में गुरु को विराजे, भाव भक्ति से सादर बुला के॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

भूख तन की तनिक सी न मिटती, कौन मन की व्यथा पूर्ण करते।
आप करके तपस्या उपासा, ज्ञानामृत से क्षुधा रोग हरते॥
अब हमारी क्षुधा भी नशा दो, साधना का महापथ दिखा के।
मन के मन्दिर में गुरु को विराजें, भाव भक्ति से सादर बुला के॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तम का प्रबल जोर हमको, करके अंधा घुमाए सताए।
तुमने संयम से उसको नशाया, और जग को सही पथ दिखाए॥
अब हमें मोहतम से बचा लो, ज्ञान की जोत सम्यक् जला के।
मन के मन्दिर में गुरु को विराजें, भाव भक्ति से सादर बुला के॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म पर्वत महारूप वाला, रूप विद्रूप करता हमारा।
आप चारित्र के भूप बनकर, कर्म पर्वत करो चूर सारा॥
धूल कर्मों की हम भी उड़ाएँ, धूप गुरुवर के चरणा चढ़ा के।
मन के मन्दिर में गुरु विराजें, भाव भक्ति से सादर बुलाके॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग भोगे समझ के हितैषी, रोज उनका ही संग्रह किए हम।
फल विषैले समझ त्याग इनको, मोक्षफल प्राप्त करने चले तुम॥
ले चलो तुम हमें शिवपुरी को, भोग कर्मों के फल को छुड़ा के।
मन के मन्दिर में गुरु विराजें, भाव भक्ति से सादर बुलाके॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ द्रव्यों का लेकर सहारा, भाव भक्ति करें रोज पूजा।
ये तो साधन समर्पण का सच्चा,नाथ तुमसा नहीं कोई दूजा॥
पूज्य चरणों में हम अर्घ्य भेटें, आश चरणों की शरणा लगा के।
मन के मन्दिर में गुरु को विराजें, भाव भक्ति से सादर बुलाके॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

विद्या हो या ज्ञान हो, दोनों एक समान।
गुणावली गुरुदेव की,को कर सके बखान॥

(लय- इतनी शक्ति हमें देना दाता)

तुम हो विद्या के सागर हमारे, शिष्य गुरु हो श्री ज्ञान गुरु के।
सुत हो मल्लप्पा श्रीमति माँ के, ज्ञान वैराग्य धारो शुरु से॥१॥
देख संसार भव भोग खारे, तुमने छोड़े जगत-बन्धु सारे।
और मुक्ति से स्वयंवर रचाने, चल दिये ज्ञानसागर के द्वारे॥२॥
ज्ञानसागर ने लेकर परीक्षा, आपको दे दी निर्वाण दीक्षा।
पारगामी जिनागम बनाके, दे दी उपकारी सारी ही शिक्षा॥३॥
फिर अपना बनाकर गुरु भी, दे दी आचार्य की निज उपाधि।
शीश चरणों में अपना झुकाकर, कर दी प्रारम्भ आतम समाधि॥४॥
आप आचार्य बनकर सभी के, पूँछे गुरुवर से कैसे रहूँ मैं।
कैसे संयम व्रतों को निभाऊँ, कैसे बिन आपके अब रहूँ मैं॥५॥
ज्ञान अनुभव नहीं पास मेरे, और कोई नही है सहारा।
धर्म का दीप रोशन सदा हो, कैसे पाऊँगा भव का किनारा॥६॥

ज्ञानसागर गुरु ने कहा फिर, आप नारी रमा से तो बचना।
भूलकर भी वचन तुम न देना, कोई आये तो प्रवचन करना॥७॥
संघ को धर्म गुरुकुल बनाकर, लीन अपने ही आतम में रहना।
दीन दुखियों पै करुणा दयाकर, मोक्षपथ की बुराई से डरना॥८॥
ज्ञान-ध्यानों में तन मन लगाकर, व्यर्थ बातों में पल ना गँवाना।
शास्त्र गद्यों को पद्यों में करके, जैन आगम में ही मन लगाना॥९॥
ऐसी शिक्षा दिये ज्ञान सिन्धु, और ले ली विदा हम सभी से।
आप आज्ञा निभाकर गुरु की, धर्म रथ को बढ़ाते तभी से॥१०॥
ज्ञान वैराग्य तप की खड्ग से, मोह माया का शासन नशाते।
तत्त्व की सूक्ष्मदृष्टि के द्वारा, जैन शासन का यश भी बढ़ाते॥११॥
करते संतुष्ट सारे जगत को, साधना अपनी करते हो पूरी।
अटके भटकों को देते सहारा, राह देते सभी को सबूरी॥१२॥
कोई संतुष्ट दर्शन से होता, पूजा करके जपे नाम कोई।
कृपा आशीष से कोई खुश है, देख मुस्कान हर्षित है कोई॥१३॥
कोई संतुष्ट चर्चा के द्वारा, कोई आहार देकर खुशी है।
जिसने ध्याया तुम्हें इस जगत में, उसकी दुनियाँ निराली वसी है॥१४॥
अपनी नैया भँवर में फँ सी है, इसको देकर सहारा निकालो।
दीजिए हमको चरणों की शरणा, करुणा करके तो भव से बचा लो॥
पास कुछ भी नहीं क्या चढ़ाएँ, भेंट कैसे विनय से निभाएँ।
करके 'सुव्रत' समर्पित ये जीवन, सोचते अब यही क्या चढ़ाए॥१६॥

(दोहा)

गुरुवर के गुणगान को, सुरगुरु सक्षम नांय।
फिर अज्ञानी बाल हम, क्या पा सकते थांय॥
फिर भी गाया भक्ति से, टूटा -फू टा गीत
क्षमा करें अनुग्रह करें, याँ भावों की रीत॥
गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥
(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्रीविद्यागुरु पूजा—६

स्थापना (दोहा)

मौन मधुर मुस्कान है, बोले गुरु की देह।
शीश झुकाकर देख लो, मिटें सभी संदेह॥
(लय-करें भगत हो आरती....)
गुरु - चरणों में आए के, झूम - झूम गावें।
झूम - झूम गावें, झूम - झूम गावें॥
करें भगत गुरु अर्चना, झूम - झूम गावें।
सदा झुकावें माथ - हाथ दोनों जोड़ें॥
प्रासुक लाये द्रव्य, भक्ति चादर ओढ़ें।
मन मन्दिर में आन, विराजो गुण गावें॥
करें भगत गुरु अर्चना, झूम-झूम गावें।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

भवसागर का नीर, बड़ा खारा तीखा।
घोल रहा है जहर, आतमा में मीठा॥
जनम मरण दो नाश, नाथ हम सुख पावें॥
करें भगत गुरु-अर्चना, झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वियोग अनिष्ट योग में चिल्लावें।
कर संकल्प विकल्प रोंय हम घबरावें॥

आकुलता को दूर करो, समता पावें।
करें भगत गुरु अर्चना, झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मन की चंचलता वैभव ले जावे।
सुखदायक थिर चेतन कैसे झलकावे॥
कृपा करो गुरुदेव चित्त थिरता पावें॥
करें भगत गुरु अर्चना, झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामरोग के वेग बहाके ले जाते।
हमें बनाकर दास नौकरी करवाते॥
ब्रह्मचर्य दो शील श्रेष्ठ संयम पावें।
करें भगत गुरु-अर्चना, झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

कभी देह की भूख कभी मन तड़पावे।
ज्ञानामृत का स्वाद जीव न चख पावे॥
ज्ञान-ध्यान की सीख दीजिए शिव ध्यावें।
करें भगत गुरु अर्चना, झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अज्ञान तिमिर में भूले निज निधियाँ।
तुम सम्यक् दीपक से करते शिव गलियाँ॥
दीपावलियाँ रोज मना के हर्षावें।
करें भगत गुरु-अर्चना, झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मन भौंरा तो देह भोग में रम जावे।
चारित की शुभगंध नहीं निज उपजावे॥
सुधा चरित की धार, बहे दुख धुल जावें।
करें भगत गुरु-अर्चना, झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतुओं के फल खाय पाय दुख की माला।
और काल का गाल छले सुख की माला॥
सुफल भक्ति का दान, मिले श्रद्धा ध्यावें।
करें भगत गुरु-अर्चना, झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर सा है कौन पूज्य ज्ञानी ध्यानी।
गुरुवर को कुछ भेंट चढ़ाना नादानी॥
फिर भी गाके गीत, भक्त मन रम जावें।
करें भगत गुरु-अर्चना, झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

मात्र एक गुण ढाँक दे, भक्तों के सब दोष।
बनें गुणी गुणगान कर, मिलता विद्या कोश॥

(सुविद्या)

काय शुद्धि कर प्रिय वचनों से, हम करते गुरु गान।
मानस तल पावन हो जाता, पाकर गुरु मुस्कान॥
मनो वचन काया मिल गाते, गुरुवर का संगीत।
उपमातीत पूज्य गुरुपद से, पावन होती प्रीत॥१॥
फिर भी हमने दे उपमाएँ, बाँध लिए गुरुदेव।
लेकिन नाना उपमाओं से, बँध न सके स्वयमेव॥
हो अध्यात्म सरोवर के तुम, राजहंस आचार्य।
प्रवर श्रेष्ठ हो परमेष्ठी हो, नर-जगभूषण आर्य॥२॥
पूर्वाचार्यों के अनुगामी, क्यों कहता संसार।
जो कुछ हमने देखा जाना,कहें भक्ति आधार॥
कुन्दकुन्द आचार्य सरीखा, पाया जिन-अध्यात्म।
वट्टकेर आचार्य सरीखा, मूलाचार महात्म्य॥३॥
समन्तभद्र सी करो गर्जना, दयाधर्म सुख धाम।
तीर्थ दयोदय कुण्डलपुर के, बाबा रहे प्रमाण॥

उमास्वामी सम तत्त्व निरूपक, ज्ञानी ज्यों धरसेन।
पुष्पदन्त गुरु भूतबलि सम, षट्खण्डागम बैन॥४॥
पूज्यपाद सम मन वच तन के, त्रिवैद्य हरते रोग।
भाग्योदय शुभ तीर्थ दया का, है जीवित संयोग॥
गुण ग्राहक बन सौदा करते, घाटे का क्या काम।
तभी आप हो गुणगण मंडित, बाँटो गुण अविराम॥५॥
स्वार्थ भक्ति से हम गुण गाते, मन का भ्रम हो दूर।
गुण गीता गुरु भक्ति अर्चना, गुरु दो हमें जरूर॥
तजें वासना मान याचना, दो ऐसा वरदान।
हर मुश्किल हम जीत सकें बस, पाकर गुरु मुस्कान॥६॥

(दोहा)

फीकी उपमाएँ पड़ी, कलियाँ सीखें पाठ।
अल्प बुद्धि हम क्या कहें, विद्यागुरु का ठाठ॥
गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

गुरु
रोगी समाज
के लिए
औषधि हैं

श्री विद्यागुरु पूजन—७

स्थापना (दोहा)

मुख आँखों की बात क्या, रोम-रोम के वान।
गुरु शरणा मंगलमयी, विद्यागुरु भगवान॥

(सुविद्या)

हमको पंचम काल मिला तो, मिले नहीं भगवान।
पर साँचे गुरुवर को पाकर, हमें मिले भगवान॥
दिव्य नहीं है द्रव्य हमारी, ना हम चक्री देव।
किन्तु करें हम भक्ति भाव से, गुरु-अर्चन पदसेव॥
रत्नोंमय भी द्रव्य नहीं पर, भावों से ना हीन।
रोम-रोम हर प्राण सांस में, गुरुमूरत लवलीन॥
विद्यागुरु के पद-पंकज की, कहे कहानी आज।
हृदय कमल के उच्चासन पर, आओ गुरु मुनिराज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

मैत्री से मन मैल मिटाओ, चिन्ता की क्या बात।
जन्म मरण से क्या डरना अब, पाया गुरु का साथ॥
रत्नत्रय बरसात बहा दे, जनम-मरण दुख कूप॥
विद्यासागर वसुन्धरा पर भगवन् के प्रतिरूप॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत नीर से आग शान्त हो, पर थोड़ा जल जात।
वैसे भव संताप जीव को, तपा तपा तड़फात॥
गुरु समता की धार सुखाये, तेज ताप भव धूप।
विद्यासागर वसुन्धरा पर, भगवन् के प्रतिरूप॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए सफल तो भरे गर्व से, असफलता में दीन।
जन्म करोड़ों नष्ट किए पर, पद नहिं मिला नवीन॥
अक्षय निधियों के स्वामी तुम, दो चिन्मय शिवरूप।
विद्यासागर वसुन्धरा पर, भगवन् के प्रतिरूप॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

नींद वासना दोनों बहनें, हरें हमारा शील।
शूरवीर तुमने ये जीतीं, भरी शील सुखझील॥
ब्रह्मचर्य का जोर हराये, कामदेव जगभूप।
विद्यासागर वसुन्धरा पर, भगवन् के प्रतिरूप॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

भोग भोग कर शांति नहीं पर, भोग छोड़ सुख योग।
आतम योग साधने वाले, हैं पूजन के योग॥
ज्ञान-ध्यान से शोभ रहे तुम, हरें रोग विद्रूप।
विद्यासागर वसुन्धरा पर, भगवन् के प्रतिरूप॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप दिखाने से सूरज की, चमक बढ़े ना तेज।
किन्तु हमारे मन मन्दिर का, अंध हुआ निस्तेज॥
ज्ञानदीप से मोह तिमिर हर, उज्ज्वल बने अनूप।
विद्यासागर वसुन्धरा पर, भगवन् के प्रतिरूप॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म गुणों का क्षीर मिला के, खाते मीठी खीर।
कर्म किरकिरा को काटो तुम, हरते सबकी पीर॥
अष्ट कर्म को नष्ट करें हम, तुम्हें चढ़ा के धूप।
विद्यासागर वसुन्धरा पर, भगवन् के प्रतिरूप॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दलदल में ही कमल खिलें पर, दलदल से हैं दूर।
कर्म गुलामी करे आतमा, पर तुम ना मजबूर॥
सब कुछ त्याग हर्ष मातम गम, फलो मोक्षफल रूप।
विद्यासागर वसुन्धरा पर, भगवन् के प्रतिरूप॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्पों को, ले नैवेद्य सुदीप।
मिला धूपफल अर्घ चढायें, गुरु के चरण समीप॥
बस इतना वरदान हमें दो, पूजें चरण स्वरूप।
विद्यासागर वसुन्धरा पर, भगवन् के प्रतिरूप॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

गुरुपद पूजा कर करें,जयमाला गुणगान।
जैसे दीपक से करें, सूरज का सम्मान॥

(ज्ञानोदय)

चक्री के सोलह सपनों में, एक स्वप्न कल सुना यही।
दक्षिण में बस धर्म रहेगा, धर्म धर्म फल कथा यही॥
इसीलिए दक्षिण भारत में, जन्म लिया विद्याधर ने।
फिर दक्षिण से ऊँचे उठकर, चले धर्म वर्षा करने॥१॥
वर्षा होने पर ही जैसे, वसुन्धरा भी लहराती।
सुन्दर निर्मल नभ हो जाता, सुख शान्ति भी छा जाती॥
ऐसे विद्यासागर गुरुवर, ज्ञान सुधा बरसाते हैं।
समता धरकर खुश रहते हैं, मन्द मधुर मुस्काते हैं॥२॥
नाथ! आपके मुस्काने से, भटकों को पथ मिल जाता।
हृदय सरोवर में श्रद्धा का, भक्ति कमल भी खिल जाता॥
एक आपके मुस्काने से, सारा कल्मश धुल जाता।
घटे आपका कुछ ना गुरुवर, पर हमको सब मिल जाता॥३॥
ला इलाज रोगों की औषध, गुरुवर के मुस्काने में।
दिवस दशहरा रात दिवाली, गुरुवर के हँस जाने में॥
गुरुवर की मुस्कान सभी को, उत्साहित कर बल देती।
सभी कार्य मुस्कान बनाती, सब उलझन का हल देती॥४॥
मुस्काती मुस्कान गुरु की, सदा सफलता की कुंजी।
पाने वाले हैं बड़भागी, सबसे बड़ी यही पूँजी॥
क्षणभर की मुस्कान निराली, मानस तल पर बस जाती।
यही कीमती रहा खजाना, सदा यही सबको भाती॥५॥
जरा जरा गुरु मुस्का दो तो, मिलता है वरदान खरा।
सुन के अर्जी मुस्का दीजे, साथ दीजिए जरा जरा॥
व्रत तोड़ो ना मुस्काने का, गगन धरा की यह इच्छा।
तभी पूर्ण पूजन हो जिसमें, रम कर मिलता सुख सच्चा॥६॥

(दोहा)

गुरु के गुण भण्डार में, एक कही मुस्कान।
पाप कर्म के नाश को, दीजैं गुरु मुस्कान॥

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—८

स्थापना (लय - जीवन है पानी की बूँद....)

महा अर्चना गुरु की करने, हम सब आये रे-२
चरणों में माथा हाँ-हाँ -२, हम खूब झुकाये रे॥ महा....
रत्नों जैसी द्रव्य नहीं, सुर छन्दों मय शब्द नहीं।
फिर भी गुरु पूजन करने, मन भौंरा आसक्त यहीं।
द्रव्यों की थाली हाँ हाँ -२, हम रोज सजाये रे॥ महा.....

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

मछली तड़पे बिन पानी, गुरु-भक्ति बिन हम प्राणी।
जनम मरण का दुख हरने, पियो पिलाओ गुरु वाणी।
विद्या की धारा हाँ हाँ - २, भव पीर नशाये रे॥
महा अर्चना गुरु की करने, हम सब आये रे-२

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु चरणों को वन्दन है, ये ही साँचा चन्दन है।
इसकी खुशबू जब महके, खोता भव का क्रन्दन है।
विद्या की छाया हाँ हाँ -२, भव ताप मिटाये रे॥
महा अर्चना गुरु की करने, हम सब आये रे-२

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कृपा करें जिस पर गुरु देव, उसकी उलझन हल स्वयमेव।
आँधी तूफाँ उसको क्या, उसकी मदद करें सुर देव।
विद्या की गाड़ी हाँ हाँ, पद मोक्ष दिलाये रे॥
महा अर्चना गुरु की करने, हम सब आये रे-२

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर की मुस्कान अहा!, करती है सब काम महा।
शरमायें कलियाँ वा फूल, देख शील उद्यान यहाँ।
विद्या का सौरभ हाँ हाँ -२, आतम महकाये रे॥
महा अर्चना गुरु की करने, हम सब आये रे-२

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की ज्ञान रसोई से, सब पकवान लगे फीके।
मुफ्त रात दिन खा सकते, गुरु के व्यंजन हैं नीके।
विद्या का अमृत हाँ हाँ -२, सब भूख मिटाये रे॥
महा अर्चना गुरु की करने, हम सब आये रे-२

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर के हीरे मोती, जला रहे अन्तर ज्योति।
इसे जलाकर भक्तों की, ज्योति भगवन सम होती।
विद्या की ज्योति हाँ हाँ -२, तम मोह मिटाये रे॥
महा अर्चना गुरु की करने, हम सब आये रे-२

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूल धूप की राहों में, गुरु आंधी तूफानों में।
सोने से चमको महको, गिनती है भगवानों में।
विद्या की वाणी हाँ हाँ -२, आतम चमकाये रे॥
महा अर्चना गुरु की करने, हम सब आये रे-२

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल का उल्टा लफ जाना, यही मोक्ष का पथ माना।
यही सफलताओं का मूल, सुलझाये ताना-बाना।
विद्या की भक्ति हाँ हाँ -२, फल मोक्ष दिलाये रे॥
महा अर्चना गुरु की करने, हम सब आये रे-२

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पाके गुरुवर की छइयाँ, पड़ें पखारें गुरु पइयाँ।
गुरुभक्ति में पागल हैं, क्षमावान गुरु सौ नइयाँ।
विद्या की करुणा हाँ हाँ -२, शिव सौख्य दिलाये रे॥
महा अर्चना गुरु की करने, हम सब आये रे-२

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

गुरु दर्शन शुभ यन्त्र है, गुरु वाणी सुख मन्त्र।
गुरु कृपा शिवतन्त्र का, वन्दन करें स्वतंत्र॥

(सखी)

गुरुवर श्री विद्यासागर, पूजित हो ज्ञान दिवाकर।
जो दर्शन करे तुम्हारे, वो झूम उठे धरती पर॥१॥
हिन्दू कहता शिवशंकर, मुस्लिम बोले पैगम्बर।
फिर सिक्ख कहें गुरु नानक, हम जैन कहें तीर्थंकर॥२॥
पर तुम्हें देख के लगता, ये सब गुरु रूप समाये।
सो हम गाते गुरु महिमा, महिमा गाकर हर्षाये॥३॥
जो पुष्प शुष्क मुरझाये, वे गुरु से खिलें महकते।
तुमको पा सूर्य चमकता, पक्षी गुरु देख चहकते॥४॥
चन्दन सौरभ ले भागा, तितली ने पंख सजाये।
कमलों ने खिलना सीखा, शब्दों ने गाने गाये॥५॥
सागर रत्नों की खेती, गुरु कृपा प्राप्त कर करते।
ये चाँद सितारे नभ भू, गुरुवर को देख संभरते॥६॥
हम बिन गुरुवर के ऐसे, ज्यों बिना चाँद की राती।
ज्यों सूरज बिना प्रभाती, ज्यों बिन दूल्हे बाराती॥७॥
ज्यों गाय दूध से शोभे, या खिले फूल से बेली।
ज्यों नारि शील से शोभे, त्यों गुरु से चेला चेली॥८॥
यह जीवन तुम्हें समर्पित, बस इतना सा गुरु वर दो।
भक्तों के मन में वसकर, विश्वास श्वांस में भर दो॥९॥

(दोहा)

विद्यासागर नाम है, चलता फिरता तीर्थ।
जिन्हें शरण गुरु की मिले, वही बने शुभ तीर्थ॥
गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—९

स्थापना (सखी)

गुरुवर की अर्चना को, मन में हिलोरें आवें।
चरणों में सिर झुका के, हम झूम-झूम गावें॥
द्रव्यों की थाल लाये, भक्ति से भाव भर के।
विद्या के गीत गायें, गुरुवर के आके दर पै॥
मन के निलय में आओ, हम अर्चना रचावें।
चरणों में सिर झुका के, हम झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

जल का स्वभाव शीतल, संयोग से गरम हो।
वैसे स्वभाव अपना, रत्नत्रयी धरम हो॥
भव रोग की दवा दो, हम नीर ये चढ़ावें।
चरणों में सिर झुका के, हम झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर की मीठी वाणी, भव ताप को नशाती।

तन मन का ताप हरती, उजडा चमन खिलाती॥
आतम का गुल खिला दो, चन्दन ये हम चढ़ावें।
चरणों में सिर झुका के, हम झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पद सम्पदा को जग में, भाई को भाई मारे।
इनको ही त्याग तुम तो, मुक्ति का घर निहारे॥
शान्ति का पथ दिखा दो, ले पुंज हम चढ़ावें।
चरणों में सिर झुका के, हम झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सारे व्रतों का राजा, तुम ब्रह्मचर्य धर के।
महकाते दुनियाँ सारी, पीडा मदन की हर के॥
हमको सुशील गुण दो, हम पुष्प पद चढ़ावें।
चरणों में सिर झुका के, हम झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

इस भूख का भयंकर, डँसता है सांप हमको।
तुम ज्ञान का गरुड़ ले, हरते हो इस जहर को॥
तुम ज्ञान का कलश दो, नैवेद्य हम चढ़ावें।
चरणों में सिर झुका के, हम झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंदर अँधेरे मन में, इक दीप तुम जला दो।
अज्ञान मोह हर्त्ता, शिव राह भी दिखा दो॥
ये दीप है समर्पित, अब भेंट क्या चढ़ावें।
चरणों में सिर झुका के, हम झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने जग पछाडा, तुम कर्म को पछाड़े।
संकल्प है अडिग तो, मुश्किल कोई कहाँ रे॥
हमको दो धैर्य साहस, हम धूप पद चढ़ावें।
चरणों में सिर झुका के, हम झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने गुरु को अपना, फल भेंट में चढ़ाया।
गुरु ने खजाना अपना, खुद आप पै लुटाया॥
हमको शरण में ले लो, सादर ये फल चढ़ावें।
चरणों में सिर झुका के, हम झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कृपा तुम्हारी हमको, लगती है मोक्ष जैसी।
सब सार है इसी में, मंजिल है ये हितैषी॥
छाया कृपा की दे दो, हम अर्घ्य ये चढ़ावें।
चरणों में सिर झुका के, हम झूम-झूम गावें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

गुरुवर पथ पाथेय हैं, गुरु मंजिल विश्राम।
गुरु की महिमा क्या कहें, सादर करें प्रणाम॥

(लय - हीरे को परख लिया.....)

जीवन को समझ लिया, बालक विद्याधर ने।
फिर निकल पड़े देखो, मुनि भूषण से सजने॥
गुरु मिले ज्ञानसागर, जिनने परखा हीरा।
तब ज्ञान हथौड़ी से, हर ली भव की पीडा॥
विद्याधर बन आये, विद्यासागर स्वामी।
गुरुवर पालक सबकी, पीडा हर लो ज्ञानी॥१॥
जीवों का दुख हरने, जग को तुम तज बैठे।
आस्था के ईश्वर तुम, हम तुमको भज बैठे॥
अब कठिन साधना को, तुम करते तूफानी।
तूफां आँधी जिसको, हों देख-देख पानी॥२॥
जग देख देह तुमरी, शरमां के बैठ गया।
दुनियाँ का वैभव सिर, चरणों में टेक गया॥
बस हमको यह वर दो, खुशियों से घर भर दो।
पूजा होवे पूरी, बस यही कृपा कर दो॥३॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—१०

स्थापना (दोहा)

गुरु गुरु हैं गोविंद भी, शास्त्रों का उल्लेख।
अतः करें गुरु-अर्चना, हो नमोस्तु सिर टेक॥

(शुद्ध गीता)

तेरे दर्शन किये जब से, तुझे ही पूजते हैं हम।
तुम्हारी अर्चना करके, तुम्हें भगवान कहते हम॥
तुम्हीं हो माँ-पिता बन्धु, तुम्हीं श्वासें तुम्हीं जीवन।
हृदय में आ वसो गुरुवर, करें प्रारंभ हम पूजन॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

बिना जल के जमाने में, बड़ी ही दुर्दशा होगी।
बचेगी जिंदगी कैसे, कहाँ से प्रार्थना होगी॥
तुम्हीं तो जल हमारे हो, तुम्हें क्या भेंट कर दें हम।
झुकाकर शीश चरणों में, करें सादर नमोस्तु हम॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तड़पता कोई भोगों को, किसी ने रोग पाले हैं।
मगर ये भक्त सच गुरुवर, तुम्हारे ही हवाले हैं॥

तुम्हीं चंदन सी छाया हो, तुम्हें क्या भेंट कर दें हम।
झुकाकर शीश चरणों में, करें सादर नमोस्तु हम॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

किसी को चाहिए बंगला, किसी को चाहिए गाड़ी।
मगर हमको सुनो! गुरुवर, बनानी आपसे जोड़ी॥
तुम्हीं अक्षत हमारे हो, तुम्हें क्या भेंट कर दें हम।
झुकाकर शीश चरणों में, करें सादर नमोस्तु हम॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

गुलाबों में चमेली में, फँसे यह चेतना तड़पे।
कमल जैसे खिलें गुरुवर, हमें तुम थामलो बढ़के॥
महकते फू ल हो तुम तो, तुम्हें क्या भेंट कर दें हम।
झुकाकर शीश चरणों में, करें सादर नमोस्तु हम॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

कहीं निंदा कहीं चुगली, कहीं ईर्ष्या के रस बरसें।
मगर गुरुज्ञान का भोजन, चखा जिसने वहीं हरसें?॥
तुम्हीं नैवेद्य हो गुरुवर, तुम्हें क्या भेंट कर दें हम।
झुकाकर शीश चरणों में, करें सादर नमोस्तु हम॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नजर तेरी जहाँ पड़ती, वहाँ जगमग हुई धरती।
चमकती है वहाँ आतम, जहाँ तेरी कृपा रहती॥
तुम्हीं तो ज्ञान ज्योति हो, तुम्हें क्या भेंट कर दें हम।
झुकाकर शीश चरणों में, करें सादर नमोस्तु हम॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हारी साधना गुरुवर, जमाने में महकती है।
तुम्हारे नाम से किस्मत, हमारी भी चमकती है॥
तुम्हीं तो धूप से महको, तुम्हें क्या भेंट कर दें हम।
झुकाकर शीश चरणों में, करें सादर नमोस्तु हम॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें तन-मन समर्पित है, समर्पित हैं तुम्हें जीवन।
हमें स्वीकार लो गुरुवर, स्वयं जैसा करो पावन॥

तुम्हीं हो मोक्ष फल साँचे, तुम्हें क्या भेंट कर दें हम।
झुकाकर शीश चरणों में, करें सादर नमोस्तु हम॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिले हैं भाग्य से बंधु, मिले सौभाग्य से भगवन।
हमें सब कुछ दिया तुमने, दिया हमको नया जीवन॥
नमोस्तु के सिवा गुरुवर, तुम्हें क्या भेंट कर दें हम।
झुकाकर शीश चरणों में, करें सादर नमोस्तु हम॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

प्रथम प्रथम आराध्य हैं, श्री विद्या गुरुदेव।
सो जयमाला हम करें, झुके शीश स्वयमेव॥

(चौपाई)

जय-जय-जय विद्यासागर जी, संत शिरोमणि रत्नाकर जी।
पूज्य ज्ञानसागर के चेले, मेले में भी आप अकेले॥१॥
सूखी पड़ी धर्म की धारा, पुनः बहाकर जग शृंगारा।
हरा भरा सा कर भक्तों को, दिया खजाना मुनि-शिष्यों को॥२॥
अतः आप आचार्य अनोखे, चलते-फिरते तीरथ चोखे।
तीर्थों का उद्धार कराते, भक्तों को भगवान मिलाते॥३॥
जिनवाणी का सार बताते, दुखियों के दुख दूर भगाते।
भारत को भारत कर डाला, संस्कारों का दिया उजाला॥४॥
बच्चों को दी सम्यक् शिक्षा, दिए जवानों को व्रत दीक्षा।
वृद्धों को सिखलाई समाधि, किंतु न चाहे कोई उपाधि॥५॥
अतः आपको जग ने पूजा, गुरु से बढ़कर कोई न दूजा।
ब्रह्मा विष्णु महेश गुरुवर, हैं परमेष्ठी जिनेश गुरुवर॥६॥
गुरु से केवल यही निवेदन, स्वीकारो भक्तों का वंदन।
देते रहना चरण धूलियाँ, 'सुव्रत' की हों दीपावलियाँ॥७॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥
(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—११

स्थापना (दोहा)

गाय दूध से शोभती, खिले पुष्प से बेलि।
नारी शोभे शील से, गुरु से चेला चेलि॥
(विष्णु)
ज्ञान और विद्या की जोड़ी, जग विख्यात हुई।
सो गुरुओं की पूजन करके, नयी प्रभात हुई॥
चरण-शरण में आकर हम भी भाग्य संवारेंगे।
देख हमारी विनय भक्ति गुरु, इधर पधारेंगे॥
(दोहा)
हृदय हमारे आइए, हे! विद्यागुरु-राज।
हम गुरु पूजा कर रहे, करके नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

(विष्णु)
कितने जन्म गुजारे पर हम, धर्म नहीं समझे।
जन्मे जहाँ वहीं पर मरकर, पापों में उलझे॥
अपनी नाँव पार करने गुरु, बने दिगंबर हो।
अत: चरण में जल अर्पित कर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इस दुनियाँ के रिश्ते नाते, हमें बांधते हैं।
सच्चे गुरुओं की सेवा से, हमें रोकते हैं॥

बंधन की पीडा हरने गुरु, बने दिगंबर हो।
अतः चरण में चंदन लेकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि मुद्रा को देख देव भी, शीश झुकाते हैं।
गुरु चरणों की सेवा करके, पुण्य कमाते हैं॥
मुनि मुद्रा को सार्थक करने, बने दिगंबर हो।
अतः चरण में पुंज चढ़ाकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चढ़ाकर कमल सरीखा, पाते पुत्र पिता।
कमलासीन पुत्र होता फिर, बनता जगत पिता॥
होने को निर्लिप्त कमल सम, बने दिगंबर हो।
अतः चरण में पुष्प चढ़ाकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन माल मसालों के जगए लेता है आनंद।
जिसको इनमें रस ना आता, वो ले परमानंद॥
निजानंद का रस चखने को, बने दिगंबर हो।
अतः चरण नैवेद्य चढ़ाकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरज चाँद सितारे जुगनू, फीके उसे लगें।
जिसे मिले गुरु ज्ञान उजाला, उसके भाग्य जगें॥
ज्ञान ज्योति से आत्म ज्योति को, बने दिगंबर हो।
अतः चरण में दीप जलाकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गजस्नान समान जगत यह, खुद को सजा रहा।
किंतु आज तक हुआ न सुंदर, जो था वही रहा॥
कर्म हरण शृंगार करण को, बने दिगंबर हो।
अतः चरण में धूप चढ़ाकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं किसी से बदला लो पर, राह बदल लेते।
बदले में कुछ मिले हमें यह, चाह बदल लेते॥
भव संसार बदलने अपना, बने दिगंबर हो।
अतः चरण में फल अर्पणकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नयनों में जल सिर पर चंदन, पुंज हाथ में ले।
वचन पुष्प नैवेद्य विनय का, दीप भक्ति का ले॥
धूप दया की फल श्रद्धा का, अर्घ्य बनाया है।
नमोस्तु कर विद्या गुरुवर को, आज चढ़ाया है॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(शुद्ध गीता)

जमाने में अनादि से, सभी प्राणी भटकते हैं।
कभी ऊपर कभी नीचे, करम हमको पटकते हैं॥
बड़े सौभाग्य से हमको, मिले गुरु जैन कुल चंगा।
मिली भारत की ये धरती, जहाँ बहती धरम गंगा॥१॥
धरम गंगा में नहला दो, नहाया आपने जैसे।
हमारा रूप सजवा दो, सजाया आपने जैसे॥
तुम्हारी छांव पाने को, तुम्हारे गीत गाएंगे।
झुकाकर शीश हम तुमको, तुम्हारे हो ही जाएंगे॥२॥
तुम्हीं आदि तुम्हीं वीरा, तुम्हीं हो देव तीर्थंकर।
तुम्हीं ब्रह्मा तुम्हीं विष्णु, तुम्हीं हो देव शिवशंकर॥
तुम्हीं नानक हो पैगंबर, तुम्हीं में सब समाए हैं।
अतः गुरुवर प्रथम तुमको, विनय से सिर झुकाए हैं॥३॥
गुरु ने जाँचकर तुमको, तुम्हें सौंपा हुनर अपना।
तुम्हें अपना कहें उसका, हुआ है पूर्ण हर सपना॥
जिसे देखो वही तेरा, पुजारी है करे पूजा।
श्री विद्या के सागर सा, दिगंबर है नहीं दूजा॥४॥

हमारी प्रार्थना बस ये, हमें भवपार कर देना।
अगर न कर सको यह तो, हमें अपनी शरण लेना॥
अगर संभव न हो ये तो, न नजरों से गिराना तुम।
यही है भावना स्वामी, न 'सुव्रत' को भुलाना तुम॥ ५॥

(दोहा)

गुरु से जीवन हो शुरू, गुरु से हो हर शाम।
गुरुवर का संन्यास ही, करें काम आराम॥
गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—१२

स्थापना (दोहा)

गुरु बिन इस संसार में, बनें ना कोई काम।
सो नमोस्तु करके प्रथम, पूजा करें प्रणाम॥

(लय-माता तू दया करके ....)

गुरु के दर्शन करके, भक्ति तो मचलती है।
गुरुवर को नमोस्तु कर, तकदीर सँभलती है॥
प्रभु कृपा हुई गुरु पर, गुरु पूजन योग्य हुए।
गुरु कृपा हुई हम पर, हमने गुरु चरण छुए॥
श्रद्धा की अखियों से, गुरु हृदय पधारो जी।
हम करें अर्चना तो, गुरुवर स्वीकारो जी॥ गुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

रागी से राग किया, संसार मिला खारा।
जो कभी न अपना हो, जिसने सबको मारा॥
वैराग्य प्राप्त करने, भक्ति तो मचलती है।
गुरुवर को नमोस्तु कर, तकदीर सँभलती है॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कैसी है यह दुनियाँ, दिन-रात जलाती है।
यह सुखी न देख सके, दुख दे तड़पाती है॥
वैराग्य छाँव पाने, भक्ति तो मचलती है।
गुरुवर को नमोस्तु कर, तकदीर सँभलती है॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अजर-अमर दुनियाँ, इसका कब क्या बिगडा।
इसमें जो उलझ गए, उनका सब कुछ बिगडा॥
अपना हित करने को, भक्ति तो मचलती है।
गुरुवर को नमोस्तु कर, तकदीर सँभलती है॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम खिले पुष्प जैसे, जो कोई हमें मसले।
उसके जीवन को हम, महकाने को निकले॥
फू लों सम खिलने को, भक्ति तो मचलती है।
गुरुवर को नमोस्तु कर, तकदीर सँभलती है॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

जग के रस अपना रस, जो चखे चखाते हैं।
वे अपनी आतम के, रस चख नहीं पाते हैं॥
आतम रस चखने को, भक्ति तो मचलती है।
गुरुवर को नमोस्तु कर, तकदीर सँभलती है॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घी बाती का दीया, रस्ता दिखला देता।
पर हाय! रे प्राणी तू, रस्ता भटका देता॥
रत्नत्रय पथ पाने, भक्ति तो मचलती है।
गुरुवर को नमोस्तु कर, तकदीर सँभलती है॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म बांधते हैं, तो बड़े भले लगते।
पर कर्म भोगने में, हम यहाँ-वहाँ छुपते॥
भव कर्म मुक्ति पाने, भक्ति तो मचलती है।
गुरुवर को नमोस्तु कर, तकदीर सँभलती है॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इस दुनियाँ में हमने, जिसको अपना माना।
वह हुआ नहीं अपना, फिर क्यों अपना माना॥
फल मिथ्या का हरने, भक्ति तो मचलती है।
गुरुवर को नमोस्तु कर, तकदीर सँभालती है॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हाथों से छूकर तुम, गुरु हमें धन्य कर दो।
चरणों में दे स्थान, यह सफल जन्म कर दो॥
गुरु चरण-शरण पाने, भक्ति तो मचलती है।
गुरुवर को नमोस्तु कर, तकदीर सँभालती है॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दुर्लभ गुरु को मानना, दुर्लभ गुरु का धाम।
दुर्लभ भी होता सुलभ, लेकर गुरु का नाम॥

(जोगीरासा)

गुरु भक्ति से ही सीता ने, अपना धर्म बचाया।
गुरु भक्ति से ही द्रोपदी ने, अपना चीर बढ़ाया॥
गुरु भक्ति से ही तो राजुल, चढ़ गई रे गिरनारी।
गुरु भक्ति से ही मैना ने, हरी कुष्ठ बीमारी॥१॥
गुरु भक्ति से ही सबरी ने, राम रमैया पाए।
गुरु भक्ति से ही मीरा ने, कृष्ण-कन्हैया पाए॥
गुरु भक्ति से ही चंदन के, वीरा द्वार पधारे।
ऐसी भक्ति हमें सिखा दो, दे दो हमें सहारे॥२॥

अब तक जितने सिद्ध बने या, प्रभु अरिहंत सुहाए।
अथवा जितने धर्म पंथ पर, धर्म ध्वजा फहराए॥
अथवा आतम का ज्ञानामृत, चखा जिन्होंने साँचा।
उन सबने तो गुरु भक्ति के, गौरव का यश वाँचा॥३॥
गुरु भक्ति का यशोगान कर, मंगल मंगल होता।
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होता॥
मंगल मंगल होए जगत में, गुरु भक्ति के द्वारा।
'सुव्रत' चाहें गुरु भक्ति में, रमे जगत यह सारा॥४॥

(दोहा)

गुरु भक्ति की नाव ले, हो जाते भव पार।
सो गुरु चरणों में करें, नमोस्तु बारंबार॥
गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

जिसके ऊपर
गुरु कृपा हो
उसके ऊपर
प्रभु कृपा
हो जाती है

श्री विद्यागुरु पूजन—१३

स्थापना (दोहा)

पूजा के परमेश हैं, श्रद्धा के श्रद्धान।
आस्था के ईश्वर रहे, विद्या गुरु भगवान॥

(शंभू)

भगवान न देखे हमने बस, आचार्य श्री को ही देखा।
सो विद्यागुरु भगवान लगे, गुरु चरणों में माथा टेका॥
गुरुदेव तुम्हारी चर्चाएँ, करके थकते ना भक्त कभी।
हो चलते फिरते तीर्थ तुम्हीं, अध्यात्म तुम्हीं शुद्धात्म तुम्हीं॥
हो सुबह तुम्हीं हो शाम तुम्हीं, हो धर्मों की पहचान तुम्हीं।
सब छोड़ के आप विराजे हो, पर भक्तों के हो प्राण तुम्हीं॥
क्या गुरु का स्वागत अभिनंदन, ये भक्त नहीं हम जान सकें।
बस करके नमोस्तु चरणों में, गुरु पूजन के हम भाव रखें॥

(दोहा)

मन से नयन पुकारते, वचन करें गुणगान।
हाथ जोड़ सिर टेक कर, तन से गुरु आह्वान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

कब सोचा था माँ बापू सी, दे आतम गोद झुलाओगे।
कब सोचा था मित्रों जैसे, दे मोक्षमार्ग अपनाओगे॥
पर इतना सब उपकार किया, कैसे यह कर्ज चुकाते हैं।
सो विद्यागुरु को नमोस्तु कर, सुव्रत गुरु चरण धुलाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ भले बुरे का ज्ञान नहीं, बस भक्ति रचाना आता है।
कुछ और नहीं आता हमको, बस सेवा करना आता है॥
अब छांव आपकी पाने को, गुरु मूरत हृदय वसाते हैं।
सो विद्यागुरु को नमोस्तु कर, चंदन से चरण धुलाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत त्याग तपस्या संयम को, अर्पित यह जन्म तुम्हारा है।
परवाह न सुख-दुख की करके, अपना कर्तव्य निखारा है॥
संकल्प आप सम करने को, हम अपने नियम निभाते हैं।
सो विद्यागुरु को नमोस्तु कर, श्रद्धा के पुंज चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन मोह लिया निर्मोही ने, यह कला अनोखी सीख लिए।
ना लड़ी लडाई है कोई, फिर भी सबका दिल जीत लिए॥
यह कला सीखने को हम भी, गुरुवर से आश लगाते हैं।
सो विद्यागुरु को नमोस्तु कर, पूजा के पुष्प खिलाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

सब छोड़ दिया खाना पीना, उपसर्ग परीषह हार चुके।
बस एक कामना शेष रही, जिसके खातिर सब त्याग चुके॥
हो भेंट हमारी गुरुवर से, गुरु यह अध्यात्म सिखाते हैं।
सो विद्यागुरु को नमोस्तु कर, नैवेद्य चढ़ा इठलाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव हमारी सांसों में, बस आते जाते तुम रहना।
हम भी उज्ज्वल हो जाएंगे, सान्निध्य हमें देते रहना॥
तुम धार्मिक जोत जला देना, हम रोज आरती गाते हैं।
सो विद्यागुरु को नमोस्तु कर, श्रद्धा के दीप जलाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर तरफ स्वार्थ के रिश्ते हैं, हर तरफ कर्म के बंधन हैं।
हर तरफ पाप की पीडाएं, हर तरफ व्यसन के नर्तन हैं॥
हम तुमसे दूर न हो पाएं, हम तुमको रोज बुलाते हैं।
सो विद्यागुरु को नमोस्तु कर, निष्ठा की धूप जलाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पाया कभी न वो चाहा, जो चाहा कभी न वो पाया।
सो हाथ रहे अपने मलते, गुरु मंत्र समझ में ना आया॥
सान्निध्य गुरु का पाने को, गुरु की चौखट पर आते हैं।
सो विद्यागुरु को नमोस्तु कर, फल लेकर भाव सजाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव तुम्हारी वस्ती में, छोटा सा एक मकान मिले।
हो सदा आपकी नजर जहाँ, बस वहीं हमें स्थान मिले॥
आशीष मिले सान्निध्य मिले, यह गुरु से अर्ज लगाते हैं।
सो विद्यागुरु को नमोस्तु कर, चरणों में अर्घ्य चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

लेकर गुरु का नाम ही, शुरू करें हर काम।
आत्मा परमात्मा बने, पाकर गुरु का धाम॥

(लय-सांवली सूरत के मोहन...)

देखकर विद्या गुरु को, हम पुजारी हो गए।
हम पुजारी हो गए तेरे, हम पुजारी हो गए॥
तेरी मुनि मुद्रा के गुरुवर, हम पुजारी हो गए। देखकर...॥१॥
एक तो ये नग्न मूरत, उसपे ये सुंदर सी सूरत।
देखकर पिच्छी कमंडल, हम पुजारी हो गए। देख कर...॥२॥
एक तो दुनियाँ के त्यागी, उसपे ये आतम के रागी।
देखकर वैराग्य तेरा, हम पुजारी हो गए। देख कर...॥३॥
एक तो जग के हितैषी, उसपे हो रागी न द्वेषी।
वीतरागी देख तुमको, हम पुजारी हो गए। देख कर...॥४॥
एक तो आतम के ज्ञाता, उसपे हो सुख शांति दाता।
देख 'सुव्रत' मुक्ति का घर, हम पुजारी हो गए। देख कर...॥५॥
देखकर विद्या गुरु को, हम पुजारी हो गए।
हम पुजारी हो गए तेरे, हम पुजारी हो गए॥
तेरी मुनि मुद्रा के गुरुवर, हम पुजारी हो गए। देख कर...॥६॥

(दोहा)

गुरु से ही होवे सुबह, गुरु से हो हर शाम।
सफल भक्त के काम हों, कर गुरु चरण प्रणाम॥
गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥
(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—१४

स्थापना

(लय-देख तेरे संसार की...)

विद्या गुरुवर परम तपस्वी, रत्नत्रय के प्राण,
कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...।
संयम स्वर्ण महोत्सव मंडित, जिनशासन की शान,
कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...॥
गुरु पूजा की मंगल बेला, भक्तों का लागा है मेला।
हृदय पुकारे आ रे! गा रे!, गुरु भक्ति कर पुण्य कमा रे॥
गुरु भक्ति में अर्पण कर दो, अपने तन मन प्राण।
कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

जन्म मरण की पाकर धारा, भूल न पाए गुरु का द्वारा।
गुरु पद प्रक्षालन कर प्यारा, चमका है सौभाग्य सितारा॥
भक्तों का सौभाग्य जगा कर, रख तो लो कुछ मान,
कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बहकावे में कभी न आए, गुरु भक्ति में हृदय लगाए।
तब ही गुरु की छाया पाए, चलते फिरते तीर्थ बनाए॥
भक्तों को सान्निध्य शरण दे, कर तो दो कल्याण।
कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि बनने की आश लगाई, फिर तो दुनियाँ रास ना आई।
गुरु चरणों में माथा टेका, आगे पीछे कुछ ना देखा॥
तुमसे तुमको माँग रहे हम, दे तो दो अब दान।
कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य का देख बगीचा, फूलों ने मुस्काना सीखा।
कलियों ने बारात सजाई, मुक्तिवधू वरमाला लाई॥
विद्या गुरु का मिले स्वयंवर, अपना भी अरमान।
कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या गुरु की देख रसोई, भोजनशाला फक-फक रोई।
यदि मुँह में आ गया हो पानी, तब तो गुरु की सुनो कहानी॥
भूख प्यास पर विजय देखकर, दुनियाँ है हैरान।
कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या गुरु का जहाँ सबेरा, टिक न सकेगा वहाँ अँधेरा।
जिन्हें चाहिए ज्ञान उजाला, वे गुरुवर की फेरें माला॥
ज्ञान ध्यान वैराग्य देखकर, भगा मोह अज्ञान।
कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने जो जाल बिछाया, उससे कोई सुलझ न पाया॥
बजा दिए कर्मों का बाजा, जय हो विद्यागुरु महाराजा॥
कर्म विजय कर बन बैठे हो, वीतराग विज्ञान।
कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु की देख कमाई, दुनियाँ की दौलत शरमाई।
सो सब गुरु के पीछे दौड़ें, हाथ जोड़कर नाता जोड़ें॥
पुण्यफला की करके पूजा, बढ़ती अपनी शान।

कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त प्रार्थना गुरु सुन लेना, गुरु सान्निध्य हमें भी देना।
घर पर आते जाते रहना, सिर पर हाथ फे रते रहना॥
पाँव पखारे अर्घ्य चढ़ाएँ, 'सुव्रत' पर दो ध्यान।
कि गुरुवर भक्तों के भगवान, कि गुरुवर...॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

प्रथम प्रथम आराध्य हैं, देवों के भी देव।
नाथों के भी नाथ हैं, परम पूज्य गुरुदेव॥

(जोगीरासा)

सब धर्मों में सब ग्रंथों में, गुरु की महिमा न्यारी।
देश विदेशों स्वर्गों में भी, गुरु की है बलिहारी॥
अतः दौड़कर जगत छोड़कर, गुरु से कर लो यारी।
गुरु की यारी सब पर भारी, सो हम हैं आभारी॥१॥
बड़े पुण्य सौभाग्य भाग्य से, गुरु दर्शन मिल पाते।
गुरु के चरणा गुरु की शरणा, पुण्यवान ही पाते॥
अतः जगत के प्रथम देवता, परम पूज्य गुरुदेवा।
सो हम सारे काम छोड़कर, प्रथम करें गुरु सेवा॥२॥
गुरु सेवा के फल की गाथा, शास्त्रों ने भी वाँची।
धरती अम्बर वेद ऋचायें, गुरु सेवा कर नाचीं॥
गुरुवर के आशीष तले ही, सारे शरण सहारे।
अतः छोड़कर सारी दुनिया, गुरु चरणों में आ रे॥३॥
गुरु देवों के देव कहाते, रहे नाथ नाथों के।
भक्तों के भगवान गुरु हैं, साथ रहे शिष्यों के॥
अतः हमारी अर्जी सुन लो, हे! गुरुवर उपकारी।
पूर्ण करो या नहीं करो यह, मर्जी रही तुम्हारी॥४॥
इस धरती से उस अंबर तक, नाम तुम्हारा गूँजे।
हम ही क्या जग के हर प्राणी, तेरे चरणा पूजे॥

जिसने तुम्हें पुकारा उसको, तुमने तारा स्वामी।
'सुव्रत' को भी तनिक निहारो, कृपा करो कल्याणी॥५॥

(दोहा)

गुरुओं के गुरुदेव जो, भक्तों के भगवान।
श्री विद्या गुरु को करें, हम नमोस्तु धर ध्यान॥
गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलि...)

श्री विद्यागुरु पूजन—१५

स्थापना (दोहा)

शिष्यों के गुरुदेव हैं, भक्तों के भगवान।
विद्या गुरु आचार्य को, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

(शंभू)

जिनधर्म तीर्थ के हे! गुरुवर, हो आज तुम्हीं अंतर्यामी।
मल्लप्पा श्रीमति के नंदन, हो शांति ज्ञान के अनुगामी॥
अपने गुरुवर की पूजन के, आमंत्रण को ललचाए हैं।
सो विद्यागुरु के चरणों में, हम भेंट नमोस्तु लाए हैं॥

(दोहा)

आमंत्रण स्वीकार कर, हृदय पधारो नाथ।
आतम परमातम बने, सिर पर रख दो हाथ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

जब जन्म हुआ तो ज्ञान न था, फिर उलझ गए भव भोगों में।
भगवान भजेंगे फिर कैसे, जब दुखी बुढ़ापा रोगों में॥

दुख चक्र मिटाने को अब तो, जल अर्पण करने आए हैं।
सो विद्यागुरु के चरणों में, हम भेंट नमोस्तु लाए हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ पुद्गल की माया में फँस, बस भोग वासना याद रहे।
दिन रात इन्हीं की चिंता में, आतम परमातम भूल रहे॥
भव ताप मिटाने को अब तो, चंदन अर्पण को आए हैं।
सो विद्यागुरु के चरणों में, हम भेंट नमोस्तु लाए हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इसके कारण उसके कारण, हम सुलझ सके ना पापों से।
सो भटक रहे मारे.मारे, पर बच न सके अभिशापों से॥
अब शरण आपकी पाने को, अक्षत अर्पण को आए हैं।
सो विद्यागुरु के चरणों में, हम भेंट नमोस्तु लाए हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फू लों सा जीवन पाकर के, बस शूलों के व्यापार किए।
सो कामुकता ही हाथ लगी, कब अपना हम श्रृंगार किए॥
अब आतम कली खिलाने को, ये पुष्प भेंटने आए हैं।
सो विद्यागुरु के चरणों में, हम भेंट नमोस्तु लाए हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

ना तृप्ति हुई पकवानों से, ना तृप्ति हुई रसपानों से।
सो लुटे पिटे भूखे प्यासे, हम भटके सम्यक ज्ञानों से॥
अध्यात्म सरस चख पाने को, नैवेद्य भेंटने आए हैं।
सो विद्यागुरु के चरणों में, हम भेंट नमोस्तु लाए हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ महापुण्य के कारण से, सान्निध्य गुरु का मिलता है।
जो नहीं सुहाये पापी को, पर भक्त हृदय तो खिलता है॥
अब पुण्य ज्योति प्रकटाने को, ये दीप भेंटने आए हैं।
सो विद्यागुरु के चरणों में, हम भेंट नमोस्तु लाए हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ जब खूब जलाती है, जब लहुलुहान हो जाते हैं।
तब दर्द वेदना दूर करें, गुरु धार्मिक-बाम लगाते हैं॥
अब कर्म कलंक मिटाने को, ये धूप भेंटने आए हैं।
सो विद्यागुरु के चरणों में, हम भेंट नमोस्तु लाए हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तप त्याग तपस्या के फल से, संतान संपदा भी मिलतीं।
पर गुरु चाहें अध्यात्म मिले, जिससे चैतन्य कलीं खिलतीं॥
अब रूप दिगंबर धरने को, ये फल अर्पण को आए हैं।
सो विद्यागुरु के चरणों में, हम भेंट नमोस्तु लाए हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव! आपके श्रद्धालु, बस भाव भक्ति से आते हैं।
बदले में कुछ भी चाह नहीं, फिर भी यह भाव बनाते हैं॥
बस हृदय हमारे आप रहें, ये अर्घ्य भेंटने आए हैं।
सो विद्यागुरु के चरणों में, हम भेंट नमोस्तु लाए हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(विष्णु)

तेरा दर हो मेरा सर हो, हे! मेरे गुरुवर।
चले चले यह खेल तमाशा, सारे जीवन भर॥ तेरा...
जैसे माँ बच्चे को ऊपर, अगर उछालेगी।
तो बच्चा न डरे क्योंकि माँ, उसे बचा लेगी॥
ऐसा ही विश्वास गुरु पर, मैं भी रखूँ अमर।
चले चले यह खेल तमाशा, सारे जीवन भर॥ तेरा...
हे गुरुवर! मेरी भक्ति का, यही सिला मिल जाए।
गुरु दीक्षा ले मैं निकलूं अरु, सिद्ध शिला मिल जाए॥
गुरु पर कुछ भी आँच न आएँ, आ जाएँ मुझ पर।
चले चले यह खेल तमाशा, सारे जीवन भर॥ तेरा...
जहाँ चरण गुरु रखें वहाँ पर, शिष्य पुष्प बन जाएँ।

निरख-निरख कर गुरुवर चलते, प्रभु विहार झलकाएँ॥
भक्त हृदय में गुरुवर धड़के, वसे प्राण बनकर।
चले चले यह खेल तमाशा, सारे जीवन भर॥ तेरा...
जैसे सूरज का किरणों से, चाँद चाँदनी का।
जैसे सागर का नदियों से, राग रागनी का॥
वैसे गुरु से अपना रिश्ता, रहे जिंदगी भर।
चले चले यह खेल तमाशा, सारे जीवन भर॥ तेरा...
मोर पपीहा कोयल बोले, हे! मेरे गुरुवर।
धरती अंबर सागर बोलें, हे! मेरे गुरुवर॥
तुम्हें नजर ना लगे किसी की, मेरी लगे उमर।
चले चले यह खेल तमाशा, सारे जीवन भर॥ तेरा...
दीर्घ आयु हों पूर्ण आयु हों, गुरु चिरायु हों।
यही भावना हम सबकी गुरु, स्वस्थ शतायु हों॥
जय-जयवंत रहे गुरु शासन, सदियों रहे खबर।
चले चले यह खेल तमाशा, सारे जीवन भर॥ तेरा...
गुरु का दर्शन सम्यग्दर्शन, वाणी सम्यग्ज्ञान।
है सम्यक्-चारित्र गुरुजी, रत्नत्रय विज्ञान॥
सो विद्या के 'सुव्रतसागर', झुकें नमोस्तु कर।
चले चले यह खेल तमाशा, सारे जीवन भर॥ तेरा...

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—१६

स्थापना (दोहा)

गुरुवर ने हर भक्त का, जीवन दिया निखार।
भक्त करें गुरु-अर्चना, नमोस्तु बारम्बार॥

(चामर)

ज्ञान सिंधु के सुशिष्य विद्यासागरेश हैं।
आदि वीर के प्रतीक भक्त के जिनेश हैं॥
आप ही हमें मिलो यही विशेष प्रार्थना।
हो नमोस्तु आपको करें सदैव अर्चना॥

(दोहा)

श्री विद्यासागर गुरो, वसो हृदय के धाम।
चिदानंद की आश ले, बारंबार प्रणाम॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

(चामर)

जन्म मृत्यु के समुद्र तैरने की भावना।
आपकी हुई जहाँ वही किए प्रभावना॥
आप ही हमें मिलो यही विशेष प्रार्थना।
हो नमोस्तु आपको करें सदैव अर्चना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आग राग द्वेष की कभी तुम्हें न चाहिए।
आपकी अतः हमें सदैव छाँव चाहिए॥
आप ही हमें मिलो यही विशेष प्रार्थना।
हो नमोस्तु आपको करें सदैव अर्चना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दौड़-दौड़ आसरे कहीं मिले न खोज के।
आ गए पुकारने तुम्हें ऋषीश पूज के॥
आप ही हमें मिलो यही विशेष प्रार्थना।
हो नमोस्तु आपको करें सदैव अर्चना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प का प्रभाव रोग भोग शोक दान दे।
वंदना में सौंप के यही महान ब्रह्म दे॥
आप ही हमें मिलो यही विशेष प्रार्थना।
हो नमोस्तु आपको करें सदैव अर्चना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट मिष्ठ या गरिष्ठ भोज्य वस्तु त्याग के।
चेतना तुम्हीं चखो स्वभाव को विचार के॥
आप ही हमें मिलो यही विशेष प्रार्थना।
हो नमोस्तु आपको करें सदैव अर्चना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंध नाश हेतु लक्ष्य को बनाए के।
आरती उतारते हैं दीप को जलाए के॥
आप ही हमें मिलो यही विशेष प्रार्थना।
हो नमोस्तु आपको करें सदैव अर्चना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के स्वभाव ने विभाव सा दिया हमें।
हो विभाव का अभाव सो पुकारते तुम्हें॥
आप ही हमें मिलो यही विशेष प्रार्थना।
हो नमोस्तु आपको करें सदैव अर्चना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व के भविष्य का सदा विचार ही किया।
आत्म के सुधार हेतु विश्व त्याग सा दिया॥
आप ही हमें मिलो यही विशेष प्रार्थना।
हो नमोस्तु आपको करें सदैव अर्चना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आपने हमें दिए विचार मोक्षमार्ग के।
भेंट क्या करें तुम्हें झुके हैं शीश भक्त के॥
आप ही हमें मिलो यही विशेष प्रार्थना।
हो नमोस्तु आपको करें सदैव अर्चना॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (ज्ञानोदय)

जिनशासन के अनुयायी जो, भव्य जीव बन जाते हैं।
चौबीसी के श्रद्धालु वे, मोक्षमार्ग पर आते हैं॥
अनादि कालिक मिथ्यादर्शन, भव का भ्रमण नशाकर के।
रूप दिगंबर धारण करते, रत्नत्रय प्रकटाकर के॥१॥
ऐसे ही श्री विद्या गुरु जी, निकट भव्य निज अनुरागी।
लेकिन जिनशासन को पाकर, होते त्यागी वैरागी॥
सुनते हैं वे वर्तमान में, मोक्षमहल के यात्री हैं।
संघ प्रमुख अध्यात्म सुखों के, अभिलाषी कर पात्री हैं॥२॥
गुरु की चर्या को समझा तो, दर्शन को मजबूर हुए।
उनके पथ पर चलने हम भी, उनके ही मजदूर हुए॥
जी हां! ये वो विद्यागुरु हैं, धर्म जिन्होंने बतलाया।
जीवन का हर मर्म सिखाया, स्वर्ग मोक्ष पथ दिखलाया॥३॥
भारत देश विदेश विश्व में, सब पर तो उपकार किए।
संत शिरोमणि विद्यागुरुवर, चरण शरण उपहार दिए॥
स्वार्थ नहीं कुछ आज हमारा, बस उपकार चुकाने को।
हम आए श्री विद्यागुरु को, सादर शीश झुकाने को॥४॥
शीश झुकाएं गीत सुनाएं, करें अर्चना भली-भली।
विद्यागुरु को पाकर अब हम, भटकेंगे ना गली-गली॥
है विश्वास आप पर इतना, हमको कभी संभालोगे।
आज नहीं तो कल या परसों, 'सुव्रत' को अपना लोगे॥५॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—१७

स्थापना (हाकलिका)

घर में मन जब नहीं लगे, गुरु दर्शन को भक्त भगे।
राह मिली गुरुदर्शन की, प्यास बढ़ी तब पूजन की॥
सो गुरु पूजन रचा रहे, विद्यागुरु को बुला रहे।
गुरुवर अब ना देर करो, आओ तो उद्धार करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

ओ! रे जल बादल में जा, बादल तू कर दे वर्षा।
वर्षा तू गुरु चरण पखार, गंधोदक से भाग्य संवार॥
जल जल का ज्यों रिश्तेदार, वैसी हम करके जलधार।
करते नमोस्तु बारंबार, विद्यागुरु की जय जयकार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ओ! रे चंदन घिस कर आ, घिसकर गुरु चरणों में जा।
गुरु चरणों में तू चढ़ जा, चढ़कर सब शीतल कर जा॥
चंदन चंदन रिश्तेदार, वैसी करके चंदन धार।
करते नमोस्तु बारंबार, विद्यागुरु की जय जयकार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ओ! रे अक्षत पुंज सजा, गुरु पूजा के ढोल बजा।
गुरु चरणों में तू रम जा, रमकर अपनी मंजिल पा॥
अक्षत अक्षत रिश्तेदार, वैसे पूजें पुंज संवार।
करते नमोस्तु बारंबार, विद्यागुरु की जय जयकार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ओ! रे फूल फूल से फूल, तुझे फूल ने भेजा फूल।
चलो फूल से पूजें फूल, गुरुवर फूल फूल के फूल॥
फूल फूल का रिश्तेदार, वैसी पूजा फूलोंदार।
करते नमोस्तु बारंबार, विद्यागुरु की जय जयकार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

ओ! रे भोजन के पकवान, क्यों तू दूर करे भगवान।
चलो चलें नैवेद्य चखें, गुरु का भोजन साथ रखें॥
भोजन भोजन रिश्तेदार, वैसी कर पूजा रसदार।
करते नमोस्तु बारंबार, विद्यागुरु की जय जयकार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ओ! रे दीपक तू जलना, जलते-जलते तक कहना।
गुरु दीपक तक जा रे! जा, दीपक ने दीपक भेजा॥
दीपक दीपक रिश्तेदार, वैसी पूजा किरणोंदार।
करते नमोस्तु बारंबार, विद्यागुरु की जय जयकार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म कर्म का हित चाहें, जीव जीव का हित चाहें।
अपने-अपने सब स्वार्थी, लेकिन गुरुवर परमार्थी॥
धूप धूप का रिश्तेदार, वैसी पूजा खुशबूदार।
करते नमोस्तु बारंबार, विद्यागुरु की जय जयकार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ओ! रे फल फल से कहना, अपने फल तक तू फलना।
फल ने फसल उगाई है, फसल बीज की माई है॥
फल का फल ज्यों रिश्तेदार, वैसी हो पूजा फलदार।
करते नमोस्तु बारंबार, विद्यागुरु की जय जयकार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ओ! रे अर्घ्य अर्घ्य से बोल, लेकर अर्घ्य बजाके ढोल।
चलो चढ़ाएं गुरु को अर्घ्य, गुरु पूजन का मंगल पर्व॥
अर्घ्य अर्घ्य का रिश्तेदार, वैसी पूजा अर्घ्य संवार।
करते नमोस्तु बारंबार, विद्यागुरु की जय जयकार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-देखो तो विद्या गुरुवर...)

ये न कहो गुरु से, संकट मेरे बड़े हैं।
ये संकटों से कह दो, मेरे गुरु बड़े हैं॥

जीवन मिला ये अपना, अनमोल है खजाना।
दुख संकटों के भय से, ये व्यर्थ न गँवाना॥
विश्वास रख गुरु पर, गुरु साथ में खड़े हैं।
ये संकटों से....॥१॥

जो आग में तपे ना, किस काम का वो कुन्दन।
जिस पर ना साँप लिपटें, वो नकली होगा चंदन॥
गुरु नाम के सहारे, तूफा भी थम पड़े हैं।
ये संकटों से....॥२॥

जितनी बड़ी समस्या, उतनी बड़ी तपस्या।
निश्चित ही आज कल में, हल होगी हर समस्या॥
आशीष पाके गुरु का, युग चोटी पे चढ़े हैं।
ये संकटों से....॥३॥

जब भी घटायें छायें, गुरु पीछे न हटेंगे।
तुम इक कदम बढ़ाना, गुरु सौ कदम बढ़ेंगे॥
गुरु ने सम्हाला उनको, पर हित में जो अड़े हैं।
ये संकटों से....॥४॥

सम्मान उनके होते, जो बाजी मार जाते।
हर आँधियों में डटकर, दिन रात जगमगाते॥
सुख ज्ञान ज्योति भरने, 'सुव्रत' के फल झड़े हैं।
ये संकटों से....॥५॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—१८

स्थापना (लघु चौपाई)

दिव्य देशना कहती रोज, करके अपने गुरु की खोज।
पहले गुरु को करो प्रणाम, फिर दूजा कुछ करना काम॥
विद्यागुरु का लेकर नाम, हम नमोस्तु करते हैं ध्यान।
हृदय पधारो हे! महाराज, पूजन को दो आशीर्वाद॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

जन्म मरण दुख कर दो दूर, सुख समृद्धि दो भरपूर।
विद्यागुरु दे दो आशीष, कर नमोस्तु हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सहें न जायें भव के ताप, इनसे हमें बचा लो आप।
विद्यागुरु दे दो आशीष, कर नमोस्तु हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम करते गुरु पर विश्वास, धार सकें अक्षय संन्यास।
विद्यागुरु दे दो आशीष, कर नमोस्तु हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम कषायों के दुख त्यागए ब्रह्मचर्य का दे दो बाग।
विद्यागुरु दे दो आशीष, कर नमोस्तु हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु ऐसा दे दो आहार, भूख प्यास जो करे किनार।
विद्यागुरु दे दो आशीष, कर नमोस्तु हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हमको दे दो ज्ञान प्रकाश, जो करवाता धर्म विकास।
विद्यागुरु दे दो आशीष, कर नमोस्तु हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म कहानी करें समाप्त, चेतन सत्ता करलें प्राप्त।
विद्यागुरु दे दो आशीष, कर नमोस्तु हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमें दीजिए वह विश्राम, कुछ भी करना पड़े न काम।
विद्यागुरु दे दो आशीष, कर नमोस्तु हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य अर्चना करके आज, बने आप जैसे मुनिराज।
विद्यागुरु दे दो आशीष, कर नमोस्तु हम टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-हम तुम्हारे थे गुरुवर...) (जोगीरासा)

आपके हम थे गुरुवर, आपके हम हैं।
आपके ही हम रहेंगे, ओ! प्रिय गुरुवर॥
आप हमारे थे गुरुवर, आप हमारे हैं।
आप हमारे ही रहेंगे, ओ! प्रिय गुरुवर॥
आगे-पीछे कुछ न सोचा, सारी दुनियाँ छोड़ी।
चरणों में ये जीवन सौंपा, प्रीत तुम्हीं से जोड़ी॥
प्रीत की रीत चले ऐसे ही, ओ! प्रिय...॥१॥
तुमको माना मात-पिता है, तुम ही बंधु भाई।
बिना तुम्हारे कौन हमारा, तुम से आश लगाई॥
तुम भी थामे रहना हमको, ओ! प्रिय...॥२॥
जगत कहे तुम जगतगुरु हो, भगत कहे भगवान हो।
पर हम कहते आप हमारे, चेतन जीवन प्राण हो॥
आप बिना अब जिएं तो कैसे, ओ! प्रिय...॥३॥
तुम्हें हमारे जैसे सेवक, लाखों ही छू लेंगे।
पर लाखों में एक आपको, हम कैसे भूलेंगे॥
'सुव्रत' को चरणों में रखना, ओ! प्रिय...॥४॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥
(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—१९

स्थापना (शुद्ध गीता)

यही है प्रार्थना गुरुवर, यही है भावना गुरुवर।
हमें अपनी शरण देना, यही है याचना गुरुवर॥
हृदय के देवता अब तो, हृदय में आ पधारो जी।
रचाएं अर्चना हम तो, तनिक हम को निहारो जी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

चढ़ाकर रोज प्रासुक जल, हमारा जन्म सार्थक हो।
अतः विद्या गुरुवर को, हमारी भी नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाकर आपको चंदन, हमारा ताप शीतल हो।
अतः विद्या गुरुवर को, हमारी भी नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाकर पुंज चरणों में, बने अक्षय निवासी हो।
अतः विद्या गुरुवर को, हमारी भी नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाकर पुष्प चरणों में, बने गुरु ब्रह्मचारी हो।
अतः विद्या गुरुवर को, हमारी भी नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा नैवेद्य चरणों में, चखे रस साधना का हो।
अतः विद्या गुरुवर को, हमारी भी नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाकर दीप भक्ति का, हृदय तो आरती का हो।
अतः विद्या गुरुवर को, हमारी भी नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाकर धूप चरणों में, विनशता कर्म पर्वत हो।
अतः विद्या गुरुवर को, हमारी भी नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाकर आपको फल ये, सफलता शीघ्र हासिल हो।
अतः विद्या गुरुवर को, हमारी भी नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाकर अर्घ्य चरणों में, सुखी समृद्ध जीवन हो।
अतः विद्या गुरुवर को, हमारी भी नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(ज्ञानोदय)

मेरा छोटा सा परिवार, गुरु आ जाओ इक बार।
गुरु आ जाओ इक बार, गुरु आ जाओ इक बार॥
मेरा छोटा सा...॥
कब से अखियाँ तुम्हें निहारे, कब आओगे मेरे नाथ।
कब मैं चरण पखाऊँ तेरे, कब थामोगे मेरा हाथ॥
मेरा करने को उद्धार, गुरु आ जाओ इक बार।
मेरा छोटा सा...॥ १॥
जिसने भी गुरु तुम्हें पुकारा, उसका देते हो तुम साथ।
कबसे शीश झुका है मेरा, कब रक्खोगे इस पर हाथ॥
मेरी सुनने करुण पुकार, गुरु आ जाओ इक बार।
मेरा छोटा सा...॥ २॥
नवधा भक्ति करके मुझको, थोड़ा पुण्य कमाना है।
उससे फिर अपनी नगरी में, चातुर्मास कराना है॥
अब करने चातुर्मास, गुरु आ जाओ इक बार।
मेरा छोटा सा...॥ ३॥

मैंने अपना फर्ज निभाया, घर पर चौक पुराने का।
तुम भी अपना फर्ज निभालो, अब चौके में आने का॥
अब लेने को आहार, गुरु आ जाओ इक बार।
मेरा छोटा सा...॥ ४॥
चातुर्मास पुण्य बेला में, गुरु कुछ ऐसा कर देना।
'सुव्रत' दीक्षा देकर हमको, अपने साथ हि रख लेना॥
मेरी करने नैया पार, गुरु आ जाओ इक बार।
मेरा छोटा सा...॥ ५॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—२०

स्थापना (अडिल्ल)

आए गुरु के द्वार जगत से हार कर।
करते गुरु की पूजा खुद से प्यार कर॥
अब तो हमें निहारो दो आशीष ही।
विद्यागुरु को सादर टेकें शीश भी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

जन्म मरण की दूर करें दुख वेदना।
अतः रचाएँ प्रासुक जल से अर्चना॥

करें नमोस्तु विद्यागुरु भगवान को।
चाहें आशीर्वाद जरा सा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा तपाकर दुख दे वो संसार है।
गुरु की शरणा पाकर नैया पार हो॥
करें नमोस्तु विद्यागुरु भगवान को।
चाहें आशीर्वाद जरा सा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियाँ हम को दुख का दान दें।
कभी नहीं ये वीतराग विज्ञान दें॥
करें नमोस्तु विद्यागुरु भगवान को।
चाहें आशीर्वाद जरा सा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ के सहयोग भोग के रोग जो।
कभी ना देते ब्रह्मचर्य के योग वो॥
करें नमोस्तु विद्यागुरु भगवान को।
चाहें आशीर्वाद जरा सा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन करके भजन करो भगवान का।
तभी मिलेगा मार्ग आत्म कल्याण का॥
करें नमोस्तु विद्यागुरु भगवान को।
चाहें आशीर्वाद जरा सा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंधकार में रहकर न घबराईए।
सम्यग्ज्ञान प्रकाशित दीप जलाईए॥
करें नमोस्तु विद्यागुरु भगवान को।
चाहें आशीर्वाद जरा सा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ चेतन के बंद द्वन्द्व सारे करें।
पाने को आनंद गंध खेया करें॥
करें नमोस्तु विद्यागुरु भगवान को।
चाहें आशीर्वाद जरा सा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म करें पर फल ना चाहे भोगना।
यह कैसे संभव होगा यह सोचना॥
करें नमोस्तु विद्यागुरु भगवान को।
चाहें आशीर्वाद जरा सा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्पण और समर्पण के बिन क्या मिले।
ना किसी की छाया ना बगिया खिले॥
करें नमोस्तु विद्यागुरु भगवान को।
चाहें आशीर्वाद जरा सा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (चौपाई)

एक नया अंदाज गुरुवर, हम सब की आवाज गुरुवर।
मुक्त गगन में उड़ने वाले, प्रखर प्रवर परवाज गुरुवर॥१॥
पाप मोह तम राग द्वेष पर, गिरते बन कर गाज गुरुवर।
अल्प उम्र में दीक्षा लेकर, बने धर्म की लाज गुरुवर॥२॥
सत्य अहिंसा धर्म पंथ के, मापदंड हैं आज गुरुवर।
छिपे हुए जो शास्त्र ग्रंथ में, खोल रहे वो राज गुरुवर॥३॥
अध्यातम की तान रसीली, भक्ति के सुर साज गुरुवर।
पथ में परिषह उपसर्गों का, करते नहीं लिहाज गुरुवर॥४॥
पक्षपात तज वात्सल्य से, करुणा के आगाज गुरुवर।
कैसे भी हों रोग भक्त के, सबके करें इलाज गुरुवर॥५॥
मानवता के रखवाले बन, गम के हैं यमराज गुरुवर।
गुरु के गुरु के आदर्शों पर, हर पल करते नाज गुरुवर॥६॥

तख्त ताज की नहीं तमन्ना, फिर भी हैं सरताज गुरुवर।
जियो और जीने दो वाला, रचते रोज समाज गुरुवर॥७॥
साँचे गुरु का दर्शन पाने, भक्ति भी मोहताज गुरुवर।
'सुव्रत' के दिल में भी करते, देखो! सुनलो राज गुरुवर॥८॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—२१

स्थापना (सखी)

हम पूजन पाठ रचाएं, हे! विद्या गुरु तुम्हारी।
ज्यों खुद को आप संभालो, त्यों रखियौ खबर हमारी॥
हमने निज फर्ज निभाया, अब रही आपकी बारी।
आशीर्वाद हमें दो, हो नमोस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

दुख जनम मरण का हर लो, हमको चरणों का जल दो।
हम विद्यागुरु को पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार दुखों को हर लो, हमको चैतन्य शरण दो।
हम विद्यागुरु को पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भ्रमण हमारा हर लो, हमको अपने सम कर दो।
हम विद्यागुरु को पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु काम रोग को हर लो, झट बह्म विलाशी कर दो।
हम विद्यागुरु को पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

दुख क्षुधा रोग का हर लो, झट परमानंदी कर दो।
हम विद्यागुरु को पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान मोह को हर लो, हमको भी ज्योतित कर दो।
हम विद्यागुरु को पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रम अष्ट कर्म का हर लो, निर्बंध हमे भी कर दो।
हम विद्यागुरु को पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पाप कर्म के हर लो, सुख चिदानंद का कर दो।
हम विद्यागुरु को पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

दारिद्र वेदना हर लो, स्पर्श हमें तो कर लो।
हम विद्यागुरु को पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-एक तू न मिला...)

गुरु तुम मिल गए, सारी दुनियाँ मिले न तो क्या है।
मन सुमन खिल गए, सारी बगिया खिले न तो क्या है॥ गुरु तुम...॥
मैं भक्त हूँ और भगवान तुम, होंगे नहीं दूर मैं और तुम।
मेरे मन में तुम्हीं, मैं हूँ चरणों में तेरे तो क्या है॥ गुरु तुम...॥१॥
तेरे ही चरणों की मैं धूल हूँ, चरणों में अर्पित कोई फू ल हूँ।
शरणा भी तो मिले, संग दुनियाँ चले न तो क्या है॥ गुरु तुम...॥२॥

चरणों में तेरे जगह मिल गयी, खुशियों की मुझको वजह मिल गयी।
सेवा भी तो मिले, प्रार्थना पूरी कर दो तो क्या है॥ गुरु तुम...॥३॥
भले प्राण सुव्रत के लुट जाएँ पर, तेरा साथ हो हाथ भी शीश पर।
बंदिगी तो मिले जिंदगी फिर मिले न तो क्या है॥ गुरु तुम...॥४॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—२२

स्थापना (जोगीरासा)

आश लगाकर हम आए हैं, प्यास बुझा दो ज्ञानी।
आप हमारे हृदय पधारो, हम सेवक तुम स्वामी॥
आप कहाँ हम कहाँ रहे हैं, फिर भी आश लगाएँ।
सो नमोस्तु विद्यागुरु को कर, गुरु की पूजा गाएँ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

जन्म मरण का चक्र मिटाने, दो जल जैसी वस्तु।
विद्यागुरु के पद कमलों में, बारम्बार नमोस्तु॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कष्ट चार गतियों के हरने, दो चंदन सी वस्तु।
विद्यागुरु के पद कमलों में, बारम्बार नमोस्तु॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ हमारा भ्रमण नशाने, दो अक्षय पद वस्तु।
विद्यागुरु के पद कमलों में, बारम्बार नमोस्तु॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामबाण को हरकर दे दो, ब्रह्मचर्य की वस्तु।
विद्यागुरु के पद कमलों में, बारम्बार नमोस्तु॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन पीडा दूर करा दो, दो चेतन रस वस्तु।
विद्यागुरु के पद कमलों में, बारम्बार नमोस्तु॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंधेरा दूर करा दो, ज्ञान किरण की वस्तु।
विद्यागुरु के पद कमलों में, बारम्बार नमोस्तु॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म के चक्र नशा दो, शुद्ध चेतना वस्तु।
विद्यागुरु के पद कमलों में, बारम्बार नमोस्तु॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-दुख आकुलता हम नाशें, मिले मोक्षफल वस्तु।
विद्यागुरु के पद कमलों में, बारम्बार नमोस्तु॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम स्पर्श करें तुमको तो, दो जिनगुण की वस्तु।
विद्यागुरु के पद कमलों में, बारम्बार नमोस्तु॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-मेरे जीवन की डोर...)

मेरे जीवन की डोर, गुरु खींचो अपनी ओर।
मेरा चंचल मन मोर, गुरु खींचो अपनी ओर॥
मिथ्यातम की राह पर, चलता-चलता आया हूँ।
मिथ्याभ्रम के जाल को, बुनता-बुनता आया हूँ॥
भव-जंगल में भटक रहा हूँ, गुरु दिखला दो छोर। मेरे...॥१॥
हिंसा झूठ कुशील परिग्रह, चोरी आदिक पापों से।

मैं भी कष्ट भोगता आया, पापों के अभिशापों से॥
पाप शुद्धि को ज्ञान धार की, वर्षा दो घनघोर। मेरे...॥२॥
क्रोध मान माया लोभों की, महा कषायों से जलके।
मोह कर्म की राग-द्वेष की, मदिरा अंदर से झलके॥
इनमें मैं भी उलझ न जाऊँ , दूर करो ये चोर। मेरे...॥३॥
व्यसनों की लोलुपता छोड़ूँ, विषयों की आसक्ति को।
सम्यक पथ से भटक न जाऊँ, गुरुवर ऐसी शक्ति दो॥
मृत्यु महोत्सव समाधि पाऊँ, करो धर्म की भोर। मेरे...॥४॥
रत्नत्रय के पुत्रों के बिन, मेरी आतम बाँझ रही।
संत समागम करके स्वामी, तुमसे तुमको माँग रही॥
'सुव्रत' की झोली भर दे दो, परमानंदी शोर। मेरे...॥५॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

गुरु सुविधा के
भोगी नही
आत्मा के
योगी होते हैं

श्री विद्यागुरु पूजन—२३

स्थापना (हाकलिका)

डोर बँधी जब श्रद्धा की, हुई भावना पूजा की।
गुरु चरणों में आ बैठे, सादर शीश झुका बैठे॥
गुरु से आश लगा बैठे, गुरु को हृदय बुला बैठे।
गुरुवर हृदय पधारेंगे, हम भक्तों को तारेंगे॥

(दोहा)

विद्यागुरु जी आइए, आमंत्रण स्वीकार।
पूजन के पहले करें, नमोस्तु बारंबार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

(हाकलिका)

जन्म मृत्यु हम ना चाहें, गुरु भक्ति का जल चाहें।
विद्या गुरु ऐसा वर दो, नमोस्तु का बस अवसर दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख का ताप नहीं चाहें, गुरु की छाया बस चाहें।
विद्या गुरु ऐसा वर दो, नमोस्तु का बस अवसर दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव यात्रा हम ना चाहें, तुम जैसा बनना चाहें।
विद्या गुरु ऐसा वर दो, नमोस्तु का बस अवसर दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भोग वासना ना चाहें, ब्रह्मचर्य का पथ चाहें।
विद्या गुरु ऐसा वर दो, नमोस्तु का बस अवसर दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

रसना के रस ना चाहें, गुरु आज्ञा के रस चाहें।
विद्या गुरु ऐसा वर दो, नमोस्तु का बस अवसर दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की माया ना चाहें, गुरु का निर्देशन चाहें।
विद्या गुरु ऐसा वर दो, नमोस्तु का बस अवसर दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ ऐसा करना चाहें, कर पर कर रखना चाहें।
विद्या गुरु ऐसा वर दो, नमोस्तु का बस अवसर दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियादारी ना चाहें, चरणों में रहना चाहें।
विद्या गुरु ऐसा वर दो, नमोस्तु का बस अवसर दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धन-संपत्ति ना चाहें, गुरु की मात्र कृपा चाहें।
विद्या गुरु ऐसा वर दो, नमोस्तु का बस अवसर दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-मेरे भैया मेरे चंदा, मेरे अनमोल रतन...)

मेरे गुरुवर, मेरे मुनिवर, मेरे भगवान तुम्हीं।
इससे ज्यादा तो मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं॥

मैं तो नन्हा सा शिशु मेरा अस्तित्व ही क्या।
मेरी मातु, मेरे बापू, मेरा परिवार तुम्हीं॥ इससे ...॥१॥
अब ना खोजूँगा सहारे मैं अपने लिए।
मेरी दौलत, मेरी किस्मत, मेरे धन मान तुम्हीं॥ इससे...॥२॥
क्यों मैं भटकूँगा जमाने में खुशी के लिए।
मेरी होली, मेरी दिवाली, मेरे त्यौहार तुम्हीं॥ इससे...॥३॥
मेरे अपने मेरे सपने मेरे अरमान हैं क्या।
मेरा चेतन, मेरा जीवन, मेरे हो प्राण तुम्हीं॥ इससे...॥४॥
मेरी पूजा मेरे ईश्वर मेरे तप त्याग हवन।
मेरे मंदिर, मेरे तीरथ, मेरे हो मोक्ष तुम्हीं॥इससे...॥५॥
मेरी मंजिल मेरी यात्रा मेरी पूंजी है ही क्या।
मेरी श्रद्धा, मेरी भक्ति, मेरे 'सुव्रत' होतुम्हीं॥ इससे...॥६॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥
(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—२४

स्थापना (सुविद्या)

झालर घंटी सुनकर अपने, नाँच उठे मन मोर।
जग के बंधन तोड़ चले हम, गुरु चरणों की ओर॥
हृदय विराजो हे! गुरुवर जी, यही लगाकर आश।
विद्यागुरु की करें अर्चना, करके नमोस्तु दास॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

जन्म मरण दुख दूर करा के, देते सुख का राज।
संत शिरोमणि विद्या गुरुवर, तुम्हें नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत चक्र में उलझे हमको, सुलझा दो महाराज।
संत शिरोमणि विद्या गुरुवर, तुम्हें नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने जैसे अक्षय सुख का, पथ दे दो महाराज।
संत शिरोमणि विद्या गुरुवर, तुम्हें नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अपने जैसे ब्रह्मचर्य को, महका दो महाराज।
संत शिरोमणि विद्या गुरुवर, तुम्हें नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन त्याग भजन की शिक्षा, दे तो दो महाराज।
संत शिरोमणि विद्या गुरुवर, तुम्हें नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप मोह अज्ञान अंधेरा, दूर करो महाराज।
संत शिरोमणि विद्या गुरुवर, तुम्हें नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कर्म तज पुण्य कर्म की, शिक्षा दो महाराज।
संत शिरोमणि विद्या गुरुवर, तुम्हें नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल जैसा अब तो हमको, स्वीकारो महाराज।
संत शिरोमणि विद्या गुरुवर, तुम्हें नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु से गुरु को मांग रहे हम, दे तो दो महाराज।
संत शिरोमणि विद्या गुरुवर, तुम्हें नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(विद्योदय-लय-नानी तेरी मोरनी...)

स्वामी मेरी प्रार्थना पर ध्यान दीजिए।
थोड़ा मुझको भी तो अपना ज्ञान दीजिए॥
मैं भी तेरे गुण गाता हूँ, अपनी भाषा बोल के।
तुम भी मेरी सुनो प्रार्थना, अपनी अखियाँ खोल के॥
त्यागी अब तो वीतराग विज्ञान दीजिए। थोड़ा मुझको भी...॥१॥
इस जग में अज्ञान भरे, आतंक भरे हैं पाप हैं।
इनसे मुझे बचाने वाले बड़े दयालु आप हैं॥
ज्ञानी मुझको निज सम केवलज्ञान दीजिए। थोड़ा मुझको भी...॥२॥
तुम्हीं सिखाते सत्य अहिंसा, तुम ही पालनहार हो।
तुम ही आतम शुद्धातम की नैया खेवनहार हो॥
ध्यानी अब तो सिद्धों सा निर्वाण दीजिए। थोड़ा मुझको भी...॥३॥
मैं तो कर्मों में उलझा हूँ, परमातम को भूल के।
सो बन बैठा रोगी दुखिया, अपनी आतम भूल के॥
योगी-योग निरोधक संविधान दीजिए। थोड़ा मुझको भी...॥४॥

मेरी सारी भूल भुला कर, काटो मेरे कर्म को।
उत्तम क्षमा मुझे भी कर दो, देकर साँचे धर्म को॥
धर्मी अब तो रत्नत्रय के प्राण दीजिए। थोड़ा मुझको भी...॥५॥
दुख संकट से मुझे बचा के, मुझको अपना धाम दो।
सबको सब कुछ देते अब तो, मेरी नैया थाम लो॥
दानी अब तो परमानंदी दान दीजिए। थोड़ा मुझको भी...॥६॥
मुझको अपने पास बुला लो, सारे बंधन तोड़ के।
'सुव्रत' को निज विद्या दे दो, अब कंजूसी छोड़ के॥
'विद्या' अपनी विद्या का वरदान दीजिए। थोड़ा मुझको भी...॥७॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—२५

स्थापना (हरिगीतिका)

गुरु आन हैं गुरु बान हैं, गुरु धर्म की पहचान हैं।
गुरु ज्ञान हैं गुरु ध्यान हैं, गुरु भक्त के भगवान हैं॥
करके नमोस्तु हम रचाएं अर्चना गुरुराज की।
विद्यागुरु महाराज हैं तस्वीर श्री जिनराज की॥

(दोहा)

भगवन बस भगवन रहे, गुरु गुरु हैं भगवान।
सो गुरु की पूजा करें,कर नमोस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

(हरिगीतिका)

जो जन्म मृत्यु दुख मिटाकर, दूर करते पाप को।
आचार्य श्री विद्या गुरुवर, हो नमोस्तु आपको॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अपनी शरण देकर हमें जो, दूर करते ताप को।
आचार्य श्री विद्या गुरुवर, हो नमोस्तु आपको॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटकन हमारी दूर करने, पुंज भेंटें आपको।
आचार्य श्री विद्या गुरुवर, हो नमोस्तु आपको॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम की पीडा मिटाने, पुष्प भेंटें आपको।
आचार्य श्री विद्या गुरुवर, हो नमोस्तु आपको॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

हम भूख की पीडा हरें, नैवेद्य भेटें आपको।
आचार्य श्री विद्या गुरुवर, हो नमोस्तु आपको॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह का हरने अंधेरा, दीप सौंपे आपको।
आचार्य श्री विद्या गुरुवर, हो नमोस्तु आपको॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख कर्म का बंधन मिटाने, धूप सौंपें आपको।
आचार्य श्री विद्या गुरुवर, हो नमोस्तु आपको॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भी श्रीफल की तरह हों, सो समर्पित आपको।
आचार्य श्री विद्या गुरुवर, हो नमोस्तु आपको॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संबंध निज का निज निभाने, अर्घ्य भेटें आपको।
आचार्य श्री विद्या गुरुवर, हो नमोस्तु आपको॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(चौपाई)

हनुमन के बिन राम अधूरे, बिना सुदामा श्याम अधूरे।
जब तक खोज न पूरी हो तो, विद्या के बिन ज्ञान अधूरे॥१॥
जो डूबे प्रभु की मस्ती में, चार चाँद लगते हस्ती में।
वीर प्रभु गौतम से लगता, भक्त बिना भगवान अधूरे॥२॥
सरस्वती बनती वर्णों से, नदी सिन्धु भरते बूंदों से।
जब तक यात्रा पूर्ण न हो तो, शिष्य बिना गुरुदेव अधूरे॥३॥
सीता के बिन राम दुखी थे, रुक्मणि बिन घनश्याम दुखी थे।
जब तक बने न वैरागी तो, राजुल के बिन नेमि अधूरे॥४॥
चुनी अहिल्या चट्टानों में, मीरा रम गयी विष प्यालों में।
देख चन्दना की हथकड़ियाँ, भक्ति बिना महावीर अधूरे॥५॥
क्या देते हैं जग के नाते, आते जाते हमें रुलाते।
अगर नहीं अध्यात्म धर्म तो पुत्र बिना हर पिता अधूरे॥६॥
तुम्हें जरूरत रही हमारी, हमें जरूरत रही तुम्हारी।
अलग-अगल हम तुम हैं अधूरे, मिल के रहें तो होंगे पूरे॥७॥
इस धरती से उस अम्बर तक, पिछले पल से अगले पल तक।
'सुव्रत' ऐसी विद्या धर लो, पूर्ण बनो अब रहो न अधूरे॥८॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—२६

स्थापना (चौपाई)

आप शब्द हैं आप अर्थ हैं, आप बिना हम भक्त व्यर्थ हैं।
सार्थक होगा जन्म हमारा, अगर मिले सान्निध्य तुम्हारा॥
निकट आपके आने को हम, आकुल शीश झुकाने को हम।
अब तो हृदय पधारो ज्ञानी, सादर तुम्हें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

जन्म मृत्यु दुख हम ना चाहें, श्रद्धा भक्ति का जल चाहें।
विद्यागुरु को करो नमामि, आशीर्वाद हमें दो स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम संसार ताप ना चाहें, चंदन सी गुरु छाया चाहें।
विद्यागुरु को सदा नमामि, आशीर्वाद हमें दो स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

और न कुछ हम पाना चाहें, अक्षय कृपा गुरु की चाहें।
विद्या गुरु को सदा नमामि, आशीर्वाद हमें दो स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम कामना हम ना चाहें, फूलों जैसे गुरु पद चाहें।
विद्यागुरु को सदा नमामि, आशीर्वाद हमें दो स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन स्वाद हमें ना भाएं, बस गुरु भक्ति का रस चाहें।
विद्यागुरु को सदा नमामि, आशीर्वाद हमें दो स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं मोह माया हम चाहें, बस गुरु का निर्देशन चाहें।
विद्यागुरु को सदा नमामि, आशीर्वाद हमें दो स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम इतना सा करना चाहें, गुरु आज्ञा सिर धरना चाहें।
विद्यागुरु को सदा नमामि, आशीर्वाद हमें दो स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु भक्ति का यह फल चाहें, गुरु चरणों में रहना चाहें।
विद्यागुरु को सदा नमामि, आशीर्वाद हमें दो स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धन-संपत्ति हम ना चाहें, जिनगुण संपत्ति बस चाहें।
विद्यागुरु को सदा नमामि, आशीर्वाद हमें दो स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-विद्यागुरु ने जहाँ-जहाँ ज्योति जलाई है...)

विद्यागुरु ने जहाँ-जहाँ ज्योति जलाई है।
भोले-भाले प्राणियों में चेतना सी आई है॥
अखियों को खोल दिया ज्ञान के उजाले से।
भक्तों को जोड़ दिया जग रखवाले से।
तभी तो ये बात मुझे समझ में आई है॥
गुरु के सिवा हर चीज पराई है। विद्यागुरु ने...॥१॥
दुनियाँ के बंधनों की परवाह छोड़ दी।
कष्ट संकटों से भरी भोग राह मोड़ ली॥
क्योंकि इस रास्ते में कभी न भलाई है। विद्यागुरु ने...॥२॥
वैराग्य फूट पडा तन मन चेतना से।
दुनियाँ की माया छोड़ी आत्मा की साधना से॥
दीक्षा ली तो मुक्तिवधू वरमाला लाई है॥ विद्यागुरु ने...॥३॥
आँधी तूफा संकटों के बीच नाव मेरी है।
खुशी-खुशी पार होगी सिर पै छाँव तेरी है॥
इसी से निर्मोही गुरु पै जनता रिझाई है। विद्यागुरु ने...॥४॥
'सुव्रत' ने तो सोच लिया जीवन के अंधयारे में।
जिऊँ मरूँ जो कुछ भी हो गुरुवर के गलियारे में॥
दुनियाँ की ठोकरों से अक्ल मुझे आई है। विद्यागुरु ने...॥५॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥
(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—२७

स्थापना (अडिल्ल)

गुरु बिन भक्त कहाँ जाएं ये जान के।
गुरु से गुरु को मांग रहे गुरु धाम से॥
विद्यागुरु की करें अर्चना ज्ञान से।
गुरु चरणों में करें नमोस्तु ध्यान से॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

जन्म मरण ये दुनियाँ के दुख दान दें।
भव सागर में हमें डुबा कर मार दें॥
जन्म मरण को पार उतरने यान दो।
विद्यागुरु जी हम पर थोड़ा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत चक्र से सुलझें हमको मार्ग दो।
चक्र विजेता हमें बनाओ थाम लो॥
चंदन से हम करें अर्चना छाँव दो।
विद्यागुरु जी हम पर थोड़ा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय सुख की शरणा गुरुवर आप हैं।
दूर आपको हम से करते पाप हैं॥
हमको अपनी चरण शरण का दान दो।
विद्यागुरु जी हम पर थोड़ा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य में लीन हुए गुरुदेव जी।
आत्म ब्रह्म तब हुआ प्रखर स्वयमेव ही॥
पुष्प चढ़ाने वालों को गुरु ब्रह्म दो।
विद्यागुरु जी हम पर थोड़ा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन त्यागी हमको पूजन स्वाद दो।
हम तो करें नमोस्तु आशीर्वाद दो॥
ये नैवेद्य चढ़ाएँ निज रस पान दो।
विद्यागुरु जी हम पर थोड़ा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह और मिथ्यात्व अंधेरा नाश दो।
गुरु अपना सान्निध्य हमें भी दान दो॥
दीप जलाकर मोह नशाने ज्ञान दो।
विद्यागुरु जी हम पर थोड़ा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप दिगम्बर धारी हे निर्ग्रंथ जी।
सुनो प्रार्थना हमें बना दो संत जी॥
पिच्छी कमण्डल लेकर डोलें साथ दो।
विद्यागुरु जी हम पर थोड़ा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल के साथ चढ़ाएँ अपने आपको।
बने आपके अनुचर हर लें पाप को॥
करुणा के भण्डार दया का दान दो।
विद्यागुरु जी हम पर थोड़ा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाने वालों को गुरु थाम लो।
साथ आपके सदा रहें स्थान दो॥
हम तो करें नमोस्तु आशीर्वाद दो।
विद्यागुरु जी हम पर थोड़ा ध्यान दो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-भो आचार्या...)

आचार्य गुरुवर, श्री विद्यासागर।
भक्ति से तुम्हें सादर, नमोस्तु हो झुककर॥
बाल ब्रह्मचारी हो, आत्म विहारी हो।
अनुपम ज्ञानी हो, भेदविज्ञानी हो॥
मोह माया त्यागी हो, महा वैरागी हो। भक्ति से...॥१॥
परम दिगम्बर हो, रहित आडम्बर हो।
धर्म धुरंधर हो, लगे तीर्थंकर हो।
दिव्य शरीरा हो, भव सिन्धु तीरा हो॥ भक्ति से...॥२॥
पाप विनाशी हो, अंतर घट वासी हो।
प्रभावना के गजरथ हो, चलते फिरते तीरथ हो।
रत्नत्रय ध्याता हो, मोक्षमार्ग दाता हो॥ भक्ति से...॥३॥
परमेष्ठी के आलय हो, भक्त जिनालय हो।
ज्ञान हिमालय हो, ध्यान मोक्षालय हो॥
सिद्ध शिवालय हो, चित सिद्धालय हो। भक्ति से...॥४॥
तीर्थोद्धारक हो, दर्द निवारक हो।
कर्म विदारक हो, मुक्तिवधू धारक हो॥
मुनिगण नायक हो, सुव्रत तारक हो। भक्ति से...॥५॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—२८

स्थापना (विष्णु)

गुरु ही हैं विश्वास हमारे, गुरु ही जीवन हैं।
गुरु ही हैं हर श्वास हमारी, गुरु ही धड़कन हैं॥
गुरु शतायु पूर्ण आयु हों, गुरु दीर्घायु हों।
गुरु को लगे हमारी आयु, गुरु चिरायु हों॥

(दोहा)

विद्यागुरु जी स्वस्थ हों, करें हृदय पर राज।
तभी करें गुरु अर्चना, करके नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

(विष्णु)

मिले जन्म को सार्थक करने, नीर चढ़ाते हैं।
विद्या गुरु को करके नमोऽस्तु शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शरण आपकी पाने चन्दन, आज चढ़ाते हैं।
विद्या गुरु को करके नमोऽस्तु शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु आज्ञा को पालन करने, पुंज चढ़ाते हैं।
विद्या गुरु को करके नमोऽस्तु शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य निर्दोष बनाने, पुष्प चढ़ाते हैं।
विद्या गुरु को करके नमोऽस्तु शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

अपना भोग स्वयं करने, नैवेद्य चढ़ाते हैं।
विद्या गुरु को करके नमोऽस्तु शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपना जीवन उज्ज्वल करने, दीप जलाते हैं।
विद्या गुरु को करके नमोऽस्तु शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्छे कर्मों को करने को, धूप चढ़ाते हैं।
विद्या गुरु को करके नमोऽस्तु शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल जैसे हम भी जुड़ने, सुफल चढ़ाते हैं।
विद्या गुरु को करके नमोऽस्तु शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कृपा पात्र गुरु का बनने को, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
विद्या गुरु को करके नमोऽस्तु शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (विष्णु)

सारी दुनियाँ जिनको कहती, विद्यासागर संत हैं।
मेरी श्रद्धा भक्ति कहती, विद्या गुरु भगवंत हैं॥
मैंने ना तीर्थंकर देखे, ना अरिहंत मिले।
वृषभ-वीर आदिक चौबीसों, ना भगवंत मिले॥
भगवंतों अरिहंतों जैसे, विद्यागुरु निर्ग्रंथ हैं। मेरी श्रद्धा....॥१॥
समवसरण ना देखा मैंने, कैसा वो होगा।
गुरु का संघ देखकर लगता, ऐसा ही होगा॥
समवसरण के नायक जैसे, विद्यागुरु अरिहंत हैं। मेरी श्रद्धा....॥२॥
दिव्य देशना सुनी ना मैंने, क्या होती होगी।
सुन के गुरु के प्रवचन लगता, ऐसी ही होगी॥
शब्द-शब्द अक्षर-अक्षर सुन, खिलते आत्म बसंत हैं। मेरी श्रद्धा....॥३॥
ईश-अर्चना हुई न मेरी, गया न चारों धाम।
शास्त्रों का अभ्यास मुझे ना, मिला न आतमराम॥
लेकिन 'सुव्रत' पाके लगता, मिल गए सारे पंथ हैं। मेरी श्रद्धा....॥४॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गई, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥
(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—२९

स्थापना

(स्त्रग्विणी) (लय-सारी दुनियाँ भुला दी...)

श्री विद्या गुरु, अपने प्यारे गुरु-२,
तेरे दर्शन किए तो मजा आ गया।
गुरु चरणों में आ, माथा सादर झुका-२,
तेरी पूजा रचाई, मजा आ गया॥
श्री विद्या गुरु...
सारी दुनियाँ भुला दी तुम्हारे लिए,
गुरु तुम न भुलाना हमारे लिए।
प्राणों से प्यारे हमको गुरु आप हो,
प्राण सब कुछ नहीं है हमारे लिए॥
आप आओ हमारे हृदय में गुरु,
है निवेदन हमारा तुम्हारे लिए।
आप स्वीकार लो प्रार्थना ये गुरु,
तेरा आशीष पाके मजा आ गया॥
श्री विद्या गुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

कितने जीवन जिए, हाय! कुछ ना किए।
हाय! कुछ ना किए, दुख के सागर पिए॥

ले लो अपनी शरण, जीतें जीवन मरण।
कर नमोस्तु तुम्हें, शांतिधारा किए॥ श्री विद्या गुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

देख संसार को, सोचे जाना कहाँ।
इसलिए आपने, ले ली दीक्षा यहाँ॥
बनके वैरागी ध्याओ, सदा आत्मा।
छाँव देना हमें, है यही प्रार्थना॥ श्री विद्या गुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भी चाहे यहाँ, वो तो पाए नहीं।
जो भी पा, यहाँ, वो तो भाए नहीं॥
आपने आप को, आप में वर लिया।
इसलिए आपको पाने सिर धर लिया॥ श्री विद्या गुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम है काम को, काम से आइए।
है नहीं काम का काम तो जाइए॥
देख कर काम पर जय विजय आपकी।
काम की हर कथा रुक गई पाप की॥ श्री विद्या गुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

कोई खाने को जीवन समर्पित करें।
पुण्य पापों से भोगों को अर्जित करें॥
किंतु वो हैं तपस्वी निराले यहाँ।
भोग त्यागें सदा ज्ञान अर्जित करें॥ श्री विद्या गुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाखों मिल के सँभालें, यहाँ एक को।
एक कैसे संभाले, यहाँ अनेक को॥
किंतु तुमने करोड़ों को, तारा गुरो।
सो तभी तो विनय से, पुकारा गुरो॥ श्री विद्या गुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म की आँधियों से, बचा मात्र वो।
जो तुम्हारी नजर का, कृपा पात्र हो॥
दृष्टि पाने तुम्हारी, करें प्रार्थना।
कर्म करने दहन हो, शुरू साधना॥ श्री विद्या गुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ नहीं चाहिए, कुछ ना देना हमें।
मात्र चरणों में, स्थान देना हमें॥
हम तो चरणों में, कर लें गुजारे गुरो।
आप देना हमें बस, सहारे गुरो॥ श्री विद्या गुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आँख ने प्राण से, प्राण ने साँस से।
कुछ तो बोला है, संपूर्ण विश्वास से॥
जिसको सुनकर जमाना, तुम्हारा हुआ।
अर्घ्य अर्पित करें, मन हमारा हुआ। श्री विद्या गुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(जोगीरासा/लय-दिल दीवाना...)

हर मुश्किल का, हल भी होगा, मत डरना।
मानवता से, बस ये कहना, मैं हूँ ना॥
आज नहीं तो, कल हल होगा, खुश रहना। मानवता से...
महा भयंकर संकट आयें, छायें घोर अँधेरे।
फिर भी दिल छोटा ना करना, देख दुखों के डेरे॥
कहीं न कहीं से, किरण दिखेगी, देखो ना। मानवता से...
ऐसी कोई रात हुई ना, जिसका कल न हुआ हो।
ऐसी कोई मुश्किल हुई ना, जिसका हल ना हुआ हो॥
आशा से आसमान टिका है, रोना ना। मानवता से...
कट जाएगी दुख की रातें, नई प्रभातें होंगी।
जल्दी अच्छे दिन आयेंगे, केवल बातें होंगी॥
यही भरोसा 'सुव्रत' रखकर, भागो ना। मानवता से...

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गयी, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—३०

स्थापना (भुजंगप्रयात/भुजंगी)

हमारे तुम्हारे सभी के दुलारे, बड़े लाड़ले हैं हमें प्राण प्यारे।
तुम्हीं पूज्य विद्या गुरुवर सितारे, तुम्हें तो नमोस्तु सदा हैं हमारे॥
हृदय में हमारे गुरु आइएगा, करें अर्चना हम कृपा कीजिएगा।
हमारा हृदय हो तुम्हारे भजन हों, हमारे नमोस्तु तुम्हारे चरण हों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

हमारा तुम्हारा जनम क्यों हुआ है, यही जानने को जनम ये हुआ है।
हमें प्राप्त विद्यागुरु से जनम हों, हमारे नमोस्तु तुम्हारे चरण हों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमें वेदना क्यों यहाँ पर मिली है, हमारी यहाँ चेतना क्यों जली है।
हमें प्राप्त विद्यागुरु के वतन हों, हमारे नमोस्तु तुम्हारे चरण हों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमारा यहाँ क्यों भ्रमण हो रहा है, महा कष्ट दुख से क्षरण हो रहा है।
हमें प्राप्त विद्यागुरु के भवन हों, हमारे नमोस्तु तुम्हारे चरण हों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यहाँ पर सभी काम के हैं सताये, प्रतिष्ठा स्वयं की यहाँ पर लुटाए।
हमें प्राप्त विद्यागुरु से रमण हों, हमारे नमोस्तु तुम्हारे चरण हों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

हमें या तुम्हें पेट की भूख मारे, दुखी पाप के कार्य दे रोज सारे।
हमें प्राप्त विद्यागुरु से रसन हों, हमारे नमोस्तु तुम्हारे चरण हों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं चाहिए हैं हमें वो उजाले, दिखाते दुखों के सदा मार्ग काले।
हमें प्राप्त विद्यागुरु की किरण हों, हमारे नमोस्तु तुम्हारे चरण हों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी और से कर्म जंजाल फै ले, करें चेतना को वही रोज मैले।
हमें प्राप्त विद्यागुरु से दहन हों, हमारे नमोस्तु तुम्हारे चरण हों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसे चाहिए जो वही दान दे दो, हमें आप अपनी चरण धूल दे दो।
हमें प्राप्त विद्यागुरु से रतन हों, हमारे नमोस्तु तुम्हारे चरण हों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हारा हमारा सदा साथ होवे, हमारा झुके शीश गुरु हाथ होवे।
हमें प्राप्त विद्यागुरु की शरण हों, हमारे नमोस्तु तुम्हारे चरण हों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(जोगीरासा/लय-गुरु तुम हो मेरी पतंग...)

गुरु तुम हमारे हो तीर्थ स्थान।
हम छोटे से भक्त तुम्हारे, आप हमारे श्री भगवान॥
गुरुवर तुम हो सूरज चंदा, हम छोटे से तारे।
तुम्हीं हमारे माँ-बापू जी, हम है बालक बारे॥
हमको अपने पास बिठा लो, हम नन्हें नादान। गुरु तुम...
गुरुवर तुम हो आगम गीता, हम छोटे से अक्षर।
ब्रह्मा के ब्रह्माण्ड तुम्हीं हो, हम तो है बस कणभर॥
हमको अपने जैसा कर लो, दो अपनी पहचान। गुरु तुम...

तुम अपनी करुणा बरसा कर, सबको तार रहे हो।
तुम शिल्पी तो हम अनगढ़ के, भाग्य निखार रहे हो॥
'सुव्रत' को भी तुम ही संभालो, कर दो अब कल्याण। गुरु तुम ...

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गयी, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—३१

स्थापना (चौपाई)

(लय-जन्मों जनम तुमको ध्याते...)

जन्मों जनम तुमको ध्याते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते।
तेरी ही पूजा रचाते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥
जो हम होते रंगोली जैसे, तुमको ही सादर बुलाते।
गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

जो हम होते पानी के जैसे, जनमों मरण को नशाते।
गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥
तेरी ही पूजा रचाते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते।
जन्मों जनम तुमको ध्याते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हम होते चन्दन के जैसे, भव-भव के ताप नशाते।
गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥
तेरी ही पूजा रचाते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते।
जन्मों जनम तुमको ध्याते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हम होते पुंजों के जैसे, अक्षय महा पद को पाते।
गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥
तेरी ही पूजा रचाते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते।
जन्मों जनम तुमको ध्याते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जो हम होते पुष्पों के जैसे, कामों की पीडा नशाते।
गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥
तेरी ही पूजा रचाते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते।
जन्मों जनम तुमको ध्याते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

जो हम होते नैवेद्य जैसे, क्षुधा का रोग नशाते।
गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥
तेरी ही पूजा रचाते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते।
जन्मों जनम तुमको ध्याते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हम होते दीपों के जैसे, मोहों का अंध नशाते।
गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥
तेरी ही पूजा रचाते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते।
जन्मों जनम तुमको ध्याते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हम होते धूपों के जैसे, कर्मों का ईंधन जलाते।
गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥
तेरी ही पूजा रचाते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते।
जन्मों जनम तुमको ध्याते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हम होते फल्लों के जैसे, महा मोक्ष फल पाते।
गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥
तेरी ही पूजा रचाते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते।
जन्मों जनम तुमको ध्याते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हम होते अर्घ्यों के जैसे, अनर्घपद को पाते।
गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥
तेरी ही पूजा रचाते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते।
जन्मों जनम तुमको ध्याते, गुरु तेरे चरणों में हम चढ़ जाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (शंभु)

निज नयन बिछाए बैठे हैं, कब हृदय हमारे आओगे।
श्रद्धालु भाव विभोर हुए, कब चेतन को चमकाओगे॥
ये रिश्ते नाते स्वार्थों के, मौसम सम रंग बदलते हैं।
हम विरह वेदना से तप कर, हिम गिरि सम रोज पिघलते हैं॥
अब आश लगाए बैठे हैं, कब चंदन सा महकाओगे। निज नयन...॥
हम तुमसे मिलने तड़प रहे, कब हमको राह दिखाओगे।
हम भटक रहे भव जंगल में, कब हमको पास बुलाओगे॥
कब तुमसे मिलने की तुम ही, इक सुंदर जुगत लगाओगे। निज नयन...॥
जब भक्ति मिलन में भक्तों के, कुछ नाम पुकारे जाएंगे।
जब गुरु-कृपा से भक्तों के, शुभ भाग्य सँवारे जाएंगे॥
तब इतना है विश्वास हमें, तुम हमको नहीं भुलाओगे। निज नयन...॥
निज चरण-शरण में लेकर के, दुख दर्द हमारे दूर करो।
दे दर्श औषधि स्वस्थ करो, दे वचन-सुधा शृंगार करो॥
दे 'सुव्रत' को विद्या वैभव, झट अपने धाम बुलाओगे। निज नयन...॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गयी, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—३२

स्थापना (लय-इक रात दुखी मैं होके...)

आस्था के ईश्वर गुरुवर, श्रद्धा के श्रीजी गुरुवर।
पूजा के प्रभु जी गुरुवर, अपने तो सब कुछ गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

मेघों कि बरसा गुरुवर, बूंदों की रिमझिम गुरुवर।
झरनों की झरझर गुरुवर, नदियों की कलकल गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पानी से शीतल गुरुवर, हिमगिरि से शीतल गुरुवर।
छाया से शीतल गुरुवर, चंदन से शीतल गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सोने की सरगम गुरुवर, चाँदी की चमचम गुरुवर।
रत्नो से मंगल गुरुवर, अक्षत से उज्ज्वल गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से महके गुरुवर, कलियों से चहके गुरुवर।
पेड़ों की छाया गुरुवर, बागों की शोभा गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

भूखों के भोजन गुरुवर, प्यासों के पानी गुरुवर।
रोगी के औषध गुरुवर, योगी के अवसर गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरज की रोशनी गुरुवर, चंदा की चाँदनी गुरुवर।
तारों की झिलमिल गुरुवर, दीपों की जगमग गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन माँ के बेटा गुरुवर, है कर्म विजेता गुरुवर।
त्रय जग के नेता गुरुवर, मुक्ति मंगेता गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्पित की आशा गुरुवर, आगम की भाषा गुरुवर।
सुख की परिभाषा गुरुवर, आतम अभिलाषा गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थों की यात्रा गुरुवर,मंदिर की मूरत गुरुवर।
मंत्रों से पावन गुरुवर, मुक्ति के साधन गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सागर से गहरे गुरुवर, अम्बर से ऊँचे गुरुवर।
धरती से गहरे गुरुवर, अपने तो सब कुछ गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥
ज्ञानी के ज्ञानी गुरुवर, ध्यानी के ध्यानी गुरुवर।
स्वामी के स्वामी गुरुवर, अपने तो सब कुछ गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥
शबरी के रामा गुरुवर, मीरा के श्यामा गुरुवर।
चंदन के वीरा गुरुवर, अपने तो सब कुछ गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥
हनुमान के रामा गुरुवर, श्री कृष्ण सुदामा गुरुवर।
गौतम के वीरा गुरुवर, अपने तो सब कुछ गुरुवर॥
कि गुरुवर तो धरम की धड़कन हैं।
कि गुरुवर तो भगत के भगवन हैं॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गयी, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—३३

स्थापना

(लय-आओ जी! आओ जी!...)

आओ जी! आओ जी! गुरुदेव मेरे आँगना।-२
आ रा रा आ रा रा! आओ जी! मेरे आँगना॥ हो..
गुरुजी मेरे आँगना-आँगना रे।
आओ जी! आओ जी! गुरुदेव...
मैं तो आँगन सजाऊँ, प्यारे चौक पुराऊँ।
तोरण द्वार लगाऊँ, मंगल कलशा सजाऊँ॥
अरे! रोज-रोज रोज-रोज तुझको बुलाऊँ।
तुमको शीश झुकाऊँ, तेरी पूजा रचाऊँ॥
आओ जी! आओ जी! गुरुदेव...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

यह न्यौता स्वीकार, मेरा करना उद्धार।
मेरा पावन हो द्वार, मुझे देना त्यौहार॥
अरे! रोज-रोज रोज-रोज आशा लगाऊँ।
तेरी भक्ति रचाऊँ, तेरे चरणा धुलाऊँ॥
आओ जी! आओ जी! गुरुदेव...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं तो तपती सी धूप, तुम हो चन्दन के रूप।
तेरी पाऊँ मैं छाँव, ऐसा मेरा है भाव॥
अरे! रोज-रोज रोज-रोज तुमको बुलाऊँ।
तेरी श्रद्धा जगाऊँ, तेरी शरणा मैं पाऊँ॥
आओ जी! आओ जी! गुरुदेव...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं तो हनुमन तुम राम, मैं सुदामा तुम श्याम।
तुम तो मेरे भगवान, तेरी ऊँची है शान॥

अरे! रोज-रोज रोज-रोज तुमको बुलाऊँ।
तेरी पद रज मैं पाऊँ, तेरे जैसा बन जाऊँ॥
आओ जी! आओ जी! गुरुदेव...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मैं तो काया तुम प्राण, मैं तो धड़कन तुम जान।
तुम तो चेतन भगवान, तुम तो ब्रह्मा विज्ञान॥
अरे! रोज-रोज रोज-रोज तुमको बुलाऊँ।
तेरे सु-व्रत मैं पाऊँ, मैं भी संयम सजाऊँ॥
आओ जी! आओ जी! गुरुदेव...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

मैं तो चौका लगाऊँ, प्यारा भोजन बनाऊँ।
गुरु का आहार कराऊँ, अपना करतब निभाऊँ॥
अरे! रोज-रोज रोज-रोज तुमको बुलाऊँ।
तेरे चरणा धुलाऊँ, तेरी महिमा मैं गाऊँ॥
आओ जी! आओ जी! गुरुदेव...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं तो दीया तुम ज्योति, मैं तो माटी तुम मोती।
तुम तो आतम प्रकाश, तेरा ऊँचा निवास॥
अरे! रोज-रोज रोज-रोज तुमको बुलाऊँ।
तेरी ज्योति जलाऊँ, तेरी आरतिया गाऊँ॥
आओ जी! आओ जी! गुरुदेव...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम तो मेरे जिनेन्द्र, मैं तो पूजा का इन्द्र।
मैं तो कर लूँ हवन, कर्म कर दो दहन॥
अरे! रोज-रोज रोज-रोज तुमको बुलाऊँ।
तेरी गाथा मैं गाऊँ, तेरी चर्चा सुनाऊँ॥
आओ जी! आओ जी! गुरुदेव...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम तो देते वरदान, करते सबका कल्याण।
मैं भी कर लूँ आह्वान, थोड़ा मुझ पर दो ध्यान॥
अरे! रोज-रोज रोज-रोज तुमको बुलाऊँ।
मैं भी अर्जी लगाऊँ, तेरे चरणा मैं पाऊँ॥
आओ जी! आओ जी! गुरुदेव...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरी छोटी सी आश, लाया मैं तेरे पास।
कर लो गुरुवर स्वीकार, देना मुझे लाड़ प्यार॥
अरे! रोज-रोज रोज-रोज तुमको बुलाऊँ।
मैं भी शीश झुकाऊँ, गुरु आशीष पाऊँ॥
आओ जी! आओ जी! गुरुदेव...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-लिखे जो खत...)

मिले जो पद हमें, वो गुरु ज्ञान से,
हमारे ज्ञान के खजाने बन गए।
सबेरा ज्यों हुआ, तो राह बन गए,
ज्यों रात आई तो ठिकाने बन गए॥ मिले जो...॥१॥
हमारे कर्म ही सच में, हमें तुमसे ना मिलने दें।
बँधे हैं जोर से हमसे, हमें थोड़ा न हिलने दें॥
हमारा बाग चेतन का, जरा सा भी न खिलने दें। मिले जो...॥२॥
कभी सूरज कभी चंदा, कभी तारें गगन बन के।
अकेले हम नहीं रहते, हवा पानी चमन बनके॥
हमारे साथ गुरु विद्या, सदा रहते दुआ बनके। मिले जो...॥३॥
लगे हम जब फिसलने तो, गुरुवर ज्ञान देते हैं।
लगें 'सुव्रत' मचलने तो, गुरुवर ध्यान देते हैं॥
गुरु का नाम लेते ही, गुरुवर थाम लेते हैं। मिले जो...॥४॥
मिले जो पद हमें, वो गुरु ज्ञान से,
हमारे ज्ञान के खजाने बन गए।

सबेरा ज्यों हुआ, तो राह बन गए,
ज्यों रात आई तो ठिकाने बन गए॥ मिले जो...॥५॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गयी, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—३४

स्थापना

(हरिगीतिका) (लय-संसार की असारता...)

गुरु आन हैं गुरु बान हैं, मेरी जिंदगी की शान हैं।
गुरु ज्ञान हैं गुरु ध्यान हैं, गुरु ही मेरे भगवान हैं॥
सो अर्चना गुरु की रचाने, आज गुरु आह्वान हैं।
गुरुवर मेरे भगवान हैं, स्वामी मेरे भगवान हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

हर धड़कनों में गुरु वसे, चैतन्यता के वास में।
गुरु ही हृदय में श्वास में, गुरु ही मेरे विश्वास में॥
विज्ञान हैं संधान हैं, गुरु सर्व शक्तिमान हैं।
गुरुवर मेरे भगवान हैं, स्वामी मेरे भगवान हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं गुरु कहाँ और मैं कहा, आना मुझे गुरु के यहाँ।
गुरु के बिना कुछ भी नहीं, गुरु के बिना जाना कहाँ॥

गुरु दान हैं श्रद्धान हैं, गुरु ही मेरे श्रीमान हैं।
गुरुवर मेरे भगवान हैं, स्वामी मेरे भगवान हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु गीत हैं गुरु प्रीत हैं, गुरु ही मधुर संगीत हैं।
गुरु के बिना पाऊँ किसे, गुरु ही मेरे मनमीत हैं॥
गुरु गान हैं सुरतान हैं, गुरु ही मेरे अरमान हैं।
गुरुवर मेरे भगवान हैं, स्वामी मेरे भगवान हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु तंत्र हैं गुरु मंत्र हैं, गुरु ही परम निर्ग्रंथ हैं।
गुरु सुख प्रदाता यंत्र हैं, गुरु ही तो सम्यक् पंथ हैं॥
गुरु ज्ञान हैं अभियान हैं, गुरु ही तो संविधान हैं।
गुरुवर मेरे भगवान हैं, स्वामी मेरे भगवान हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु आत्मा शुद्धात्मा, गुरु ही मेरे परमात्मा।
गुरु के बिना ध्याना किसे, गुरु सिद्ध हैं सिद्धात्मा॥
गुरु प्राण हैं कल्याण हैं, गुरु ही मेरे निर्वाण हैं।
गुरुवर मेरे भगवान हैं, स्वामी मेरे भगवान हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु वंदना गुरु अर्चना, गुरु ही हैं मेरी प्रार्थना।
गुरु ही प्रथम आराध्य हैं, गुरु ही हैं मेरी साधना॥
गुरु मान हैं सम्मान हैं, गुरु मेरे स्वाभिमान हैं।
गुरुवर मेरे भगवान हैं, स्वामी मेरे भगवान हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु भक्ति हैं गुरु शक्ति हैं, गुरु ही तो मेरी भुक्ति हैं।
इस देह में सुव्रत विदेही, गुरु ही तो मेरी मुक्ति हैं॥
ईमान हैं वरदान हैं, गुरु ही मेरी पहचान हैं।
गुरुवर मेरे भगवान हैं, स्वामी मेरे भगवान हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु पर्व हैं गुरु सर्व हैं, गुरु आज के सर्वेश हैं।
गुरु विज्ञ हैं सर्वज्ञ हैं, गुरु आज के परमेश हैं॥
दें दान दीक्षा पूर्ण इच्छा, गुरु दया के निधान हैं।
गुरुवर मेरे भगवान हैं, स्वामी मेरे भगवान हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु उच्च हैं सर्वोच्च हैं, क्या भेंट कर दूँ अब उन्हें।
गुरु को बनाने स्वस्थ अपनी उम्र लग जाए उन्हें॥
गुरु से गुरु को पूज लूँ मैं, बस यही अरमान हैं।
गुरुवर मेरे भगवान हैं, स्वामी मेरे भगवान हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-ये जीवन मिला हमें बडा...)

विद्या गुरु जग में तीरथ महान।
गुरुवर की छाया है भगवन समान॥
तीर्थंकर जैसा है इनका स्वरूप।
कहलाते हैं तीनों जग के ये भूप॥
वाणी में करुणा जल चर्या में ज्ञान। विद्या गुरु...॥
रहते निरम्बर फकीरों के ताज।
मुस्का के करते हैं हर दिल में राजा॥
आतम के रसिया के उपकारी काम। विद्या गुरु...॥
जितने सफल सिद्ध बनते महान।
उन सब ने पाया है गुरुवर से ज्ञान॥
गुरु बिन हमारा फिर कैसे कल्याण। विद्या गुरु...॥
भक्तों को मुँह मांगा देते वरदान।
गुरु की कृपा पाके बनते सब काम॥
शब्दों से कैसे हों गुरु महिमा गान। विद्या गुरु...॥
हम सब को न दौलत-यश की तलाश।
नहीं चाहिए गाड़ी बंगला बिंदास॥
आँखों में मूरत हो होठों पै नाम। विद्या गुरु...॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गयी, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—३५

स्थापना

(जोगीरासा) (लय-चल मन कुंडलपुर को...)

चल रे! गुरु दर्शन को, चल रे! गुरु दर्शन को।
विद्यागुरु की पूजन करके, पावन कर तन मन को॥
चल रे! गुरु दर्शन को...
वर्तमान के वर्धमान से, विद्या गुरुवर प्यारे।
सो अपना कर्त्तव्य निभाने, गुरु को शीश झुका रे॥
चल रे! गुरु दर्शन को...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

गुरु ने हमको मार्ग दिखाया, जीवन सफल बनाने।
हम भी गुरु त्यौहार मनाएं, गुरु के चरण धुलाने॥
चल रे! गुरु दर्शन को...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जो सपना देखा था, वो साकार हुआ रे!
गुरु छाया में गुरु पूजा कर, गुरु आशीष मिला रे॥
चल रे! गुरु दर्शन को...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जो चाहा वो पाया, गुरु की छाँव तले रे।
करते हैं सब अपने गुरुवर, अपना नाम चले रे॥
चल रे! गुरु दर्शन को...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

माँ बहना बेटी के जैसे, लाड़ प्यार सब पाते।
सब थकान सी मिट जाती जब, गुरुवर जी मुस्काते॥
चल रे! गुरु दर्शन को...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

सब पकवान लगें फीके से, गुरु के रस के आगे।
सो गुरुवर के रस चखने को, गुरु के पीछे भागे॥
चल रे! गुरु दर्शन को...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर ने जो दिये उजाले, वे सब पाप नशाएँ।
आतम परमातम की झलकें, यूँ ही तो झलकाएँ॥
चल रे! गुरु दर्शन को...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने भगवन को ना देखा, बस गुरुवर को देखा।
सो चरणों की तीर्थ वंदना, करने को सिर टेका॥
चल रे! गुरु दर्शन को...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सिर पर हाथ रखें जब गुरु तो, सब सहयोगी होते।
रोग शोक दुख कष्ट दूर हों, कोई कभी न रोते॥
चल रे! गुरु दर्शन को...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु से बढ़कर नाम गुरु का, गुरु मंत्र हैं साँचा।
'सुव्रत' की तो धड़कन गुरुवर, रोम-रोम है नाँचा
चल रे! गुरु दर्शन को...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-मधुवन के मंदिरों में...)

गुरुवर से जबसे मेरी, खूब यारी हो गई है।
ये बात सबसे प्यारी, सब पे भारी हो गई है॥ गुरुवर...
मुझे कौन जानता था, औकात क्या थी मेरी।
पाकर कृपा गुरु की, तकदीर बदली मेरी॥
सो जिंदगी गुरु की, आभारी हो गई है।
ये बात सबसे प्यारी, सब पे भारी हो गई है॥ गुरुवर...
गुरु की कृपा ही मेरे, जीवन का है सहारा।
जो कुछ है आज मेरा, गुरु ने दिया सवारा॥
खुशहाल जिंदगी अब, बड़ी प्यारी हो गयी है।
ये बात सबसे प्यारी, सब पे भारी हो गयी है॥ गुरुवर...
'सुव्रत' की प्रार्थना ये, मुझको नहीं भुलाना।
चरणों में हूँ समर्पित, मेरी भूल भूल जाना॥
सो चेतना ऋणी है, ये तेरी हो गयी है।
ये बात सबसे प्यारी, सब पै भारी हो गयी॥ गुरुवर...

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गयी, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु पूजन—३६

स्थापना (लय-आनंद अपार है, भक्ति बेशुमार...)

श्रद्धा के श्रद्धान हैं, हम भक्तों के प्राण हैं।
हम तो सादर करें नमोस्तु, विद्यागुरु भगवान हैं॥
भक्ति समर्पण हम ना जानें, पूजन विधि भी ना जानें।
फिर भी गुरुवर तुम्हें पुकारें, आओगे ऐसा मानें॥ श्रद्धा...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

कितने जन्म लिए हैं लेकिन, जन्म नहीं यह धन्य हुआ।
जिसके सिर पर हाथ गुरु का, जन्म उसी का धन्य हुआ॥ श्रद्धा ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन से ज्यादा शीतल, विद्यागुरु की है छाया।
जिसने गुरु की छाया पाई, उसने तो सब कुछ पाया॥ श्रद्धा...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण ना देखे हमने, ना ही तो भगवान मिले।
गुरु-दर्शन को पाके लगता, चौबीसों जिनराज मिले॥ श्रद्धा ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको देख फूल वा कलियाँ, झुककर मुझा सी जाएँ।
गुरुवर की मुस्कान देखकर, तीरथ यात्रा हो जाएँ॥ श्रद्धा...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या के जो भोज मसाले, श्रद्धालु चखने वाले।
परम विजेता बनकर वो ही, चिदानंद चखने वाले॥ श्रद्धा...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारी दुनियाँ बस भटकाए, आँखें फोड़े धूल भरे।
विद्या गुरुवर मार्ग दिखाएँ, हमें सफलता योग्य करें॥ श्रद्धा...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने जो जाल बिछाए, उसमें सभी उलझते हैं।
विद्यागुरु के होम हवन से, उससे भव्य सुलझते हैं॥ श्रद्धा...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ से जो आश लगाए, दुनियाँ उसको दुखी करे।
दुनियाँ को जिसने ठुकराया, अपनी आतम सुखी करे॥ श्रद्धा...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गजल सुना जो कमल बिछाके, निर्मल तरल सरल करते।
वही शकल गुरु की हो जाते, गुरु पर श्रद्धा जो रखते॥ श्रद्धा...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (सखी)

हे! शरद पूनम के चन्दा, श्रीमती मल्लप्पा नंदा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फंदा॥
हैं कमलों जैसे नयना, नासा फूलों की बहना।
गुरु मुखडा चाँद का टुकडा, हीरे से गाल हैं गहना॥
हैं हाथ पैर कलियों से, गुरु मस्तक दे आनंदा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फंदा॥ हे! शरद...॥१॥
है गला शंख के जैसा, कटिभाग अचल मेरू सा।
गुरु वक्ष हिमालय जैसा, तन कामदेव के जैसा॥
हैं सबसे सुंदर अपने, विद्यागुरु रूप जिनंदा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फंदा॥ हे! शरद...॥२॥
परमेष्ठी रूप दिगम्बर, हाथों में पिछी कमण्डल।
कब गुरु के चरणा छू लें, करते जो सबका मंगल॥
जो कल्पवृक्ष हम सब के, वो विद्या गुरु मुनिंदा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फंदा॥ हे! शरद...॥३॥
विद्यागुरु संत मुनीश्वर, निस्पृह निश्शल्य दिगम्बर।
गुरु त्याग तपस्या करके, निर्मोही बने निरम्बर॥
हे! 'सुव्रत' के उपकारी, दो निज सम परमानंदा।
हम तुमको करें नमोऽस्तु, मेटो भव-भव के फंदा॥ हे! शरद...॥४॥

(दोहा)

गुरु पूजा से हो गयी, अपनी यह तासीर।
देखें जिसको जब जहाँ, दिखती गुरु तस्वीर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्रीविद्यागुरु बुंदेली पूजा—३७

स्थापना (ज्ञानोदय)

मोरे गुरुवर विद्यासागर, सब जन पूजत हैं तुमखों।
हम सोई पूजन खों आये, तारो गुरु झट्टईं हमखों॥
मोरे हिरदे आन विराजो, हाथ जोड कैं टेरत हैं।
और बाठ जइ हेर रये हम, हँस कैं गुरु कब हेरत हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

बाप मतारी दोइ जनौं नैं, बेर-बेर जनमों मोखों।
बालापन गव आइ जुवानी, आव बुढापो फिर मोखों॥
नर्रा-नर्रा कैं हम मर गये, बात सुनैं नैं कोऊँ हमाई।
जीवौ मरबौ और बुढ़ापौ, मिटा देव मोरो दुखदाई॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मोरे भीतर आगी बर्रई, हम दिन रात बरत ओं में।
दुनियाँदारी की लपटों में, जूड़ापन नैं पाऔ मैं॥
मोय कबऊँ अपनौं नैं मारौ, कबऊँ पराये करत दुखी।
ऐंसी जा भव आग बुझा दो, देऔ सबूरी करौ सुखी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कबऊँ बना दऔ मोखों बड्डौ, आगैं-आगैं कर मारौ।
कबऊँ बना कैं मोखों नन्नौ, भौतइ मोय दबा डारौ॥
अब तौ मोरौ जी उक्ता गओ, चमक-धमक की दुनियाँ में।
अपने घाँई मोय बना लो, काय फिरा रये दुनियाँ में॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव तौ तुमसैं हारो, मोय कुलच्छी पिटवाबै।
सारौ जग तौ मोरे वश में, पर जौ मोखों हरवाबै॥
हाथ जोड़ कैं पाँव परै हम, गैल बता दो लड़बे की।
ये खौं जीतैं मार भगावैं, बह्मचर्य व्रत धरबे की॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

हम तौ भूखे नैं रै पावैं, लडुआ पेड़ा सब चाने।
लुचईं ठडूला खींच औंरिया, तातौ वासौ सब खाने॥
इनसैं अब तौ भौत दुखी भये, देव मुक्ति इनसैं मोखों।
मोय पिला दो आतम-इमरत, नैवज से पूजत तोखों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ कौ जो अँधयारौ तौ, मिटा लेत है हर कोऊ।
मोह रओ कजरारौ कारौ, मिटा सके नैं हर कोऊ॥
ज्ञान-जोत सैं ये करिया को, तुमने करिया मौं कर दव।
ऊँसईं जोत जगा दो मोरी, दीया जौ सुपरत कर दव॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खूबइ होरी हमने बारी, मोरी काया राख करी।
पथरा सी छाती बारे जै, करम बरैं नैं राख भयी॥
तुम तौ खूबइ करौ तपस्या, ओइ ताप सैं करम बरैं।
मोय सिखा दो ऐंसे लच्छन, तुम सौ हम भी ध्यान धरैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम तौ कौनऊँ फल नइँ खाउत, पीउत कौनऊँ रस नँइयाँ।
फिर भी देखौ कैसे चमकत, तुम जैसो कोनऊँ नँइयाँ॥
हम फल खाकैं ऊबै नइयाँ, फिर भी चाने शिवफल खौं।
ओई सैं तौ चढ़ा रये हम, तुम चरणों में इन फल खौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँसईं-ऊँसईं अरघ चढ़ा कैं, मोरे दोनऊँ हाथ छिले।
ऊँसईं-ऊँसईं तीरथ करकैं, मोरे दोनऊँ पाँव छिले॥
नैं तो अनरघ हम बन पाये, नैं तीरथ सौ रूप बनौ।
येई सैं तौ तुमें पुकारें, दै दो आतम रूप घनौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

विद्यागुरु सौ कोऊ नैं, जग में दूजौ नाँव।
सबइ जने पूजत जिनैं, और परत हैं पाँव॥
दर्शन पूजन दूर है, इनकौ नाँव महान।
बड़भागी पूजा करैं, और बनावैं काम॥

(ज्ञानोदय)

मल्लप्पा जू के तुम मौड़ा, श्रीमति मैया के लल्ला।
गाँव आपनौ तज कैं देखौ,करौ धरम को तुम हल्ला॥
दया धरम कौ डण्डा लै कैं, फै रा रय तुम तौ झण्डा।
ऐसै तुम हौ ज्ञानी ध्यानी, फोरत पापों कौ भण्डा॥१॥
एकईं बिरियाँ ठाडै हो कैं, खात लेत नैं हरयाई।
नौन मसालौ माल मलीदा, कबउँ खाव नैं गुरयाई॥
जड़कारै में कबऊँ नैं ओढ़ौ, तुम चारौ प्यॉर चिटाई।
जेठमास में गर्मी सैनें, पिऔ कबऊँ नैं ठण्डाई॥२॥
तुम बैरागी हौं निरमोही, सच्ची मुच्ची में भज्जा।
बन कैं जिनवाणी के लल्ला, पूजौ जिनवाणी मज्जा॥
सब जग के तुम गुरुवर बन गये, ये में का कैसो अचरज।
गुरु के संगे मात-पिता के, गुरु बन गय जो है अचरज॥३॥
मोय तुमारी चर्या भा गई, तबइ करत अर्चा तोरी।
तीनईं बिरियाँ माला फे रत, रोज करत चर्चा तोरी॥
अर जौ मोरौ पगला मनवा, तुम खौं तज कैं नै जावै।
कहूँ रमैं नैं जो बंदरा सौ, उचक-उचक कैं इत आवै॥ ४॥
कबउँ-कबउँ जो मोरइ बन कैं, खूबइ खूब नचत भैया।
सो सब हम खों कहें दिवानौ, और कैत का-का दैया॥
भौत बडे आसामी तुम तौ, तुम व्यापार करौ नगदी।
सौदा कौ नैं काम करौ तुम, नैं दुकान नैं है गद्दी॥५॥
जग जाहिर मुस्कान तुमारी, तुम सी कला कहूँ नईयाँ।
नैं कोऊ खों हामी भरते, नाहीं कँबऊँ करत नईयाँ॥
मूड़ उठा कैं हेरत नईयाँ, और कैत देखौ- देखौ।
चिटिया जीव-जन्तु दिख जावै, पै भक्तों खों नैं देखौ॥६॥
महावीर कौ समोसरण तौ, राजगिरी पै खूब लगौ।
ऊँसइ बुन्देली में शौभै, संघ तुमारौ खूब बड़ौ॥
करी बड़ेबाबा की सेवा, सो बन गये छोटेबाबा।
काम करौ तुम बड़े - बड़े पै, काय कैत छोटे बाबा॥७॥

कबउँ-कबउँ तौ तुम बोलत हौ, आगम कौ तब ध्यान रखौ।
समयसार खों खूबइ घोकौ, आतम रस खौं खूब चखौ॥
नौने-नौने ग्रन्थ रचा दये, भौत बनादय तीरथ हैं।
दुखियों की करुणा खों सुनकैं हाथ दया कौ फे रतहैं॥८॥
ये की का का कथा कहें हम, कबउँ होय जा नैं पूरी।
भक्तों खों भगवान बना कैं, हरलई उनकी मजबूरी॥
इत्तौ सब उपकार करत हौ, फिर भी कछू कैत नईंयाँ।
येई सें तौ जग जौ कैरव, तुम सौ कौनऊं है नईंयाँ॥९॥
अब किरपा ऐसी कर दइयो, पाँव-छाँव में मोय रखौ।
अपने घाँईं मोय बना लो, अपने से नैं दूर करौ॥
'सुव्रत' की जा अरज सुनीजै,और तनक सौ मुस्कादो।
भवसागर सैं मोरी नैया, झट्टईं-झट्टईं तिरवा दो॥१०॥

(दोहा)

गुण गावैं पूजा करैं, करैं भगति दिन रैन।
बस इत्तइ किरपा करौ, मोय देव सुख चैन॥
तुम तौ बड़े उदार हो, और गुणी धनवान।
पूजा जयमाला करी, मैं मौड़ा नादान॥ विद्यागुरु
खों कैत सब, बुन्देली के नाथ।
सो बुन्देली गीत गा, तुमें झुकारय माथ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥
(शान्तये शान्तिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥
(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—३८

स्थापना

अरे श्रद्धा कौ चौक पुरा लइओ, और मन खों मंदिर बना लइओ।
और गुरु की पूजा कर तो लो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)

अरे ढारौ ले कलशा पानी के, और पाँव पखारो स्वामी के।
और अपने कर्मों खों धोलो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अरे! लै लो रे कलशा चंदन के, और ताप हरौ भव बंधन के।
और निज में शीतलता घोलो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अरे! लै लो रे पुंज चढ़ावे खों, और अक्षत आतम पावे खों।
और इतैं-उतैं अब नै डोलो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अरे! लै लो रे पुष्प चढ़ावे खों, और मुक्ति से व्याव रचावे खों।
और मुक्ति को घूँघट खोलो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

अरे! का खानें लड्डूआ लाई के, और मीठे दूध मलाई के।
और आतम कौ रस चख तौ लो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरे! लै लो रे दीया उजारे खों, और मोह कौ अंध भगावे खों।
और अंतर के नैना खोलो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अरे! लै लो रे धूप जलावे खों, और कर्मों कौ धुआँ उडावे खों।
और ध्यान की धूनि लगा तो लो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अरे! लै लो रे नरियल चढ़ावे खों, और मोक्षफलों को उगावे खों।
और भक्ति के बीजा बो तो लो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अरे! लै लो रे अर्घ्य चढ़ावे खों, और जीवन खों धन्य बनावे खों।
और नौने से पाँव पकर तो लो, और विद्या गुरु की जय बोलो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

ओ की नैया पार भई -२, जे जे पै गुरुवर
ने नजर डार दई॥
गुरुवर हैं ऐसे जैसे कि भगवान,
इनकी भक्ति कर लो हो जै है कल्याण।
ओ की जय-जयकार भई-२, जे जे पै....॥१॥
गुरुवर की वाणी में झड़ते हैं फू ल,
तनक सुनकै देखो उड़े कर्मों की धूल।
ओ की चमत्कार भई-२, जे जे पै...॥२॥
मुक्तिवधू ब्यावे लै जा रए बारात,
मोक्ष महल तक मोय लै जइयो साथ।
ओ नें मुक्ति वार लई-२, जे जे पै...॥३॥
मौं माँगो देते है गुरुवर वरदान,
मौ पै भी तन्नक दे रइयौ रे ध्यान।
ओली पसार दई-२ जे जे पै...॥४॥
हिरदय के आँगन में चौका पुराओ,
करके नमोऽस्तु 'सुव्रत' नैं बुलाओ।
जिन्दगी सँवार दई-२, जे जे पै...॥५॥

(दोहा)

विद्यागुरु खों कैत सब, बुन्देली के नाथ।
सो बुन्देली गीत गा, तुमें झुका रय माथ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजा–३९

स्थापना (जोगीरासा)

कितै भगत हम नन्हें-मुन्ने, कितै तनक सी अर्जी।
कितै तुमारे ठाट बाट हैं, कितै तुमारी मर्जी॥
फिर भी तुमसें आश लगाकें, हमनें तुमें पुकारौ।
सो विद्यागुरु करौ कृपा अब, हमखों तनक निहारौ॥

(दोहा)

हात जोड़ सिर मोड़ कें, करें नमोस्तु आज।
हृदय विराजौ शान सें, विद्यागुरु महाराज॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

जबसें जनम धरौ है हमनें, जबसें होश समारौ।
बस केवल इत्तइ समझे कै,सबनें हमखों मारौ॥
ये दुनियाँ की मारधाड़ सें, हमें बचा लो ज्ञानी।
हे! विद्यागुरु हमतौ तुमखों, करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जीते जी तौ तपा-तपा कें, दुनियाँ सबखों मारै।
और अंत में बार-बूर कें, हमें राख कर डारै॥
ये दुनियाँ के ऊल चूल सें, हमें बचा लो ज्ञानी।
हे! विद्यागुरु हमतौ तुमखों, करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जितै आसरौ मांगौ हमनें, आशा जितै लगाई।
ओ ने बस संसार घुमाऔ, दुख की गैल बताई॥
ये दुनियाँ के घरघूला सें, हमें बचा लो ज्ञानी।
हे! विद्यागुरु हमतौ तुमखों, करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ दिखै फूल के घाईं, सो हमनें छू डारौ।
छू कें पछताए जब ये नें, क्षार-क्षार कर मारौ॥

ये दुनियाँ की क्षार-क्षार सें, हमें बचा लो ज्ञानी।
हे! विद्यागुरु हमतौ तुमखों, करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

खाबे-पीबे की आशा सें, बिलरय पापड़ जैसे।
लपटा जैसे खतक रये हैं, सिकें ठडूला जैसे॥
बुंदी-सेव से हमें नें करियौ, कर दो लड्डुआ ज्ञानी।
हे! विद्यागुरु हमतौ तुमखों, करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन सें करिया मन सें करिया, कर दऔ करिया-करिया।
दुनियाँ के गोरखधंधों सें, हो गऔ चेतन करिया॥
करिया-करिया ये दुनियाँ में, दिया जला दो ज्ञानी।
हे! विद्यागुरु हमतौ तुमखों, करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की जा बांध गठरिया, ढो रए पाप पुटरिया।
सो नरकों में गिर-गिर पर रए, चढ़ नें पाए अटरिया॥
कर्मों कीं सब कटें गठानें, धूप चढ़ा कें ज्ञानी।
हे! विद्यागुरु हमतौ तुमखों, करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जे नें जैसी गैल धरा दई, जैसी दै दई शिक्षा।
ऊँसइ अब लों हमनें पाऔ, धरी नें सांची दीक्षा॥
अब तौ मोखों तनक निहारौ, देऔ मोक्षफल दानी।
हे! विद्यागुरु हमतौ तुमखों, करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जे खों जो चानै सो गुरुजी, ओखों वौ तुम दै दो।
हमें कछू नें चानें हमखों, अपनी शरणा लै लो॥
मुस्का कें अब हाथ उठा दो, करौ अर्घ्य सौ दामी।
हे! विद्यागुरु हमतौ तुमखों, करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-मैं तो जब से गिरौ...)

मैं तो जब से गिरौ गुरु के, पइयों में -२।
मोरी चल रई... चुवन्नी रूपइयों में॥
मोय तनक दुखिया सौ गुरुवर जब जाने।
बब्बा ने खोले मोय अपने खजाने॥
मोय जल्दी से रखलऔं अपनी छइयों में।
मोरी चल रई... चुवन्नी रूपइयों में॥१॥
स्वारथ की दुनियाँ नें मोय जब छकाऔ।
लुटौ पिटौ मैं तौ तब गुरुवर कें आऔ॥
मोय जल्दी मिला लऔ अपने भइयों में।
मोरी चल रई... चुवन्नी रूपइयों में॥२॥
मोय कछु गुरुवर दइयौ चाह नें दइयौ।
बस मौ पे अपनी कृपा राखें रइयौ॥
धरियौ तनक पांव मोरी थरइयों में।
मोरी चल रई... चुवन्नी रूपइयों में॥३॥
नीले गगन में जित्ते नइयां तारे।
उत्ते भगत 'सुव्रत' जैंसे तौ तारे॥
मोय भी बिठइयौ अपनी नइयों में।
मोरी चल रई... चुवन्नी रूपइयों में॥४॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—४०

स्थापना (दोहा)

हम सबकौ सौभाग्य है, बुंदेली कौ राज।
सो विद्यागुरु राखियौ, हम भक्तों की लाज॥
भाग्य भाग्य की बात है, पुन्न पाप कौ फेर।
हम नमोस्तु करकें करें, गुरु चरणों की सैर॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

(लय-ओ की नैया पार भई...)

गुरु सांसी बताऔ, गुरु सांसी बताऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...
पानी की चिंता तुमें नंइयां नाथ-२
एकइ कमंडल में सागर भर जात॥
खीब धोऔ धुआऔ, खीब आतम चमकाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्मी की चिंता तुमें नंइयां नाथ-२
कुंडलपुर में जाकें गर्मी बितात॥
नें तौ पंखा चलाऔ, नें तौ ए. सी. लगाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उन्नों की चिंता तुमें नंइयां नाथ-२
रैकें दिगंबर परमातम खों ध्यात॥
खीब अंबर ओढ़ौ, खीब धरती बिछाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तिरिया की चिंता तुमें नंइयां नाथ-२
बनकें ब्रह्मचारि ब्रह्मा जी कहात॥

करौ जल्दी सगाई, मुक्ति सें तौ ब्याऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

रोटी की चिंता तुमें नंइयां नाथ-२
दोइ दोइ हातों सें मुस्का कें खात॥
खीब खाऔ खुआऔ, खीब आतम खों ध्याऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिजली की चिंता तुमें नंइयां नाथ-२
खटका दबात नें बलफ खों जलात॥
नें तौ मोबाल चलाऔ, नें तौ टी.वी. चलाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

डब्बल की चिंता तुमें नंइयां नाथ-२
दुनियाँ पै करुणा की दौलत लुटात।
तनक नजरें उठाऔ, तन्नक तौ मुस्काऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आंगे की चिंता तुमें नंइयां नाथ-२
पिच्छी कमंडल अकेलौ लैं हात॥
तीर्थों खों बनाऔ, गुरुकुल खों सजाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अपनी तौ चिंता तुमें नंइयां नाथ-२
दुखियों खों अपनी छाती सें लगात।
देकें 'सुव्रत' खों छाँओं, अपनी विद्या लुटाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (लय-सो जा वारे वीर...)

मोरे विद्यागुरु भगवान, मोरे प्यारे गुरु भगवान।
एक बार बस मो पै तुम तौ, दै दइयौ रे ध्यान॥
बाप मतारी तुमने छोड़े, छोड़ो सब संसार।
सब जग को कल्यान करौ तुम, हो रही जय-जयकार॥
मोखों भी तुम तन्नक हेरौ, करियौ नें हैरान। मोरे...॥१॥
संत साधु तुम बन गए जब सें, जग में हो रहौ नाव।
गैल बता र, हम भक्तों खों, करौ दया के काम॥
मोपै तन्नक दया करौ तुम, मैं मोंडा नदान। मोरे...॥१॥
श्याम मिले जैसे मीरा खों, सबरी खों रघुवीर।
नेमीनाथ मिले राजुल खों, चंदना खों महावीर॥
ऊँसई तुम मोरे घर अइऔ, सुनलो कृपा निधान। मोरे...॥१॥
दुख दारिद्र मिटा दई तुमने, कर रए हो धनवान।
रत्नत्रय की फसलें बोईं, सींचौ सम्यग्ज्ञान॥
'सुव्रत' खों भी तुमईं संमारौ, तुम तौ बड़े महान। मोरे...॥१॥

(दोहा)

बुंदेली में बै उठी, बुंदेली की धार।
सो विद्यागुरु खों करें, नमोस्तु बारंबार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—४१

स्थापना (दोहा)

दुनियाँ कौ सौभाग्य है, जे में भारत देश।
भारत कौ सौभाग्य है, बुंदेली परिवेश॥
बुंदेली के नाथ हैं, विद्यागुरु भगवान॥
सो नमोस्तु करकें करें, बुंदेली गुणगान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

(लय-ओ की नैया पार भई...)

गुरु सांसी बताऔ, गुरु सांसी बताऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...
नदियों में नरओं में सपरत ते रोज-२
साबुन सें शैम्पू सें चमकत ते रोज॥
कैंसें इनखों छुडाऔ, कैंसें धर्म सें लगाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्मी में पंखों की बैहर सुहाए-२
ठंडी में गद्दा उर पल्ली मन भाए॥
कैंसें पंखा छुडाऔ, कैंसें गद्दा हटाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सूट बूट उन्नों सें संवरत ते रोज-२
पैन कें पनैयें तुम तौ मटकत ते रोज॥
कैंसें मुनि पद सुहाऔ, कैंसें डग डग चलाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बाली उमरिया में का देखौ नाथ-२
भायी नें दुल्लू नें मड़आ बारात॥

करबे मुक्ति सें ब्याऔ, कैंसें वैराग्य आऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

खाबे कौ पीबे कौ खीबई तौ शौक-२
लड्डू मलाई उर दारों में छौंक॥
कैंसें नीरस खों खाऔ, कैंसें अनशन सुहाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाउडर किरीमों सें खुद खों सजाऔ-२
कंघी सें बन्न बन्न पटियें पराऔ॥
कैंसें लुंचन सुहाऔ, कैंसें सपरौ छुडाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बापू मतारी के लाड़ले सपूत-२
नाजों सें पले-पुसे मल्लप्पा दूत॥
कैंसें लाड़ खों छुडाऔ, कैंसें कर्म खों घुमाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आंगे की सोसी नें पाछे कौ ज्ञान-२
नें कच्छू चिंता नें कच्छू सामान॥
कैंसें पिच्छी बनाऔ, कैंसें मुक्ति खों ध्याऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जर माया जोरू कन्या सी जमीन-२
जे के लानें दुनियाँ बड़ी दीन हीन॥
कैंसें इनखों छुडाऔ, कैंसें सु-व्रत सजाऔ।
कैंसें मुनि बनबे कौ आ गऔ तौ भाव॥ गुरु सांसी बताऔ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

मोरे विद्या गुरु हैं वैरागी, मोरे विद्या गुरु हैं वैरागी।
सूट बूट उनखों नंई भाएं-२, वे तो नग्न रूप में हैं राजी॥ मोरे...
बंगला कोठी उनें नंई भाएं-२, वे तो वन जंगल में हैं राजी॥ मोरे...
गद्दा सोफा उनें नंई भाएं-२, वे तो काठ-तखत पे हैं राजी॥ मोरे...
गाड़ी घोडा उनें नंई भाएं-२, वे तो पैदल-पैदल हैं राजी॥ मोरे...
माल-मसाले उनें नंई भाएं-२, वे तो प्रासुक भोजन में राजी॥ मोरे...
रसना लिम्का उनें नंई भाएं-२, वे तो प्रासुक जल में हैं राजी॥ मोरे...
पान सुपाड़ी उनें नंई भाएं-२, वे तो शास्त्र-पुराणों में राजी॥ मोरे...
ए.सी. कूलर उनें नंई भाएं-२, वे तो आत्म ध्यान में हैं राजी॥ मोरे...
दुनियाँदारी उनें नंई भाएं-२, वे तो संयम 'सुव्रत' में राजी॥ मोरे...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—४२

स्थापना

(लय-गाँव में मच गऔ हल्ला रे-हल्ला रे...)

नगरी में मच गऔ हल्ला रे-हल्ला रे,
आ गऔ श्रीमती कौ लल्ला रे॥
मल्लप्पा कौ राज दुलारौ, श्रीमती की आँखों कौ तारौ।
सबके जिगर कौ छल्ला रे-छल्ला रे॥ आ गऔ श्रीमती कौ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

विद्यासागर गुरु हमारे, हम सबखों प्राणों सें प्यारे।
कै रऔ है पूरौ मुहल्ला रे-मुहल्ला रे॥ आ गऔ श्रीमती कौ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कही ज्ञानसागर की मानी, संघ बना लऔ गुरुकुल ज्ञानी।
दुनियाँ में मच गऔ हल्ला रे-हल्ला रे॥ आ गऔ श्रीमती कौ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ की माया तौ छोड़ी, पिछी कमंडल की लई जोड़ी।
पापों खों कर रये निठल्ला रे-निठल्ला रे॥ आ गऔ श्रीमती कौ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बालब्रह्म की धारी दीक्षा, सबखों दयी धर्मों की शिक्षा।
भोगों खों मार रये टुल्ला रे-टुल्ला रे॥ आ गऔ श्रीमती कौ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

खुद तौ रुखौ सूखौ खावें, लेकिन सबखों सरस बनाबें।
वचनों कौ देत रसगुल्ला रे-गुल्ला रे॥ आ गऔ श्रीमती कौ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब की दुनियाँ तौ मोही, भैज्जा ऐंसे जे निर्मोही।
मार रये मोहों कौ मल्ला रे-मल्ला रे॥ आ गऔ श्रीमती कौ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बजा रये कर्मों कौ बाजा, ऐंसे विद्यागुरु महाराजा।
जीत रये कर्मों कौ कल्ला रे-कल्ला रे॥ आ गऔ श्रीमती कौ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ सें कच्छू नंई चानें, फिर भी सबखों गरे लगानें।
सबनें बिछा लऔ पल्ला रे-पल्ला रे॥ आ गऔ श्रीमती कौ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ये की सुन लो ओ की सुन लो, तन्नक सी भक्तों की सुन लो।
'सुव्रत' कहें चिल्ला चिल्ला रे-चिल्ला रे॥ आ गऔ श्रीमती कौ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (लय-ऐंसी माटी नें...)

ऐंसें गुरुवर नें दुनियाँ के खण्ड-खण्ड में।
विद्या गुरुवर तुम रइयौ बुंदेलखण्ड में॥
नैनागिरी कुंडलपुर खजुराहो प्यार॥
बीना बारह ईशुरवारा पटेरिया जी न्यारे॥
मढिया जी जइयौ कि नौनौ लगत ठंड में।
विद्या गुरुवर तुम रइयौ बुंदेलखण्ड में॥१॥
पवाजी बंधाजी अहारजी पपोरा।
देवगढ़ बजरंगगढ़ करगुवांजी जखौरा॥
सोनागिरि सोहे कि मन नाचै पटनागंज में।
विद्या गुरुवर तुम रइयौ बुंदेलखण्ड में॥२॥
कोनी जी थूवोन जी द्रौणागिरि पनागर।
बालाबेहट सेंरोनजी नवागढ़ भद्दलपुर
तीरथ करलो कि शांति मिल है बहोरीबंद में।
विद्या गुरुवर तुम रइयौ बुंदेलखण्ड में॥३॥
बानपुर चंदेरी भियादांत बांसी।
गोलाकोट पचराई पीपरा झाँसी॥
ओरछा जइयौ कि मन झूमै परमानंद में।
विद्या गुरुवर तुम रइयौ बुंदेलखण्ड में॥४॥
हीरा से बंदेलखण्ड में मंदिर किले हैं।
'सुव्रत' के स्वामी विद्यागुरुवर मिले हैं॥
समवसरण लागे संघों के झुण्ड.झुण्ड में।
विद्या गुरुवर तुम रइयौ बुंदेलखण्ड में॥५॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—४३

स्थापना

(लय-गाँव में मच गऔ हल्ला रे-हल्ला रे...)

अपनौ भाग्य जगा लो रे, जगा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
द्रव्यों की थाली सजा लो रे, सजा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
गुरुवर खों सादर बुला लो रे, बुला लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
गुरुवर खों मन में बिठा लो रे, बिठा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
गुरुवर खों माथौ झुका लो रे, झुका लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

विद्या गुरुवर की लहरों सें, अपने पापों खों धो लो।
अपनी नैया तिरा लो रे, तिरा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
अपनौ भाग्य जगा लो रे, जगा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या गुरुवर की छइयों सें, तनक मनक सुस्ता तौ लो।
अपनौ ताप नसा लो रे, नसा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
अपनौ भाग्य जगा लो रे, जगा रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या गुरुवर के हाथों सें, जैनी दीक्षा लै तौ लो।
जीवन धन्य बना लो रे, बना लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥

अपनौ भाग्य जगा लो रे, जगा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या गुरुवर के चरणों सें, भोगी भोग छुडा तौ लो।
जीवन पुष्प खिला लो रे, खिला लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
अपनौ भाग्य जगा लो रे, जगा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या गुरुवर की सेवा सें, भोजन पानी तज तौ लो।
आतम भोग लगा लो रे, लगा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
अपनौ भाग्य जगा लो रे, जगा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या गुरुवर की अर्चा सें, अपनों मोह नसा तौ लो।
धार्मिक जोत जला लो रे, जला लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
अपनौ भाग्य जगा लो रे, जगा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या गुरुवर की चर्चा सें, अपने कर्म जला तौ लो।
चेतन रूप सजा लो रे, सजा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
अपनौ भाग्य जगा लो रे, जगा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या गुरुवर के खर्चा सें, मोक्ष सवारी कर तौ लो।
परमानंद मजा लो रे, मजा लो रे।

गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
अपनौ भाग्य जगा लो रे, जगा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या गुरुवर की आज्ञा सें, त्याग तपस्या कर तौ लो।
सुव्रत गैल बना लो रे, बना लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥
अपनौ भाग्य जगा लो रे, जगा लो रे।
गुरुवर की पूजा रचा लो रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-मिल है नें, मिल है नें, नर भव कौ हीरा जौ मिल है नें)

को रै है, को रै है, गुरुवर के संगे को रै है।
पाँचों पापों खौं जो तज है, और पाँच व्रत जो लै है।
तीन मकार व्यसन सब तज है, होटल में जो नै जै है॥
घर दारा बन्धु खौं तज कैं, नगन दिगम्बर जो रै है, जो रै है।
गुरुवर के संगै वो रे है। को रै है...॥१॥
धन दौलत कुर्सी तज दें हैं, पिछी कमण्डल जो लै है।
केशलौंच कर है उपवासा, पैदल-पैदल जो जै है॥
अन्तराय पालै भोजन में, ठाडें ठाडें जो खै है, जो खै है।
गुरुवर के संगै वो रहै है। को रै है...॥२॥
रूखौ-सूखौ जो मिल जावें,एकंई बिरियाँ जो खै है।
दाँत धोय नैं, नहीं नहावै, सबई परीषह जो सै है॥
गद्दा-पल्ली मखमल तज कैं, काठ तखत पै सो जै है, सो जै है।
गुरुवर के संगै वो रहै है। को रै है...॥३॥
कबऊँ लडै नैं गारी देवै, मीठौ-मीठौ कम बोलै।
ठण्डी गर्मी वर्षा सै है, अपने में थिर जो रै है॥
समता रस खों खूबई चीखै, ममता माया तज दै है, तज दै है।
गुरुवर के संगै वो रहै है। को रै है...॥४॥
ज्ञान ध्यान तप में रत रै है, भोग-विषय सब तज दै है।

दुखियों की सेवा जो कर है, निंदा चुगली नें कर है॥
अपने सब आवश्यक पालै, सबई बुराई तज दै है, तज दै है।
गुरुवर के संगै वो रहै है॥ को रै है...॥५॥
मौन रहे आतम खौं ध्यावे, सबई परीग्रह तज दै है।
देव शास्त्र गुरुओं खौं पूजै, वीतराग की जय बोलै॥
पूजन पाठ करै गुण गावै, णमोकार-माला दै है, माला दै है।
गुरुवर के संगै वो रहै है॥ को रै है...॥६॥
वसुधा खौं मानै परिवारा, मंगल-मंगल कर दे है।
जियो और जीने दो सबको, धर्म अहिंसा जो लै है॥
दया धरम खौं नैं विसरावै, 'सुव्रत' धर कैं जय बोलै, जय बोलै।
गुरुवर के संगै वो रहै है॥ को रै है...॥७॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—४४

स्थापना

(लय-दूल्हा के कक्का...)

बुंदेली वारे बड्डे बाबा, भक्तों खों दै रये आशीष।
बड़े-बाबा के छोटे-बाबा, हम तौ तुमखों टेकें शीश॥
छोटे बाबा विद्यासागर, हम तो तुमखों टेरें सादर।
आ जाओ पूजा में गुरुवर, रख लो लाज हमारी गुरुवर॥
गुरु लग रये तीर्थंकर जैंसे, जैंसें सांचउं के जगदीश।
बड़े-बाबा के छोटे-बाबा, हम तौ तुमखों टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

तुमंई हमारे बाप मतारी, तुमंई रये अतिशयकारी।
तीरथ यात्रा तुमंई हमारी, मोक्ष धाम की तुमंई सवारी॥
हमखों तारौ पार उतारौ, दै दो तीन लोक कौ शीश।
बड़े-बाबा के छोटे-बाबा, हम तौ तुमखों टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने छोड़ी दुनियाँ सारी, गुरुवर सें कर डारी यारी।
गुरु की यारी सब पे भारी, सो हम गुरुवर के आभारी॥
धर कें हाथ मूड़ पे गुरुवर, सदा लुटइयौ रे आशीष।
बड़े-बाबा के छोटे-बाबा, हम तौ तुमखों टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जब सें सीखी है गुरु भक्ति, ठुकरा दई सबरी संपत्ति।
उमड़ रयी चेतन की मस्ती, गुरुवर हमें दिलइयौ मुक्ति॥
बृथा हमारौ जन्म नें जावै, इत्तई लगी हृदय में टीस।
बड़े-बाबा के छोटे-बाबा, हम तौ तुमखों टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सबरे फिर रये ब्याव कराबे, गोरी-गोरी गोरी पाबे।
गुरु नें जा गोरी ठुकराई, मुक्तिवधू सें करी सगाई॥
हमें बरातों में लै जाबे, गुरुवर तुम नें बनियौ चीस।
बड़े-बाबा के छोटे-बाबा, हम तौ तुमखों टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

सब मर रये खाबे पीबे खों, नौनें सें जीवन जीबे खों।
गुरु कौ मन नंइयां छीबे खों, सो तुम तनक लेत जीबे खों॥
हमें तनक अपनौ रस दइयौ, जैंसें गाड़ी वारौ ग्रीस।
बड़े-बाबा के छोटे-बाबा, हम तौ तुमखों टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौंरे जैंसौ कारौ कारौ, जग में पसरौ है अँधयारौ।
जे के डरने हमखों मारौ, सो गुरुवर जी तुमें पुकारौ॥
थामौ गुरुजी हाथ हमारौ, जलै दिवारी वारौ दीप।
बड़े-बाबा के छोटे-बाबा, हम तौ तुमखों टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की कैंसी बलिहारी, हमखों मारै बारी बारी।
कैंसें बच है लाज हमारी, गुरु रखियौ जा जिम्मेदारी॥
कर्मों में हम हिरा नें जाएं, गुरुवर ऐंसी दइयौ सीख।
बड़े-बाबा के छोटे-बाबा, हम तौ तुमखों टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सब घरवार कुटुम खों छोड़े, रिश्ते नाते सबरे तोड़े।
मोक्षमार्ग पे सरपट दौड़े, सो संसार पखारै गोड़े॥
तनक हमें भी देऔ आसरौ, हम तौ कै रये चीखइ चीख।
बड़े-बाबा के छोटे-बाबा, हम तौ तुमखों टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जैंसें गुरु की छाया पाई, उंसइ हमने आश लगाई।
जैंसें गुरु नें तुमखों तारौ, उंसइ दइयौ हमें सहारौ॥
अर्जी हमारी मर्जी तुमारी, जो जानौ सो करौ रईस।
बड़े-बाबा के छोटे-बाबा, हम तौ तुमखों टेकें शीश॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(जोगीरासा)

बब्बा नें कई ती सो हमतौ, तुमखों आज बता रय॥
ये जीवन कौ असल मजा तौ, गुरुवर खूब उठा रये॥
नें तौ इनकी दुकान गद्दी, नें तौ करें गुलामी।
नें तौ कौनउं राज खजानौ, नें कौनउं आसामी॥
फिर भी दोई दोई हातों से, मुस्का-मुस्का खा रये।
ये जीवन...बब्बा नें...॥१॥
नें तौ अपनी देह सजानें, नें तौ कबऊँ सपरनें।
नें तौ साबुन शैम्पू सोडा, नें तौ बार कतरनें॥
देखौ जे अपने हातों सें, अपने बार पटा रये।
ये जीवन...बब्बा नें...॥२॥
नें तौ पैनें उन्ना-लत्ता, नें चटकाएं पनैंयें।
नें तकिया नें खाट-विछौना, नें फर्राएं चुटैंयें।

से तौ पिछी कमण्डल लेंकें, पूरा जगत रिझा रये।
ये जीवन...बब्बा नें...॥३॥
नें हरयाई नें गुरयाई, नें खारौ नें चिपरौ।
नें तौ खायें माल मसालौ, नें खट्टौ नें सकरौ॥
रूखौ-सूखौ खाकें बे तौ, ज्ञान की धार बहा रये।
ये जीवन...बब्बा नें...॥४॥
नें तौ इनकें टेबिल कुर्सी, नें तौ महल अटारी।
ट्रैन प्लेन नें हाथी घोडा, नें तौ कौनउं गाड़ी॥
निंगनिंग के बे जितै पौंच गए, उतै दया लुढ़का रये।
ये जीवन...बब्बा नें...॥५॥
नें आंगे की फिकर करें बे, नें चिंता पाछे की।
नें कौनउं खों लूटें मारें, नें चिंता घाटे की॥
जितै जमा द, गोड़े 'सुव्रत', तीरथ उंतई बना रये।
ये जीवन...बब्बा नें...॥६॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

गुरु जिसे
स्पर्श करें
वह महान ही नहीं
अपितु
भगवान बन जाता है

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—४५

स्थापना (जोगीरासा)

बाबा हिलतइ नंइयां रे, बाबा डुलतइ नंइयां रे।
फिर भी बाबा जैंसौ कौनउं, मिलतइ नइयां रे॥
हमनें सारी दुनियाँ देखी, तुमसौ कोउ नें पाऔ।
तबइं तुमारे दर पे बाबा, जग पूजन खों आऔ॥
तुम जैसौं तौ कोनउं हमखों, जमतइ नंइयां रे।
बाबा हिलतइ नंइयां रे, बाबा डुलतइ नंइयां रे।
फिर भी बाबा जैंसौ कौनउं, मिलतइ नंइयां रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

जौन गांव में जनम धरौ तौ, वौ नें तुमें पुसानों।
बाप मतारी भाई बंध खों, तुम अपनों नें मानों॥
बिना तुमारे प्राण हमारे, बचतई नंइयां रे।
बाबा हिलतइ नंइयां रे, बाबा डुलतइ नंइयां रे।
फिर भी बाबा जैंसौ कौनउं, मिलतइ नइयां रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियादारी की परछाईं, तुम पे पर नें पायी।
सो तुम सबखों देत सहारौ, हमनें अर्ज लगायी॥
बिना तुमारे काम हमारे, चलतई नंइयां रे।
बाबा हिलतइ नंइयां रे, बाबा डुलतइ नंइयां रे।
फिर भी बाबा जैंसौ कौनउं, मिलतइ नइयां रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

घरों-घरों में गैल-गैल में, ढूढ़ौ हर गलयारौ।
गाँव नगर में कौनउं तुमसौ, नंइयां शरण सहारौ॥
बिना तुमारे धर्म हमारे, पलतई नंइयां रे।
बाबा हिलतइ नंइयां रे, बाबा डुलतइ नंइयां रे।
फिर भी बाबा जैंसौ कौनउं, मिलतइ नइयां रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

लोग लुगाई मौंडा मौंड़ी, भज्जा बैन हमारे।
माछी जैंसे भिनक रये हैं, पाछें परे तुम्हारे॥
फिर भी तुम कौनउं खों गुरुवर, तकतइ नंइयां रे।
बाबा हिलतइ नंइयां रे, बाबा डुलतइ नंइयां रे।
फिर भी बाबा जैंसौ कौनउं, मिलतइ नइयां रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

ताते वासे सड़े गले से, भोजन भोग रसीले।
सबरे छोड़ चुके तुम स्वामी, जे खों दुनिया लीले॥
दुनियाँ जेखों भख रयी ओखों, भखतइ नंइयां रे।
बाबा हिलतइ नंइयां रे, बाबा डुलतइ नंइयां रे।
फिर भी बाबा जैंसौ कौनउं, मिलतइ नइयां रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरज चंदा दीया जैंसौ, रोज करौ उजयारौ।
तुमें देख कें कांप रऔ है, दुनियाँ कौ अंधयारौ॥
तुम तौ संकट तूफानों सें, डरतइ नंइयां रे।
बाबा हिलतइ नंइयां रे, बाबा डुलतइ नंइयां रे।
फिर भी बाबा जैंसौ कौनउं, मिलतइ नइयां रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की कठपुतली जैंसी, दुनियाँ नांच रयी है।
आपइ दुख की चिठिया लिखकें, आपइ वांच रयी है॥
कठपुतली कौ खेल तुमें तौ, जचतइ नंइयां रे।
बाबा हिलतइ नंइयां रे, बाबा डुलतइ नंइयां रे।
फिर भी बाबा जैंसौ कौनउं, मिलतइ नइयां रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने आतम की मस्ती में, सदा करौ तुम मस्ती।
कौनउं ओछी बात करौ नें, नें हल्की नें सस्ती॥
दुनियाँ कौ तौ असर आप पे, परतइ नंइयां रे।
बाबा हिलतइ नंइयां रे, बाबा डुलतइ नंइयां रे।
फिर भी बाबा जैंसौ कौनउं, मिलतइ नइयां रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ में का हौ रऔ ये खों, जानें दुनियाँ वारे।
रहें पुन्न में सौंझ गुरुजी, पाप में न्यारे न्यारे॥
जबइं आप बिन मूड़ काउ खों, झुकतइ नंइयां रे।
बाबा हिलतइ नंइयां रे, बाबा डुलतइ नंइयां रे।
फिर भी बाबा जैंसौ कौनउं, मिलतइ नइयां रे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-कैंसें धरै मन धीरा रे...)

गुरुवर कौ द्वारौ खूब सजौ रे! दर्शन करबे आये।
हाँ-हाँ रे! पूजन करबे आये॥
तीर्थंकर से गुरुवर मोरे, समोसरन सौ संघ सजौ रे-२
सुखी-सुखी सब प्राणी रे! आरती करबे आये।
हाँ-हाँ रे! भगतें करबे आये॥ गुरुवर कौ...
दिव्य धुनी सी प्रवचन कक्षा, सबइ जनौं की इतै सुरक्षा-२
काल लगे चौथौ जैसों, वन्दन करबे आये।
हाँ-हाँ रे! वन्दन करबे आये॥ गुरुवर कौ...
अपने हात मूड़ पै धर दो, अपनी करुणा मौ पै कर दो-२
खाली झोली भर दो रे! आशा लें कैं आये।
हाँ-हाँ रे! दासा बन कैं आये॥ गुरुवर कौ...
विद्या माया तुमरी दासी, तुम वैरागी गुरु संन्यासी-२
मुक्तिरमा के स्वामी रे! सेवा करबे आये।
हाँ-हाँ रे! देवालय में आये॥ गुरुवर कौ...
तारनतरन सबई के पालक, शिवपुर-गाड़ी के तुम चालक-२
'सुव्रत' खौं दइयौ शरणा रे! पइयाँ परबे आये।
हाँ-हाँ रे! छइयाँ लै बे आये॥ गुरुवर कौ...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—४६

स्थापना

(लघु चौपाई)

कही हमारी मानौ आप, इतै उतै नें करियौ पाप।
विद्यागुरु की करलो जाप, सबइ टलें अपने अभिशाप॥
करलो करलो रे गुणगान, भज्जा करलो रे आह्वान।
भज्जा भजलो रे भगवान, हो जै आतम कौ कल्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

सपर सपर कें विद्या धार, बन बैठे मुनिवर अनगार।
विद्यागुरु सपरत नंइयां, सो सब धोरये गुरु पइयाँ॥
गुरु पइयाँ हैं अपनी शान, भज्जा लै लो रे गुरुज्ञान।
भज्जा भजलो रे भगवान, हो जै आतम कौ कल्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमंती मल्लप्पा लाल, पाकें लाड़ प्यार माहौल।
बने ज्ञानसागर के लाल, सो हम हो गए मालामाल॥
गुरु छइयां हैं अपने प्रान, भज्जा लै लो रे गुरुज्ञान।
भज्जा भजलो रे भगवान, हो जै आतम कौ कल्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

खेल-खेल बचपन सें खेल, काट रये कर्मों की जेल।
दिखा रये संयम की गैल, सो सबको धुल रऔ मन मैल॥
गुरु पूजा है अपनौ मान, भज्जा लै लो रे गुरुज्ञान।
भज्जा भजलो रे भगवान, हो जै आतम कौ कल्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम काम जीवन भर काम, तुमें पुसाऔ नें जौ काम।
सो करकें सब काम तमाम, आतम में कर रये आराम॥
गुरु आज्ञा है अपनी जान, भज्जा लै लो रे गुरुज्ञान।
भज्जा भजलो रे भगवान, हो जै आतम कौ कल्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

खा खाकें होकें हैरान, भूल रयी दुनियाँ भगवान।
सो तुमने छोड़े रसपान, जबइं कहें तुमखों भगवान॥
गुरु सेवा है अपनौ ध्यान, भज्जा लै लो रे गुरुज्ञान।
भज्जा भजलो रे भगवान, हो जै आतम कौ कल्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देख-देख जग कौ अंधयार, तुमखों रुचौ नहीं संसार।
सो संयम कौ दीप उजार, पिछी कमण्डल लयी संभार॥
गुरु पूजा अपनौ सम्मान, भज्जा लै लो रे गुरुज्ञान।
भज्जा भजलो रे भगवान, हो जै आतम कौ कल्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग.भोग कर्मों के भोगए बने आज लों नें सुखयोग।
सो लें कें गुरु कौ सहयोगए बन बैठे पूजा के योग्य॥
गुरु अर्चा अपनौ ईमान, भज्जा लै लो रे गुरुज्ञान।
भज्जा भजलो रे भगवान, हो जै आतम कौ कल्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ के सब रिश्तेदार, दुख देवें स्वारथ के यार।
सो तुमखों नइयां स्वीकार, जबइं करें हम जय जयकार॥
गुरु गाथा अपनौ कल्यान, भज्जा लै लो रे गुरुज्ञान।
भज्जा भजलो रे भगवान, हो जै आतम कौ कल्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की रैली कढ़ रयी रोज, भज्जा करलो अपनी खोज।
जहाँ मिलैगौ सच्चौ मौज, हमखों भी कर लइयौ सौंझ॥
गुरु भक्ति अपनौ निर्वान, भज्जा लै लो रे गुरुज्ञान।
भज्जा भजलो रे भगवान, हो जै आतम कौ कल्यान॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-नाचै जौ मन कौ मोर...)

मिल कैं करौ जय-जयकार रे-२।
भक्तों के भगवन् गुरुवर पधारे, मिल कैं करौ जय-जयकार रे-२॥

कर-करकैं हिंसा पापों खौं, दुखी-दुखी है संसारी।
कौनउं साथी सग्गो नइयाँ, स्वारथ की दुनियाँदारी॥
आदत तौ अपनी सुधार रे, आदत तौ अपनी सुधार रे।
गुरुवर की अर्चा में चर्चा जा हो रई, आदत तौ अपनी सुधार रे॥ मिल कैं...॥१॥
कबऊँ कबऊँ तो बड्डे बनके, दुनियाँ भर पै राज करौ।
और बने जब सबसें नन्ने, दुनियाँ कौ डर खाय गयौ॥
जीवों पै करुणा तौ धार रे, जीवों पै करुणा तौ धार रे।
गुरुवर की चर्या में करुणा झलक रइ, जीवों पै करुणा तौ धार रे॥ मिल कैं..॥२॥
इतै उतै तौ कब सें फिर रय, भटक-भटक मारे-मारे।
अब तौ गुरु के चरण पखारौ, हो जायें वारे-वारे॥
किस्मत तौ अपनी सँवार रे, किस्मत तौ अपनी सँवार रे।
गुरुवर के द्वारे में लुट रऔ खजानौ, किस्मत तौ अपनी सँवार रे॥ मिल कैं...॥३॥
करें गुलामी काया की हम, तीर्थ करें सब मनमाने।
दुनियाँ की तौ खबर रखें पै, फिरें खुदई सें अनजाने॥
आतम तौ अपनी निखार रे, आतम तौ अपनी निखार रे।
गुरुवर के हिरदे से इमरत बरस रऔ, आतम तौ अपनी निखार रे॥ मिल कैं...॥४॥
तन्त्र मन्त्र माया के लानें, स्वांग रचा कें राम भजें।
सम्यक् विद्या खों नें पूजें, नें करुणा के काम करें॥
मुक्ति कौ कर लौ विचार रे, मुक्ति कौ कर लौ विचार रे।
गुरुवर के 'सुव्रत' सबसें जा कै रय, मुक्ति कौ कर लौ विचार रे॥ मिल कैं...॥५॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—४७

स्थापना

(चौपाई)

जब सें पांव परे गुरुवर के, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥
जब सें पूजौ विद्या गुरु खों, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥
पैलें मोखों को बूझत तौ, मोय देखकें मौं सूजत तौ-२
अब जब सें तोरे हो गए, सब पाछें मोरे हो गए॥
जब सें पांव परे गुरुवर के, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

पैलें मैंने खूबई सपरौ, कबऊँ चमक नें पाऔ ससुरौ-२
अब जब सें तोरे हो गए, धन्य जनम मोरे हो गए॥
जब सें पांव परे गुरुवर के, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पैलें सबनें मोय रुआऔ, बार.बूर कें मोय तपाऔ-२
अब जब सें तोरे हो गए, आव.भगत मोरे हो गए॥
जब सें पांव परे गुरुवर के, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पैलें सबनें खीब छकाऔ, गदबद दैकें खीब भगाऔ-२
अब जब सें तोरे हो गए, लटा.पटा मोरे हो गए॥
जब सें पांव परे गुरुवर के, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पैलें सबनें गरे लगाऔ, फिर फथरा सें मार गिराऔ-२
अब जब सें तोरे हो गए, फू लों से मोरे हो गए॥
जब सें पाँव परे गुरुवर के, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

पैल ज्वांर कौ खा-खा दरिया, मौं पर गऔ तौ मोरौ करिया-२
अब जब सें तोरे हो गए, उजरे मौं मोरे हो गए॥
जब सें पांव परे गुरुवर के, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पैलें काजर से करिया थे, भौत भयंकर फुसकरिया थे-२
अब जब सें तोरे हो गए, हीरा से मोरे हो गए॥
जब सें पांव परे गुरुवर के, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पैलें मोरी बारें होरी, सबइ करत ते सीना.जोरी-२
अब जब सें तोरे हो गए, रीझ.बूझ मोरे हो गए॥
जब सें पांव परे गुरुवर के, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पैलें कथरी खाट गदुलिया, मिली मोय सो बदली हुलिया-२
अब जब सें तोरे हो गए, मोर मुकुट मोरे हो गए॥
जब सें पांव परे गुरुवर के, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पैलें मोरी मूंछ मरोरें, सबरे कुठिया में गुर फोरें-२
अब जब सें तोरे हो गए, ठाट.बाट मोरे हो गए॥
जब सें पांव परे गुरुवर के, मजा-मजा मोरे हो गए।
करिया सें गोरे हो गए॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-लाल रंग डारौ हरीरौ रंग डारौ...)

लाल रंग डारौ हरीरौ रंग डारौ, और रंग डारौ केशरिया।
आज हमारौ रंग केशरिया॥
मल्लप्पा के राज दुलारे, श्रीमति की आंखों के तारे।
विद्यासागर मुनि रसिया, ओ! पिच्छी वारे सांवरिया॥
लाल रंग डारौ हरीरौ रंग डारौ, और रंग डारौ केशरिया।
आज हमारौ रंग केशरिया॥
कर्नाटक सें भए वैरागी, बने ज्ञानसागर के रागी।
मोक्षमार्ग के सारथिया, ओ! पिच्छी वारे सांवरिया॥
लाल रंग डारौ हरीरौ रंग डारौ, और रंग डारौ केशरिया।
आज हमारौ रंग केशरिया॥
गुरु नें अपनौ गुरु बना कें, सिंहासन पे तोय बिठा कें।
दे दऔ सुख कौ सागरिया, ओ! पिच्छी वारे सांवरिया॥
लाल रंग डारौ हरीरौ रंग डारौ, और रंग डारौ केशरिया।
आज हमारौ रंग केशरिया॥
गुरु सें पाकें शिक्षा-दीक्षा, लेंकें 'सुव्रत' धरम परीक्षा।
'विद्या' के बन गए सागरिया, ओ! पिच्छी वारे सांवरिया॥
लाल रंग डारौ हरीरौ रंग डारौ, और रंग डारौ केशरिया।
आज हमारौ रंग केशरिया॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—४८

स्थापना

(लय-हम कुंडलपुर जें हैं, पूरौ घर लै जें हैं..)

मजे मजे सें रें हैं, गुरु पूजा रचें हैं।
(पूजा रचें हैं, गुरु भक्ति रचें हैं-२)
विद्यागुरु खों ध्यें हैं, गुरु पूजा रचें हैं॥
बुंदेली के बड़्डे बाबा, बड़्डे बाबा के हल्के बाबा-२
विद्या के सागर जे हैं, हम जै-जै कें हैं।
मजे मजे सें रें हैं, गुरु पूजा रचें हैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

दद्दा बऊ खों तुमनें छोरौ, दुनियाँदारी सें मों मोरौ-२
हम तौ इत्तई कें हैं, तोरे संगै रें हैं॥ मजे मजे सें रें हैं...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमनें जीसें कर लई यारी, ओनें अपनी होरी बारी-२
तोरी छइयां पें हैं, तोरे संगै रें हैं॥ मजे मजे सें रें हैं...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उठ भुनसारे सें दयँ कुर्रू, इतै-उतै रोरय दयँ फु र्रू-२
गदबद अब नें दें हैं, तोरे संगै रें हैं॥ मजे मजे सें रें हैं...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

लोग-लुगाई के चक्कर में, तुम नें बिदे कबउँ घर-वर में-२
हम भी जौ तज दें हैं, तोरे संगै रें हैं॥ मजे मजे सें रें हैं...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

बिगड़ै भोजन करै कबाड़ै, सो आहार करौ तुम प्यारौ-२
हम भी जौ रस लें हैं, तोरे संगै रें हैं॥ मजे मजे सें रें हैं...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करिया कौ करिया कर डारौ, मार-मार कें करौ उजारौ-२
हम करिया तज दें हैं, तोरे संगै रें हैं॥ मजे मजे सें रें हैं...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की तजबे बलिहारी, तुमने पिछी कमंडल धारी-२
हम भी ऐंसई लें हैं, तोरे संगै रें हैं॥ मजे मजे सें रें हैं...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कौनउँ सें का लेनें-देनें, खुद में खुदई मगन सौ रेनें।
ऐंसई हम हो जें हैं, तोरे संगै रें हैं॥ मजे मजे सें रें हैं...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

एक तरफ होवै जग सारौ,एक तरफ गुरुवर कौ द्वारौ-२
तौ गुरु चरणा लें हैं, तोरे संगै रें हैं॥ मजे मजे सें रें हैं...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(हम बुंदेली वारे.../जोगीरासा)

हम बुंदेली वारे भज्जा, हम बुंदेली वारे।
थोरे से गोरे थोरे से कारे-२, हम बुंदेली वारे॥ हम बुंदेली वारे...
जहाँ विराजे कुंडलपुर के, पूज्य बड़ेबाबा हैं।
जे धरती पर विचरण करते, गुरु छोटेबाबा हैं॥
जिनकी जग में शान निराली-२, जो हैं सबसें प्यारे। हम बुंदेली वारे...॥
नदी किले मंदिर मड़ियों सें, जेकौ रुतवा न्यारौ।
मौंडा मौंड़ी बब्बा बऊ नें, जितै गजब कर डारौ॥
लोग लुगाई के किस्सों सें-२, खीस निपोरें सारे। हम बुंदेली वारे...॥
जैंसें अपने जिनमंदिर में, जिनवर मूरत मोहै।
जैंसें अपनी ये काया में, बिना हृदय कौ को है॥
ऊँसई भारत बुंदेली में-२, हैं सांचउं दिलवारे। हम बुंदेली वारे...॥
अपने बुंदेली कौ सबने, बेजां करौ कबाड़ौ।
मनौ इतै छोटे बाबा नें, जब सें डेरा डारौ॥
तब सें बुंदेली के हो गए-२, सांचउं वारे-न्यारे। हम बुंदेली वारे...॥
भारत में का सबरे जग में, बुंदेली अलबेलौ।
'सुव्रत' की अब मान जाऔ रे, अब नें अपनी ठेलौ॥
बुंदेली बुंदेली गालो-२, कै रये दुनियाँ वारे।
हम बुंदेली वारे भज्जा, हम बुंदेली वारे।
थोरे से गोरे थोरे से कारे-२, हम बुंदेली वारे॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—४९

स्थापना

(लय-जेठमास कड़ गऔ और बसकारौ कड़ गऔ...)

बब्बा भी कै रये और बूढ़ी भी कै रयीं,
सबकी कही तो निभानें हैं, गुरुवर की पूजा रचानें हैं।
जेठमास कड़ गऔ और बसकारौ कड़ गऔ,
जड़कारौ अब नंई गंवानें हैं, गुरुवर की पूजा रचानें हैं॥
बुंदेली के छोटेबाबा, अब नें तरसइयौ तुम जादा।
अब तौ पूजा में आनें हैं, भक्तों खों पार लगानें हैं॥ जेठमास...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

तुमनें कौनउं की नंई मानी, निकर परे बनवें खों ज्ञानी।
हमखों भी पाछें आनें हैं, जीवन खों सफल बनानें हैं॥
बालपनों कड़ गऔ जुवानी भी कड़ गई।
बुढ़ापौ अब नंई गंवानें हैं, गुरुवर की पूजा रचानें हैं॥ जेठमास...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर नें दऔ तुमें सहारौ, तुमनें सबखों पार उतारौ।
हमखों भी छंइयां चानें हैं, जीवन खों शुद्ध बनानें हैं॥
इनकी भी सुन लई और उनकी भी सुन लई।
अब तौ सबखों भुलानें हैं, गुरुवर की भक्ति रचानें हैं॥ जेठमास...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हीरा मोती सबतौ जोरे, कुठिया बंडा भर लये पूरे।
संगै कछू नंई जानें हैं, जीवन खों सफल बनानें हैं॥
घरखों भी छोड़ौ और बाहर खों छोड़ौ।
अब तौ गजरथ सजानें हैं, गुरुवर पे प्राण लुटानें हैं॥ जेठमास...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मेंदी हरदी सबई रचा रये, लोग लुगाई सब मस्ता रये।
गुरु इनसें अनजाने हैं, हमनें जबंई तौ माने हैं।
सजबौ भी छोड़ौ सपरबौ भी छोड़ौ।
भोगों के भाव नशानें हैं, मुक्ति सें ब्याऔ रचानें हैं। जेठमास...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

माल मलीदा सबरे खा रये, खा-खा कें देखौ गर्रा रये।
फिर भी नंई उक्ताने हैं, गुरु इनसें बेगाने हैं॥
खाबौ भी छोड़ौ और पीबौ भी छोड़ौ।
पुद्गल के स्वाद मिटानें हैं, आतम को भोग लगानें हैं॥ जेठमास...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीया जला कें करें उजारौ, जर-भुंज कें जग हो रऔ कारौ।
आतम कौ अंध मिटानें हैं, गुरु सौ दीया जलानें हैं॥
जलबौ भी छोड़ौ और भुंजबौ भी छोड़ौ।
अपने घर खों सजानें हैं, चेतन खों चमकानें हैं॥ जेठमास...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों सें हम बने बानियों, महा पुण्य कौ उदय जानियौ।
कर्मों कौ बंध मिटानें हैं, गुरु कौ ध्यान लगानें हैं॥
कर्मों कौ जालौ तौ धर्मों सें टालौ।
त्याग तपस्या रचानें हैं, कर्मों कौ हवन करानें हैं॥ जेठमास...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर नें हमखों दऔ इत्तौ, कौंनउं कौ दम नंई थौ जित्तौ।
गुरु खों शीश झुकानें हैं, गुरुवर के भजन सुनानें हैं॥
जो कच्छू मांगौ तौ गुरुवर सें मांगौ।
गुरु सें आश लगानें हैं, अपनौ भाग्य जगानें हैं। जेठमास...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम की बस खुलें दुकानें, रत्नत्रय के नोट कमानें।
और कछू नंई चानें हैं, गुरु के गुण बस गानें हैं॥
गुरु के चरणा और गुरु की शरणा।
गुरु की भक्ति रचानें हैं, अपने सु-व्रत सजानें हैं॥ जेठमास...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-ओ! जोगी तेरौ...)

ओ! विद्या गुरुवर जी अइऔ, तुम तौ मोरे गाँव।
इंतजार में कटै उमरिया, मैं तौ पर लूं पांव॥ ओ! विद्यागुरु...
ऊँची नीची घाटी मिलेगी, चंदन माटी कितउं मिलेगी।
कितउं चिलकतौ घाम मिलेगौ, कितउं पे जूड़ी छाँव॥ ओ! विद्यागुरु...
कब सें टेरें गाँव नगरिया, अनजानी सी हाट बजरिया।
रंग बिरंगी दुनियाँ तजकें, भूल नें जइयौ गाँव॥ ओ! विद्यागुरु...
तोय गाँव के मंदिर टेरें, चौके चौक चौकियाँ हेरें।
कितउं करौ आहार गुरुजी, कितउं धुलइयौ पाँव॥ ओ! विद्यागुरु...
दीया बाती पूजा थाली, बच्चे बूढ़े भक्त व माली।
'सुव्रत' को भी आशीष देंकें, दइयौ अपनी छाँव॥ ओ! विद्यागुरु...

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन—५०

स्थापना

(लय-देख तेरे संसार की हालत, क्या हो गई भगवान)

अंगना दोरौ घर भर सज गऔ, सज गऔ है गलियार।
के आ गऔ खुशियों कौ त्यौहार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥
बब्बा नच रये बूढ़ी नच रयीं, नच रऔ है घरबार।
के आ गऔ खुशियों कौ त्यौहार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥
हमनें जैंसइ गुरु खों टेरौ, गुरु नें सांचउं हमखों हेरौ।
हमें कछू नंई फिर तौ सूझौ, सो तौ झट्टइ गुरु खों पूजौ॥
अब तौ गुरुवर कछू नें सोचौ, करौ भक्ति स्वीकार।
के हम तौ कर रये जय-जयकार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

भटक रये हम जनम-जनम सें, गुरुवर मिल गए पुन्न करम सें।
अब तौ हमनें तुमें पुकारौ, गुरुवर हमखों झट्टइ तारौ॥
अब तौ गुरुवर कछू नें सोचौ, कर दो बेडा पार।
के हम तौ कर रये जय-जयकार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नांय-मांय हम ताक-झांक कें, जल भुंझ रये हैं ढके राख सें।
फिर भी गुरुवर हमें निहारौ, दैकें छंइयां झट्ट समारौ॥
अब तौ गुरुवर कछू नें सोचौ, कर तौ दो उपकार।
के हम तौ कर रये जय-जयकार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमनें जो भी कबउं विचारौ, गुरुवर नें वौ सब दै डारौ।
हल्की पर गई ओली हमरी, खूब कृपा है हम पर तुमरी॥
अब तौ गुरुवर कछू नें सोचौ, कर तौ दो उद्धार।
के हम तौ कर रये जय-जयकार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ओली मुंदरी ब्याव सगाई, हल्दी मेंदी तुमें नें भायी।
लोग-लुगाई मौंड़ा-मौंड़ी, काम कामना सबरी छोड़ी॥
अब तौ गुरुवर कछू नें सोचौ, करलो निज सें ब्याव।
के हम तौ कर रये जय-जयकार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

भिक्षा लेंकें शिक्षा देंनें, सबकी खूब परीक्षा लेंनें।
हमें नें कौनउं हिस्सा लेंनें, विद्यागुरु सें दीक्षा लेंनें॥
अब तौ गुरुवर कछू नें सोचौ, दो दीक्षा संस्कार।
के हम तौ कर रये जय-जयकार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ दिन में पैदा हो रयी, फिर भी उजयारे खों रो रयी।
तुमनें जनम रात में धारौ, फिर भी पा लऔ धर्म उजारौ॥
अब तौ गुरुवर कछू नें सोचौ, दूर करौ अंधयार।
के हम तौ कर रये जय-जयकार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप बुराई सब खा पी रये, सो सब धुंधा-धुंधा से जी रये।
कर्मों कौ बोझा सौ ढो रये, कर्म काटवें खों हम रो रये॥
अब तौ गुरुवर कछू नें सोचौ, हरौ कर्म कौ भार।
के हम तौ कर रये जय-जयकार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानगुरु की छंइयां पाकें, त्याग तपस्या ध्यान लगा कें।
बाँट रये सबखों जिनवाणी, करौ कृपा विद्या गुरु ज्ञानी॥
अब तौ गुरुवर कछू नें सोचौ, हरौ कर्म कौ भार।
के हम तौ कर रये जय-जयकार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीरथ पाँचों धाम हमारे, गुरुवर हैं प्राणों सें प्यारे।
हम का उनखों भेंट चढ़ाएँ, करें नमोस्तु शीश झुकाएँ॥
अब तौ गुरुवर कछू नें सोचौ, दै दो आशीर्वाद।
के हम तौ कर रये जय-जयकार, के आ गए गुरवर अपने द्वार॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(लय-मम्मी मोरी दीक्ष/ मम्मी मोरी शादी कर...)

मम्मी मोरी दीक्षा करा दो, विद्यागुरु के संघ में।
अब तौ मोरौ मन नंई लग रऔ, दुनियाँ के रंग ढंग में॥
नें तौ पइसा मोय कमानें, नें तौ महल बनानें।
नें तौ गृहस्थी मोय वसानें, नें तौ ब्याव रचानें॥
पिछी कमडल लै कें डोलें, विद्यागुरु के संग में।
अब तौ मोरौ...॥
नें तौ मोखों उन्ना चानें, नें तौ बार कटानें।
नें विस्तर पे सोंनें मोखों, नें तौ मोय नहानें॥
नगन दिगम्बर होकर कें तौ, बन जाऊँ निर्ग्रंथ मैं।
अब तौ मोरौ...॥
मैं आहार करूँ अंजलि सें, पैदल-पैदल चालूँ।
केशलौंच करकें हाथों सें, शुद्धातम खों ध्यालूँ॥
'विद्यागुरु' के 'सुव्रत' मुनि बन, रम लूँ परमानंद में।
अब तौ मोरौ...॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विद्यागुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री विद्या गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

मुनिश्री सुव्रतसागरजी पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

बचपन से हम ज्ञान बिना ही, भटक रहे बनके बच्चे।
जनम-जनम के पाप मिटाने, आए हैं बनने सच्चे॥
जन्म जरा दुख मरण नशाएँ, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये जल अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव की ज्वाला धधक रही है, झुलस रहे हैं खड़े-खड़े।
शीतल वाणी चंदन सम है, छाया पाने चरण पड़े॥
भव का ये संताप मिटाएँ, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु चंदन अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत-विक्षत यह जीवन अपना, कैसे इसे सँवारे हम।
व्रत संयम से रक्षित होने, तुमको रोज पुकारें हम॥
तुम जैसे सु-व्रत हम पाएँ, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु अक्षत अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सोना चाँदी रुपया पैसा, जिन्हें चाहिए दो उनको।
सुन्दर काया जिन्हें सुहाये, कामदेव कर दो उनको॥
तुमसे तुमको माँग रहे हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु हम पुष्प चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन बहुत तरह के भोगे, फिर भी तो होती इच्छा।
भूख मिटे ना प्यास मिटे ना, अब कैसे होगी दीक्षा॥

निज रस चखने दीक्षा धर लें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु नैवेद्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन करें आप सम उज्ज्वल, जिससे चंदा शर्माये।
ज्ञान तेज इतना चमकाएँ, सूरज फीका पड़ जाए॥
अंतर्मन तुम सम उज्ज्वल हो, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये दीप जलाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

संकट उपसर्गों में भी तुम, कर्म काटने चलते हो।
खिन्न न होते प्रसन्न रहते, समता धरकर खिलते हो॥
हम भी दुष्कर्मों को सह लें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये धूप जलाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर डोर तुम बन जाओ तो, हम पतंग बन उड़ लेंगे।
अगर आप पतवार बनो तो, भवसागर हम तिर लेंगे॥
सदा आपके साथ रहें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये फल अर्पित हैं, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सु-व्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

मुनिवर की पूजन करें, मन में अति हर्षाएँ।
नमोऽस्तु कर जयमालिका, आओ हम सब गाएँ॥

(शंभू)

हे मुनिवर तेरे चरणों में, हम श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
जो जिनशासन के बेटे हैं, हम उनको शीश झुकाते हैं॥
जो विद्या गुरु के शिष्य रहे, पर अपने भाग्य सितारे हैं।
ऐसे सुव्रतसागर मुनिवर, सचमुच ही हमको प्यारे हैं॥१॥

है ग्राम पीपरा जन्म लिया, उपकृत फिर सागर जिला किया।
पितु साबूलाल माँ चन्द्रानी को, खुशियाँ देकर धन्य किया॥
भाई सुनील के लघु भ्राता, तीनों बहनों के हो प्यारे।
लौकिक शिक्षा भी उच्च कोटि की, कॉलिज में भी थे न्यारे॥२॥
जब सागर के भाग्योदय में, विद्या गुरुवर के दर्श किए।
तब अन्ठानवें में गुरुवर से, व्रत ब्रह्मचर्य 'राजेश' लिए॥
फिर कृपा बड़ेबाबा की पा, संघस्थ हुए फिर गमन किया।
नेमावर में विद्यागुरु ने, दे दीक्षा 'सुव्रत' बना दिया॥३॥
सु-व्रत पा सुव्रतसागर जी, अपने व्रत सुव्रत बना रहे।
अपनी मुनि चर्या पालन कर, अंतस में डुबकी लगा रहे॥
प्रभु की भक्ति में डूबे तो, विधान अनेकों रचा दिए।
श्री पूज्य बड़ेबाबा विधान रच, अतिशय बाबा के बता दिए॥४॥
जिनचक्र विधान में चौबीसों, जिनवर की महिमा दिखलाई।
श्री सिद्धचक्र अरिहंतचक्र में, शुद्धातम सी झलकाई॥
भक्तामर एकीभाव और, कल्याणमंदिर विधान रचे।
रच समवसरण आदि अनेक, शायद कोई ना शेष बचे॥५॥
रच बुंदेली पूजन विधान, बुंदेली संत प्रसिद्ध बने।
भक्तों को भक्ति-अर्चना को, श्रीजिनवाणी के छन्द बने॥
ऐसे अनेक पूजा विधान रच, पद्यानुवाद कई बना रहे।
जिनका आश्रय पा भव्य जीव, खुद को धर्मात्मा बना रहे॥६॥
सुन स्वाध्याय प्रवचन इनके, संस्कारी रूप सज जाते हैं।
ऐसे बुंदेली संत हमें, जीवन का लक्ष्य बताते हैं॥
हे! मुनिवर 'सुव्रतसागरजी', हमको भी सु-व्रत दान करें।
'संजय' का नमोऽस्तु स्वीकारें, सुव्रत धर कल्याण करें॥७॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

तुम जैसे हम भी धरें, विद्या के भण्डार।
विश्व शान्ति के भाव से, करें शान्ति जल धार॥

(शान्तये शान्तिधारा)

माँ जैसे बच्चे तुम्हें, करें सदा ही याद।
सो नमोऽस्तु सादर करें, देना आशीर्वाद॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

आरती-विद्या

०१. ओम् जय विद्यासागर (लय-ओम् जय महावीर प्रभो...) 158
०२. चौपाई (लय-इह विधि मंगल आरती कीजे) 158
०३. महा आरति गुरु की करने (लय-जीवन है पानी की बूँद) 159
०४. गुरु की जय जय बोल के (लय-करें भगत हो आरती) 159
०५. विद्यासागर गुरु हमारे (लय-रात गुरु सपने में) 160
०६. कर रहे हैं हम गुरु की (लय-हम वफा करके भी) 160
०७. तुम भी करो हम भी (लय-हम तो चले आए) 161
०८. आओ! रे आओ रे- २ 161
०९. विद्या गुरु जग भूप हैं (लय-भक्ति बेकरार है आनंद अपार) 162
१०. दीपक जला के प्रेम के (लय-सद्गुरु तुम्हारे प्यार ने) 162
११. आरतिया...आरतिया... (लय-केशरिया केशरिया...) 163
१२. दीपों की थाल सजाई (लय-गुरुवर हमको दीजि,..) 163
१३. बुझना नहीं दीपक सा उजलना(लय-पाना नहीं जीवन...) 164
१४. हम करें आरति आज(लय-) 164
१५. विद्या गुरुवर वसुन्धरा पर (ज्ञानोदय) 165
१६. गुरुवर को माथा झुकाएँगे (लय-छोटा सा मंदिर बनाएंगे) 165
१७. आरतिया-आरतिया-आरतिया (लय-कुर्बानी कुर्बानी...) 166
१८. हम सब आज गुरु, आरती (लय-गुरुवर आज मेरी...) 166
१९. आरतिया-आरतिया-आरतिया। (लय-कुर्बानी कुर्बानी...) 167
२०. हम सब आज गुरु, आरती (लय-गुरुवर आज मेरी...) 167
२१. चल रे ! गुरु-दर्शन को (लय-बम बम बम बम बंबई) 168
२२. बगल में पिच्छी, हाथ में कमण्डल (लय-राम जी की...) 168
२३. सबसे सुन्दर है गुरु नाम (लय-जग में सुंदर हैं दो नाम) 169
२४. विद्यागुरुवर न्यारे (लय-संसार है इक नदिया) 169
२५. आरति-आरति आरति-रे (लय-रंगमा रंगमा रंगमा रे) 170
२६. दीये जले चारों ओर रे (लय-नाचै जौ मन कौ मोर रे...) 170

२७. माथा टेको गीत गाओ (लय-कुंडलपुर की धूल सिर)171
२८. ज्योतिर्मय विद्यागुरु (लय-आत्म शक्ति से ओत प्रोत...) 171
२९. दीप जले तेरे द्वार (लय-ताली बजा के बोल कि बाबा) 172
३०. गुरु-आरति को दीये जले (लय-बहुत प्यार करते हैं...) 172
३१. गुरुवर तेरी मूरत को (लय-माता तू दया करके) 173
३२. जय जय गुरु की बोल रे बाबा (लय-भक्ति कर अनमोल) 173
३३. जय जय जय जय बोलो (लय-बम बम बम बम बंबई) 174
३४. कभी तो ये गुरुवर मोती बन (लय-कभी तो ये बाबा) 175
३५. दीपक ही दीपक जलायेंगे (लय-पलकें ही पलकें...) 175
३६. देवा हो देवा जय गुरुदेवा (लय-देवा हो देवा, गणपति देवा...) 176
३७. आरती...हो...आरती... (लय-पंखिड़ा हो पंखिड़ा...) 176
३८. आतम की ज्योति जलाय (लय-मंदिर हमारे में आ...) 177
३९. हाथों में लैं कैं दिया बाती (लय-मंदिर में बैठी चार...)177
४०. उतार लइयौ आरती गुरु की (लय-उतार दइयौ भव सागर...) 178
४१. विद्या ज्योति बिन गुजर गईं (लय-सोते सोते में निकर गई...) 178
४२. कर लइयौ गुरुवर की आरति (लय-काट लेओ करमन के...)179
४३. नन्हीं-नन्हीं थालियाँ (लय-नन्हीं-नन्हीं कलियां...) 179
४४. जगमग ज्योति, झिलमिल बाती (लय-गुरु मन वसिया...) 180
४५. गुरु भक्तों को गुरु मिले तो (लय-ऊँचे टीले पर गैया का...) 180
४६. कभी दीप बनके, कभी ज्योति (लय-कभी राम बनके...) 181
४७. हो ! विद्या गुरुवर, जय-जय गुरुवर ! (लय-गरवा...) 181
४८. कितनी प्यारी ज्योति तुम्हारी (लय-कितना प्यारा द्वार...) 182
४९. गुरुवर की हो रही जय-जय (लय-कैंसें धरै मन धीरा रे...) 182
५०. गुरु भज लो, गुरु भजलो (लय-शुद्ध गीता) 183
५१. मुनि सुव्रतसागरजी महाराज की आरती 184

१. ओम् जय विद्यासागर

(लय-ओम् जय महावीर प्रभो...)

ओम् जय विद्यासागर, गुरुवर-जय विद्यासागर।
चलते फिरते तीरथ-२, आगम के आगर॥
विद्यासागर जग में, संयम से महके-गुरुवर-संयम से...
जो भी करते आरति-२, सूरज से चमके। ओम् जय...
हाथ कमण्डल पिच्छी, रूप निरम्बर है-गुरुवर-रूप...
भू विस्तर कर तकिया-२, चादर अम्बर है। ओम् जय...
ज्ञान सिंधु के अनुचर, महावीरा नन्दा-गुरुवर महावीरा...
वीतरागमय मुद्रा-२, हरते भव फन्दा। ओम् जय...
ज्ञानी ध्यानी त्यागी, तुम हो वैरागी-गुरुवर-तुम हो...
नायक! पालक! रक्षक-२, शिव सुख के रागी। ओम् जय...
मेरा क्या सब तेरा, 'सुव्रत' भी तेरा-गुरुवर-जग भी तो...
कृपा करो मुस्का के, हर लो अँधेरा। ओम् जय...

२. विद्या गुरु की आरती कीजे

(लय-इह विधि मंगल आरती कीजे)

विद्या गुरु की आरती कीजें, विद्या ज्ञान सुधा रस पीजे।
आरती करके शीश नवाओ, अपना जीवन सफल बनाओ॥
पहली आरती पद सूरि की, तारो उसको जिसे भव-भीति।
दीक्षा दे शिव-पथ पै चलाओ, जनम-मरण दुख दूर कराओ॥
दूजी आरती पद उवझाया, अघ-अज्ञान तिमिर को हटाया।
मोह तिमिर हम सबका हटाओ, 'सुव्रत' दर्शन-ज्ञान दिलाओ॥
तीजी आरती पद साधु की, ज्ञान-ध्यान तप रत रहने की।
भवदुख नाशो शिव को दिलाओ, निजपर की पहचान कराओ॥
चौथी आरती गुरु उपकारी, हम सब के तुम हो हितकारी।
जग को हित की राह दिखा दो, खुद से खुद कर मिलन करा दो॥
पाँचवी आरती तीर्थ निर्माता, तुमसे है भव-भव का नाता।
अपने चरण शरण में बुला लो, हमको अपना शिष्य बना लो॥
ऐसे गुरु की आरति कीजे, एक रूप में कई लख लीजे।
आरती करके शीश नवाओ, 'सुव्रत' जीवन सफल बनाओ॥

३. महा आरति गुरु की करने

(लय-जीवन है पानी की बूंद)

महा आरति गुरु की करने, भाव बनाये रे।
थाली भर थाली हाँ-हाँ-२, हम दीप जलाये रे॥ महा आरती...
गुरुवर का सच्चा द्वारा, सबसे अच्छा है न्यारा।
बड़भागी शरणा पाते, गुण गाता है जग सारा॥
चरणों में माथा हाँ-हाँ-२, हम सदा झुकाये रे। महा आरती...
धर्म ध्वजा तुम फहराते, संत शिरोमणि कहलाते।
शिष्य ज्ञानसागर के हो, हम सबको गुरु तुम भाते॥
विद्या के सागर हाँ-हाँ-२, शिव राह दिखाये रे। महा आरती...
ज्ञानी तुमको ज्ञान कहें, ध्यानी तुमको ध्यान कहें।
नाम आपके लाखों हैं, भक्त तुम्हें भगवान कहें॥
गुरुवर के दर्शन हाँ-हाँ-२, सुख शान्ति दिलाये रे। महा आरती...
दया दयोदय के दाता, भाग्योदय के निर्माता।
सिद्धोदय सर्वोदय दे, गाते ज्ञानोदय गाथा॥
करुणा के दाता हाँ-हाँ-२, दुख दूर भगाये रे। महा आरती...
हमको कुछ भी ज्ञान नहीं, अण्टी में कुछ दाम नहीं।
फिर भी आशा से आये, दे दो अब मुस्कान धनीं॥
'सुव्रत' के स्वामी हाँ-हाँ-२, किरपा बरसाये रे। महा आरती...

४. गुरु की जय जय बोल के,

(लय-करें भगत हो आरती माई दोई बिरियां)

गुरु की जय जय बोल के, करो आरतिया। आरतिया-४
अँखियाँ मन की खोल के, करो आरतिया॥ जय-जय ...
गुरुवर हमरे मात-पिता पालक स्वामी।
सभी तीर्थ हैं गुरु चरणों में कल्याणी ॥
विद्या गुरु हैं नाथ मोक्ष के सारथिया। अँखियाँ मन की...॥
सूरज जैसा तेज चाँद से शीतल हैं।
हीरे से मजबूत मोम से कोमल हैं॥
हरते सबके पीर, गुणों के पारखिया। अँखियाँ मन की...॥

ज्ञानी के गुरुज्ञान ध्यान ध्यानी सच्चे।
भक्तों के भगवान सुखों के हैं गुच्छे ॥
हम सबके आधार, आतमा के रसिया। अँखियाँ मन की...॥
हृदय-दीप में भक्ति जोत श्रद्धा लाएँ।
टूटे-फूटे सुर छन्दो में गुण गाएँ॥
सुनलो अरज पुकार पुकारें भारतिया। अँखियाँ मन की...॥
मुँह माँगा वरदान मिला श्रद्धालू को।
'सुव्रत' ओर निहारो आप दयालू हो ॥
दे दीजे मुस्कान पूर्ण हो आरतिया। अँखियाँ मन की...॥

५. विद्यासागर गुरु हमारे

(लय-रात गुरु सपने में...)

आओ गुरु की आरति गाएँ, खुशी-खुशी ये पर्व मनाएँ।
महिमा गाएँ-धूम मचाएँ ॥ अरा-रा-रा-रा...॥ आओ...
विद्यासागर गुरु हमारे, जग-जीवों के पालन-हारे।
सम्यग्ज्ञानी-गुरु कल्याणी। अरा-रा-रा-रा...॥ आओ...
गुरु ऐसे जैस प्रभु वीरा। रत्नत्रय के चमकित हीरा।
ममताहारी-समताधारी। अरा-रा-रा-रा...॥ आओ...
सबको देते ज्ञान गुरुजी। हर लेते अज्ञान गुरुजी।
राह बताएँ-पाप छुड़ाएँ। अरा-रा-रा-रा...॥ आओ...
तीर्थंकर से तीर्थ गुरुजी, हरते सबकी पीर गुरुजी।
गुरु वैरागी-आतम स्वादी। अरा-रा-रा-रा...॥ आओ...
मुनिसुव्रत पर किरपा कर दो, रत्नत्रय से झोली भर दो।
उर में आओ-गुरु मुस्काओ। अरा-रा-रा-रा...॥ आओ...

६. कर रहे हैं हम गुरु की आरति

(लय-दिल के अरमां...)

कर रहे हैं हम गुरु की आरति।
संग हमको ले चलो शिव सारथी॥
श्रद्धा की बाती हृदय का दीप है-२
आँखों की ज्योति तुम्हीं को निहारती॥ कर रहे हैं...

आप हो तारण तरण संसार के-२
दृष्टि भव से भक्त जन को तारती॥ कर रहे हैं...
शायद हमको ना मिले फिर ये शरण-२
आतमा तुमको सदा ही पुकारती॥ कर रहे हैं...
गीत होठों पर हृदय में नाम हो-२
धड़कनों में हो सदा गुरु -भारती॥ कर रहे हैं...

७. तुम भी करो हम भी करें गुरुवर की आरती

(लय-हम तो चले आए...)

तुम भी करो हम भी करें, गुरुवर की आरती।
श्री विद्यासागर जी शिवपुर के सारथी॥
आओ! आओ! हिल-मिल के, हम भी पूजें चरणा।
पाँचों धामों के तीरथ, गुरुवर की शरणा॥
तुम भी गीत गाओ रे, हम भी गीत गाएँ।
गुरुवर की किरपा, भव-सागर से तारती॥ तुम भी करो...
चंदा ने चम चम ये थालियाँ सजायीं।
सूरज ने झिल-मिल ये किरणें भिजायीं॥
तुम भी दीप ले लो रे, हम भी दीप ले लें।
दीपों की ज्योति भी, इनको निहारती॥ तुम भी करो...
सुर-इन्द्र गुरुवर के, दर्शन को तरसें।
सुव्रत करके आरति, मन ही मन हरषें॥
जाने ना सुर छन्द, भक्ति ना जानें।
फिर भी गुरु चरणों में, झुकते हम भारती॥ तुम भी करो...

८. आओ! रे आओ -२

(लय-)

आओ! रे आओ- २, गुरुवर की आरति गाओ रे!
गुरुवर के दर्शन हमको मिले हैं, दर्शन से मुरझा, चेहरे खिले हैं।
पूजन कर किस्मत जगाओ रहे ! आओ! रे आओ॥
गुरुवर का द्वारा सबसे है न्यारा, चरणों में है ज्ञानामृत का भण्डारा।

शरणा से जीवन सजाओ रे !, आओ ! रे आओ॥
गुरुवर की कृपा होली दिवाली, गुरुवर के मन्त्रों से पाओ खुशहाली॥
भक्ति में भक्तों रम जाओ रे ! आओ ! रे आओ॥
भक्ति से मन को मन्दिर बना के, शक्ति से तन को अपने तपा के।
आतम की ज्योति जलाओ रे ! आओ ! रे आओ॥

९. विद्या गुरु जग भूप हैं

(लय-भक्ति बेकरार है आनंद अपार है...)

विद्या गुरु जग भूप हैं, रत्नत्रयी स्वरूप हैं।
आओ गुरु की करें आरति, तीर्थंकर के दूत हैं॥

पहले शिष्य ज्ञान गुरुवर के, दूजी ये सन्तान हैं। दूजी...
तीजे हैं परमेष्ठी न्यारे, चतुर्संघ की शान हैं॥ चतुर्संघ...
पंचाचारों के आचारी, षट्-आवश्यक पालते। षट्...
सातों भय से मुक्त आप हो, आठ कर्म को घातते॥ आठ...
नन्त गुणों के स्वामी जी की, करें आरति आज हो। करें ...
भाव-भक्ति का दीप जलाने, आयी भक्त समाज हो॥ आयी...
बाहर का हम दीप जलाते, आप जला दो आतम का। आप...
ज्ञान-दीप से दिखे राह तो, छोर मिले भव कानन का॥ छोर...
अपनों की ये भीड़ लगी पर, सभी खीर में सौंझ है। सभी...
हमें महेरी ना खाना सो, गुरु पद में ही मौज है। गुरु...
विद्या गुरु जग भूप हैं...

१०. दीपक जला के प्रेम के,

(लय-सद्गुरु तुम्हारे प्यार ने...)

जय गुरु, जय गुरु, गूँज से, गूँजे सकल जहान्।
गुरु के चरणा पूज के, हम भी बनें महान्॥
दीपक जला के प्रेम के, गा के बजा के बाज।
सद्गुरु तुम्हारी आरति, सबने उतारी आज॥
विद्या गुरु की आरती, हमने उतारी आज॥
विद्या गुरु के ज्ञान का, जब से मिला प्रकाश।

तब से अँधेरा मोह का, होता रहा विनाश॥
सूरज समा के दीप में, आया धरा पै आज। विद्या गुरु की...
विद्या गुरु के ध्यान से, तीरथ बनी जमीन।
चरणों को छू वसुन्धरा, पावन बनी कुलीन॥
चंदा तुम्हारे दर्श को, थाली बना है आज। विद्या गुरु की...
विद्या गुरु की साधना, करती बड़े कमाल।
भक्तों के छोटे दिल बसे, सबको करे निहाल॥
दुखियों को तेरे साथ से, सुख का मिले जहाज। विद्या गुरु की...

११. आरतिया३आरतिया३

(लय-केशरिया केशरिया...)

आरतिया...आरतिया...आज उतारें हम आरतिया।
गुरु-आरतिया मुनि-आरतिया॥ आज उतारें हम...
विद्यासागर गुरु हमारे, ज्ञान सिन्धु के शिष्य निराले-२
भक्तों के शिव सारथिया - सारथिया॥ आज उतारें हम...
महाव्रती रत्नत्रयधारी, नगन निरम्बर पिच्छीधारी-२
निज आतम के गुरु रसिया - गुरु रसिया॥ आज उतारें हम...
तुमसे इत्र महकना सीखे, सूरज चाँद चमकना सीख-२
हम सीखें जिन भारतिया - भारतिया। आज उतारें हम...
भक्त हजारों तुमने तारे, हम भी आये द्वार तिहारे-२
पार मिले भव सागरिया-सागरिया॥ आज उतारें हम...
गुरु-आरतिया मुनि-आरतिया। आज उतारें हम...

१२. दीपों की थाल सजाई

(लय-गुस्वर हमको दीजिए...)

दीपों की थाल सजाई, विद्यागुरुवर के द्वार।
भक्त उतारें आरति, करके जय-जयकार॥ २
चौथे काल सरीखा देखो, लगा नजारा यहाँ मजा।
तीर्थंकर से गुरुवर लगते, समवसरण सा संघ सजा॥
सब आओ! आओ! भक्तो!-२, अब पाओ पुण्य बहार। भक्त...

जैसे सूरज के आने पर, चाँद सितारे दिखें नहीं।
वैसे गुरु के मुस्काने पर, दुख के दिन भी टिकें नहीं॥
अब आओ! गुरु वस जाओ-२, पापों का हो संहार। भक्त...
धुआँ नहीं ना जोत दिखे पर, सदा रोशनी होती है।
अध्यातम का दीप जले तो सदा दिवाली होती है।
मिथ्यातम हरो हमारा, ओ! करुणा के अवतार। भक्त...
गम की रात अँधेरी में भी, डरें नहीं हम हिम्मत दो।
आज नहीं तो कल हल होगा, सब सहने का सम्बल दो॥
बस इतनी सी इच्छा है, दे दो मुस्कान फुहार। भक्त...

१३. बुझना नहीं दीपक सा उजलना

(लय-पाना नहीं जीवन को बदलना)

बुझना नहीं दीपक सा उजलना है आरति।
विद्या की जोत जलाकर अपनी, चमकना है आरति॥
बहुत सरल जड़ दीप जलाना, हृदय-दीप आसान नहीं।
हृदय जोत जिसकी जल जाए, उसे दूर भगवान नहीं॥
जोत जलाने सब गुरुवर को-२, सौंपना है आरति। बुझना नहीं...
बस अपना गुरुदीप जला दो, और नहीं कोई इच्छा।
जैसा हमको रखना रखलो, दे डालो हमको दीक्षा॥
खुद ही गुरु- पद शिक्षा जल से, निखरना है आरति। बुझना नहीं...
गुरु विद्या बिन ज्ञान लिया तो, अपना ना कल्याण हुआ।
जनम-मरण करके अब तक ना, अपना महा प्रयाण हुआ।
सम्यक् तप से कर्म जलाने, तपना है आरति। बुझना नहीं...

१४. हम करें आरति आज

(लय-

हम करें आरति आज, मंगल होवेगा। होवेगा-होवेगा-२
हम करें...
विद्यासागर गुरुवर साँचे, दर्शन से मन मोरा नाँचे-२
सब झूमे भक्त समाज-मंगल होवेगा ॥ होवेगा...

बाजे झालर घण्टी ताली, भक्त मनाएँ आज दिवाली-२
अब मिले राम सरताज-मंगल होवेगा॥ होवेगा...
बनें सीप हम गुरु-पद मोती, जले हृदय में गुरु की ज्योति-२
अब होंगे पूरे काज - मंगल होवेगा॥ होवेगा...
संयम पालो करो साधना, दया धर्म की करो गर्जना-२
हो! तारणतरण, जहाज-मंगल होवेगा॥ होवेगा...
हम करें आरति आज मंगल होवेगा। होवेगा...

१५. विद्या गुरुवर वसुन्धरा पर (ज्ञानोदय)

विद्या गुरुवर वसुन्धरा पर-२, ज्ञानोदयी प्रभात रे।
भक्त आपकी करें आरति, सदा झुकायें माथ रे॥
सूर्य आपकी करें आरति, सागर चरण धुलाते हैं।
चन्दा तारे और बहारें, सादर गीत सुनाते हैं।
तो हम क्यों ना पुण्य कमायें-२, करके गुरु की बात रे। भक्त आपकी...
भक्त उतारें मात्र आरति, आप उतारो भव से पार।
तभी विश्व में गूँज रही है, गुरु महिमा की जय-जयकार॥
उसको होगा बाल न बाँका-२, जिसके सिर गुरु-हाथ रे। भक्त आपकी...
दीप ज्योति पर मरे पतंगा, वाह! समर्पण तो देखो।
गुरु आज्ञा पर यथा समर्पण, तो कल्याणक हों देखो॥
बहे प्रेम की गंगा स्वामी-२, सुख की हो बरसात रे। भक्त आपकी...
भक्तों का धरती पर डेरा, गुरु आसन है उच्च महान।
श्रद्धा दीप बीच में है सो, पाये भक्तों ने भगवान्॥
श्रद्धा डोर कभी ना टूटे-२, साहस दो दिन रात रे। भक्त आपकी...

१६. गुरुवर को माथा झुकाएँगे

(लय-छोटा सा मंदिर बनाएंगे)

गुरुवर को माथा झुकाएँगे, आरतिया गाएँगे।
आरतिया गाएँगे. खुशियाँ मनाएँगे-२॥ गुरुवर को...
भक्ति के दीपक हाथों में लेकर हाथों में लेकर। हाँ-हाँ, हाथों...
चरणों की महिमा सुनाएँगे, पूजा रचाएँगे। गुरुवर को...

सुज्ञान सूरज विद्या गुरुजी-विद्या गुरुजी-हाँ-हाँ, विद्यागुरुजी
हमको भी ज्ञान दिलाएँगे-अघ-तम नशाएँगे। गुरुवर को...
जिसने भी जीवन गुरुवर को सौंपा, गुरुवर को सौंपा। हाँ-हाँ, गुण...
उसके गुरु पाप नशाएँगे-मोक्ष घुमाएँगे। गुरुवर को ....
गुरु भक्तों की अर्जी ये सुनके, अर्जी ये सुनके। हाँ-हाँ, अर्जी...
गुरुवर जी मन्द मुस्काएँगे-मन में समाएँगे। गुरुवर को...
गुरुवर को माथा झुकाएँगे-आरतिया गाएँगे।

१७. आरतिया-आरतिया-आरतिया।

(लय-कुर्बानी कुर्बानी...)

आरतिया-आरतिया-आरतिया,
हमने उतारी गुरु-आरतिया-२॥

विद्यागुरुवर जग के नाथ-जिनको झुकता सबका माथ।
रूप निरम्बर उपकारी!, गुरुवर देते सबको साथ॥ आरतिया...
उपचारक हैं गुरु के हाथ-जनम मरण के रोग नशात।
गुरु आज्ञा जिनने पाली, वे ही सुख पाते सौगात॥ आरतिया...
गुरु सूरज चमके दिन-रात, जिन्हें रोशनी गुरु की भात।
मुक्ति स्वयंवर के दूल्हे, बन जाते सजती बारात॥ आरतिया...
गुरु-बादल की गजब विशात, प्रेम-क्षेम करुणा बरसात।
गुरुकृपा जिस पर बरसे, कर्म धुलें हो नयी प्रभात॥ आरतिया...
सुनो हमारी भी गुरु बात, करवा दो शिव-पथ शुरुआत।
चरण-शरण मुस्कान मिले,भक्त सदा जिसको ललचात॥ आरतिया...

१८. हम सब आज गुरु, आरती

(लय-गुरुवर आज मेरी...)

हम सब आज गुरु, आरति को आए हैं।
जगमग जगमग हो, ज्योति जलाए हैं।
थाली गगन सी दीप धरा सा, ज्योति सूर्य सी लाए दासा।
भक्ति भाव में-हो, हम हरषा, हैं॥ हम सब आज गुरु...
सब परमेष्ठी सब तीर्थंकर, कुंदकुंद से सन्त दिगम्बर।
विद्यागुरु में-हो, आन समाए हैं॥ हम सब आज गुरु...

गंगा पुजती गंगा जल से, सूर्य पूजे दीपक से जैसे।
त्यों गुरु को हम हो, दीप दिखाए हैं। हम सब आज गुरु...
गुरु पद वैभव बहुत विशाला, हृदय हमारा छोटा लाला।
इसमें गुरुजी-हो, आन मुस्काए हैं। हम सब आज गुरु...

१९. आरतिया-आरतिया-आरतिया।

(लय-कुर्बानी कुर्बानी...)

आरतिया-आरतिया-आरतिया, हमने उतारी गुरु-आरतिया-२॥
विद्यागुरुवर जग के नाथ-जिनको झुकता सबका माथ।
रूप निरम्बर उपकारी!, गुरुवर देते सबको साथ॥ आरतिया...
उपचारक हैं गुरु के हाथ-जनम मरण के रोग नशात।
गुरु आज्ञा जिनने पाली,वे ही सुख पाते सौगात॥ आरतिया...
गुरु सूरज चमके दिन-रात, जिन्हें रोशनी गुरु की भात।
मुक्ति स्वयंवर के दूल्हे, बन जाते सजती बारात॥ आरतिया...
गुरु-बादल की गजब विशात, प्रेम-क्षेम करुणा बरसात।
गुरुकृपा जिस पर बरसे, कर्म धुलें हो नई प्रभात॥ आरतिया...
सुनो हमारी भी गुरु बात, करवा दो शिव-पथ शुरुआत।
चरण-शरण मुस्कान मिले,भक्त सदा जिसको ललचात॥ आरतिया...

२०. हम सब आज गुरु, आरती

(लय-गुरुवर आज मेरी...)

हम सब आज गुरु, आरति को आए हैं।
जगमग जगमग हो, ज्योति जलाए हैं॥
थाली गगन सी दीप धरा सा, ज्योति सूर्य सी लाए दासा।
भक्ति भाव में-हो, हम हरषाए हैं॥ हम सब आज गुरु...
सब परमेष्ठी सब तीर्थंकर, कुंदकुंद से सन्त दिगम्बर।
विद्यागुरु में-हो, आन समाए हैं॥ हम सब आज गुरु...
गंगा पुजती गंगा जल से, सूर्य पूजे दीपक से जैसे।
त्यों गुरु को हम हो, दीप दिखा, हैं। हम सब आज गुरु...
गुरु पद वैभव बहुत विशाला, हृदय हमारा छोटा लाला।
इसमें गुरुजी-हो, आन मुस्काए हैं। हम सब आज गुरु...

२१. चल रे ! गुरु-दर्शन को

(लय-बम बम बम बम बंबई...)

चल रे ! गुरु-दर्शन को, चल रे ! गुरु-दर्शन को।
विद्यागुरु की आरति करके, पावन कर तन-मन को॥ चल रे!...
हमने सारी दुनियाँ देखी, गुरुवर सा ना देखा।
तभी शीघ्र गुरु के चरणों में, माथा अपना टेका॥
आओ गुरु के गुण गा लें हम,तजकर निजी अहम् को। चल रे!...
कभी नहीं ये नजर उठाते, पर भर देते झोली।
बड़ी निराली हुनर गुरु की, करें दिवाली होली॥
कभी दवाई ना देते पर, स्वस्थ करें चेतन को। चल रे!...
बड़े निराले विद्या गुरुवर, भाग्य सजा दें अपना।
गुरु की महिमा गाकर देखो, पूरा होगा सपना॥
कभी दिखाई ना देंगे पर, दूर न होंगे क्षण को। चल रे!...
ऐसा दीप जलाते गुरुवर, जिसमें धुआँ न बाती।
आँधी तूफाँ बुझा न सकते, जोत जले दिन राती॥
मन मंदिर में भरें उजाला, दूर करें अघ-तम को। चल रे!...

२२. बगल में पिच्छी, हाथ में कमण्डल

(लय-राम जी की निकली सवारी...)

बगल में पिच्छी, हाथ में कमण्डल, रूप है निरम्बर, भावना है मंगल।
हम दास गुरु के, गुरु अपने स्वामी, अपनाओ हमको, हे जग कल्याणी॥
दर्शन पाएँ, पूजा-रचाएँ। गुरुवर हमको अब स्वीकारो।
गुरुवर की आरति उतारो, सब मिल के चरणा पखारो॥
हृदय के दीये में श्रद्धा की ज्योति से, गुरुवर की मूरत निहारो॥
दक्षिण को त्यागा उत्तर को आए, सुज्ञानसागर से दीक्षा को पाए।
गुरुवर की आज्ञा से गुरुकुल सजाए, अपनी तपस्या से जग को चमकाए॥
जिनने पुकारा उनको सँभाला-भक्तों की नैय्या भव पार उतारो।
गुरुवर की...
भटकों को तुम ही तो राह दिखाए, दुखियों का दुख तो तुम ही भगाए।
अज्ञानी जन को ज्ञान दिया है, याचक को मुँह माँगा दान दिया है॥

धर्मी को दीना तीरथ नवीना, भक्तों के मन मन्दिर में पधारो।
गुरुवर की...
चिंता नहीं क्या तुमको हमारी, पटरी पै ला दो भक्तों की गाड़ी।
रातें हटा दो दुखयारी काली, रत्नों से भर दो ये झोली खाली॥
हर लो अँधेरे, कर दो सबेरे- संयम से हमको भी अब सँवारो।
गुरुवर की...

२३. सबसे सुन्दर है गुरु नाम

(लय-जग में सुंदर हैं दो नाम...)

सबसे सुंदर है गुरु नाम, आरति करके करो प्रणाम।
पूजो नाम-नाम-नाम, ध्याओ धाम-धाम॥ सबसे...
ज्ञान ज्योति से मोह नशावें, करें तपस्या ध्यान लगावें।
रूप निरंबर, जग हितकारी, विद्यागुरु निष्काम-काम-काम॥ पूजो नाम...
शिष्य और गुरु ज्ञान-गुरु के, थे वैरागी आप शुरु से।
के तीर्थंकर सी, देह दिगम्बर,भक्तों के प्रभु राम-राम-राम॥ पूजो नाम...
सूरज से ज्यादा तेजस्वी, निर्भय साधक बच ओजस्वी।
तारण तरण, जहाज जगत् के, ले चलिए शिव धाम-धाम-धाम॥ पूजो नाम...

२४. विद्यागुरुवर न्यारे

(लय-संसार है इक नदिया...)

विद्यागुरुवर न्यारे, चलते सुख को वरने।
हम चरणों में आये, गुरु की आरति करने॥
गुरु प्राण-प्राण में है, गुरु श्वास हमारे हैं।
गुरुवर अपने स्वामी, हम दास तुम्हारे हैं॥
अज्ञान मिटा दो तुम, भव सागर से तिरने। हम चरणों...
गुरु-ज्योति पुँज चमके, हम दीप दिखायें क्या ?
जुगनू भी नहीं हम तो, फिर भी गुण गायें आ॥
आतम की ज्योति जले, पापों का तम हरने॥ हम चरणों...
न ही दीप ज लाना है, न ही मणियाँ पाना है।
बस राह मिले साँची, सो गुरु-गुण गाना है॥
अब कृपा करो गुरुजी दे डालो सुख झरने। हम चरणों...

तुम सूरज से चमको, सब दूर अँधेरे हों।
हम तो इक किरण बनें, नित साथ हि तेरे हों॥
इच्छा बस इतनी सी, भव-भव बन्धन हरने। हम चरणों...

२५. आरति-आरति आरति-रे

(लय-रंगमा रंगमा रंगमा रे...)

आरती-आरती-आरति-रे, गुरु तेरी उतारें हम आरति रे।
विद्या गुरुवर भगवन् हमारे,भगवन हमारे हाँ-हाँ भगवन हमारे।
अँखियाँ गुरु को निहारती रे-निहारती रे, गुरु तेरी उतारें...
भाव-भक्ति से दीये जलाए, दीये जला, हाँ-हाँ दीये जलाए।
जलवा दो श्रद्धा की बाती रे। बाती रे, गुरु तेरी उतारें...
सबसे बड़ा पर्व गुरुवर की कृपा, गुरुवर की कृपा हाँ-हाँ गुरु...।
भक्तों की गतियाँ सुधारती रे। सुधारती रे, गुरु तेरी उतारें...
गुरुवर सँभालों भक्तों को तारो, भक्तों को तारो हाँ-हाँ भक्तों...
'सुव्रत' की आतम पुकारती रे। पुकारती रे, गुरु तेरी उतारें...

२६. दीये जले चारों ओर रे

(लय-नाचै जौ मन कौ मोर रे...)

दीये जले चारों ओर रे -२
विद्या गुरु की करें आरती, दीये जले...
चमके थाली सोने जैसी, रत्नों जैसे दीये सजे।
जगमग जगमग जोत जली जा, विद्यागुरु के चरण भजे॥
भक्ति की उठ रइ हिलोर रे। हम सब उतारें...
चलते-फिरते तीरथ तुम हो, जय! जयवन्त धरम तुम हो।
भव-सारग के तीर तुम्हीं हो, जिन-भगवन्त परम तुम हो॥
तुम हो भव-कानन के छोर रे। हम सब उतारें...
आप अनाथों के हो स्वामी, कहलाते हो निर्मोही।
धीर-वीर गंभीर शूर हो, उत्कर्षों के आरोही॥
भावों से करते विभोर रे। हम सब उतारें...
गरज नहीं, हो साथी दुनियाँ, गुरु चरणों में माथ रहे।
कृपा तुम्हारी हम पर बरसे, फिर डर की क्या बात करें॥
अब तो सँभालो डोर रे। हम सब उतारें...

२७. माथा टेको गीत गाओ, अर्चना करो।

(लय-कुण्डलपुर की धूल सिर लगाने...)

माथा टेको गीत गाओ, अर्चना करो।
विद्या गुरु की आरति कर वंदना करो॥
गुरु-रूप अर्हत् जैसा जिन धर्म दाता है।
करुणा का अवतारी ज्ञान ध्यान तप विधाता है॥
साँचे संत पाके श्रेष्ठ साधना करो। विद्या गुरु...
जब से लिया जन्म तो, अँधेरा ही अँधेरा है।
गुरु के चरणा पाये तो सबेरा ही सबेरा है॥
ज्ञान ज्योति पाने बंधु ! मान ना करो। विद्या गुरु...
पाप मोह दूर होगा मंजिल, भी मिलेगी यार।
गुरु आज्ञा पर चलकर देखो जीवन में बस एक बार॥
वक्त से ना डरकर भागो, सामना करो। विद्या गुरु...
सबकी इच्छा पूरी होगी, झोली भर जाएगी।
ऊपर वाली झिलमिल दुनियाँ भूपर उतर आएगी॥
विश्व कल्याण की बस भावना करो। विद्या गुरु...

२८. ज्योतिर्मय विद्यागुरु जग को

(लय-आत्म शक्ति से ओत प्रोत...)

ज्योतिर्मय विद्यागुरु जग को, ज्योतिर्मय तुम कर दो।
ज्योतिर्मय तुम वर दो॥
आँधी हो तूफाँ हो अथवा, झंझावात झकोरे।
दीप हमारे जलते जायें, विचलित न हों थोड़े॥
प्रेम दया विश्वास धरम का, साहस हम में भर दो।
ज्योतिर्मय तुम वर दो॥
ज्योतिर्मय सूरज ना बनना, नहीं चाँद ना तारे।
दीप बना दो यों जो गुरु के, चरणा सदा निहारे॥
अरज हमारी पूरी होने, गुरुवर इक अवसर दो।
ज्योतिर्मय तुम वर दो ॥

हमें चिराग बनाना यों जो, आँचल नहीं जलाये।
आग बनाना तो फिर यों जो, कर्म दग्ध कर जाये॥
ज्योतिर्मय हम करें आरति, ज्योतिर्मय उर कर दो।
ज्योतिर्मय तुम वर दो॥

२९. दीप जले तेरे द्वार,

(लय-ताली बजा के बोल कि बाबा...)

शुभ दीप जले, शुभ दीप जले,
मंगलमय शुभ दीप जले॥
दीप जले तेरे द्वार, गुरुवर दीप जले।
हो आरति बारम्बार, गुरुवर दीप जले॥
कोई कहे गुरुवर, कोई कहे भगवन।-२
तुम जग के पालनहार, गुरुवर दीप जले॥ हो आरति...
कोई कहे सूरज, कोई कहे चंदा।-२
तुम रत्नों के भण्डार, गुरुवर दीप जले॥ हो आरति...
कोई कहे आदि, कोई कहे वीरा।-२
तुम धर्मों के आधार, गुरुवर दीप जले॥ हो आरति ...
कोई कहे पावन, कोई कहे सावन।-२
तुम दुनियाँ के त्यौहार, गुरुवर दीप जले॥ हो आरति ...
कोई कहे मंगल, कोई कहे मंजिल।-२
तुम मुक्ति के भर्त्तार, गुरुवर दीप जले॥ हो आरति...

३०. गुरु- आरति को दीये जले।

(लय-बहुत प्यार करते हैं तुमको...)

गुरु- आरति को दीये जले।
विद्या-गुरु जी लगते भले॥
तुम्हारे बिना दूर क्या हों अँधेरे।
तुम्हारी कृपा से होते सबेरे॥
भक्ति की गंगा, बहती चले। गुरु आरति...
भक्ति में झूमें भक्तों की टोली।

पलकें बिछा के पूरें रँगोली॥
गुरु के बिना हमको, दुनियाँ खले। गुरु आरति...
गुरु आरति सूरज बिना फूल खिलते नहीं।
सागर बिना रत्न मिलते नहीं॥
सूरज भी सागर भी, तुम से पले। गुरु आरति...
चंदा सितारों की जाने क्या मंशा।
सूरज तो खुश है करके प्रशंसा॥
मुस्कान से अपनी, दुनियाँ खिले। गुरु आरति...

३१. गुरुवर तेरी मूरत को,

(लय-माता तू दया करके)

गुरुवर तेरी मूरत को, मन मोरा निरख रहा।
करके अब आरतिया, गुण गाने थिरक रहा॥
नहीं किरणें सूरज सी, नहीं चंदा सी मणियाँ।
नहीं तारे झिल-मिल हैं, नहीं रत्नों की लड़ियाँ॥
दीपक छोटा है पर, गुरु- पद हरख रहा। करके...
दुनियाँ में मंगल हो, जग अँधयारा हर ले।
गुरु चरणों में चमके, आँधी तूफाँ सह ले॥
गुरु- पद का पा आलोक, मन मंदिर चमक रहा। करके...
कोई आदि दीपक है, कोई मध्य दीप प्यारा।
कोई अन्त दीप माना, कोई तल में अँधयारा॥
शुभ हृदय दीप गुरु से, शिव सुख सा झलक रहा। करके...
हम आन पड़े गुरुजी, अब चरणों में तेरे।
जैसा करना करदो, पर हर लो अँधेरे॥
तेरे इक मुस्काने पर, जग सारा महक रहा। करके...

३२. जय जय गुरु की बोल रे बाबा,

(लय-भक्ति कर अनमोल रे...)

जय जय गुरु की बोल रे बाबा, जय जय गुरु की बोल रे बाबा।
आरती कर अनमोल रे बाबा-आरती कर अनमोल रे बाबा॥

चंदा सूरज दूर रहें पर, किये चाँदनी दिए प्रकाश।
गुरु-पद छाया मंगलकारी, तब ही दुनियाँ गुरु की दास॥
मन की अखियाँ खोल, रे बाबा-मन की अखियाँ। आरति कर...
त्याग तपस्या ज्ञान तीर्थ का, विद्यासागर न्यारा नाम।
गुरु कृपा जिनको मिल जाए, उनके पूरे हों सब काम॥
गुरु-पद को मत तौल, रे बाबा - गुरु-पद को मत तौल। आरति कर...
धरती बन जाये गर कागज, स्याही सब सागर का नीर।
कलम बनें सब कल्पवृक्ष अरु, सुरगुरु लिखने हो गंभीर॥
लिख न सकें गुरु-बोल,रे बाबा-लिख न सकें गुरु-बोल। आरति कर...
कहाँ-कहाँ हम भटक चुके हैं, कौन-कौन से गाँवों में।
अब तो आके बैठ शांति से, विद्या-गुरु की छाँवों में॥
इधर-उधर मत डोल, रे बाबा- इधर-उधर मत डोल। आरति कर...

३३. जय जय जय जय बोलो।

(लय-बम बम बम बम बंबई...)

जय जय जय जय बोलो, मन की अँखियाँ खोलो।
करके गुरु की आरति भक्तों, मुक्ति के पट खोलो। जय जय ...
बाहर दुनियाँ जग मग है पर, मन में भरे अँधेरे।
गुरु चरणों में ज्ञान ज्योति के, होते सदा सबेरे॥
गुरु के चरण न तोलो, मन की अँखियाँ खोलो। करके...
करम ना भूलो, धरम ना भूलो, भूलो ना गुरु-वाणी।
गुरु कृपा गर मिल जाये तो, राह मिले कल्याणी।
इधर-उधर न डोलो, मन की अँखियाँ खोलो। करके...
बात नहीं जो गुरु की मानें, विफल सकल जग घूमे।
गुरु आज्ञा में चलकर देखो, तुरत सफलता चूमे॥
निखिल पाप-मल धो लो, मन की अँखियाँ खोलो। करके...
उगता सूरज सभी चाहते, ढलता मन नहीं भाता।
लाली ना उजयारा फिर भी, ज्ञान-दीप मन भाता॥
उर में अमृत घोलो, मनकी अँखियाँ खोलो।
करके गुरु की आरति भक्तों, मुक्ति के पट खोलो॥ जय जय...

३४. कभी तो ये गुरुवर मोती बन

(लय-कभी तो ये बाबा...)

कभी तो ये गुरुवर, मोती बन जाते हैं।
कभी तो ये गुरुवर, ज्योति बन जाते हैं॥
अज्ञान अँधेरे को, गुरुदेव मिटाते हैं, ज्योति जलाते हैं। तो बोलो ना-
जग बियावान जंगल, है मोह अँधेरा भी।
गुरु-पद की किरणों से, हो राह सबेरा भी॥ तो बोलो ना-
गुरु विद्या का सूरज, दिन रात चमकता है।
गुरु पद के सौरभ से सौभाग्य महकता है॥ तो बोलो ना-
हम अनगढ़ पत्थर हैं, गुरु शिल्पकार न्यारे।
अब हमें तराशों तो, हम ईश बनें प्यारे॥ तो बोलो ना-
गुरु-कृपा के बादल, हर ओर बरसते हैं।
हम पाने को मुस्कान, दिन रात तरसते हैं॥ तो बोलो ना-

३५. दीपक ही दीपक जलायेंगे।

(लय-पलकें ही पलकें बिछाएंगे...)

दीपक ही दीपक जलायेंगे।
विद्या गुरु की आरती हम गायेंगे॥
झिलमिल झिलमिल चमचम-चमचम थाली ये सजायी।
थाली ये सजायी हाँ-हाँ ज्योति भी जलायी॥
झूम-झूम भक्ति में इठलायेंगे॥ विद्यागुरु...
सूरज से क्या लेना, चंदा तारों से क्या लेना।
तारों से क्या लेना, हमको रत्नों से क्या लेना॥
श्रद्धा के दीये जलाएँगे॥ विद्यागुरु...
श्रद्धा की ज्योति के आगे दुनियाँ पड़ती फीकी।
दुनियाँ प?ती फीकी सोचो श्रद्धा ज्योति नीकी॥
मन मंदिर में गुरु को बिठायेंगे॥ विद्यागुरु...
गुरुवर जग में दीन दयाला, पूजित महा विशाल हैं।
पूजित महा विशाल सुनलो जिनवाणी के लाल हैं॥
भक्तों की भक्ति से मुस्कायेंगे॥ विद्यागुरु...

३६. देवा हो देवा जय गुरुदेवा

(लय-देवा हो देवा गणपति देवा...)

देवा हो देवा जय गुरुदेवा, विद्यागुरु भगवान।
हम तो करते आरति गुरुजी, हरो तिमिर अज्ञान॥ गुरुजी, हरो...
गुरु की महिमा का क्या कहना, गुरु से बढ़कर कौन है ? हो गुरु...
गुरु भक्ति में हम नहीं पीछे, हम से बढ़कर कौन है ? हो हम...
विद्यागुरु की जय-जय-२
दर्शन हो दर्शन गुरु दर्शन से, पाते सब वरदान॥ हम तो...
भक्त सुदामा के चावल भी, अक्षय हो भण्डार रे। हो अक्षय...
भाव-भक्ति श्रद्धा अर्पण से, ज्वार बने नग-हार रे॥ हो ज्वार...
विद्यागुरु की जय-जय-२
पूजा हो पूजा गुरु-पूजा से, जग का हो कल्याण॥ हम तो...
सूर्य-चाँद तारों की ज्योति, गुरु ज्योति से हीन है। हो गुरु....
गुरुज्योति आँधी तूफाँ से, नहीं बुझे न मलीन है॥ हो नहीं...
विद्यागुरु की जय-जय-२
सेवा हो सेवा, गुरु सेवा से, भक्त बनें भगवान॥ हम तो...
गुरु उपकारों की बलिहारी, किससे पूरा गान हो।हो किससे...
तब ही गुरु पहले पुजते हैं, बाद पुजे भगवान हो। हो बाद...
विद्यागुरु की जय - जय...
किरपा हो किरपा गुरु किरपा से, पाओ पद निर्वाण। हम तो...

३७. आरति... हो... आरति...

(लय-पंखिड़ा हो पंखिड़ा)

आरति... हो... आरति...
आरती हम विद्या गुरु की उतारेंगे।
आरती उतार किस्मत हम सँवारेंगे॥ आरती...
ओ! विद्या गुरु के भक्त लोग जल्दी आओ रे।
दीया बाती थाली भर के जल्दी लाओ रे॥
भजन गाके, धूम मचा के, पुण्य कमायेंगे। आरती...

विद्यागुरु की ज्योति देखो है अनोखी रे।
सूर्य चाँद तारों से भी ज्यादा चोखी रे॥
ज्ञान-ज्योति पाके मन के तम नशायेंगे। आरती...
विद्यागुरु का ज्ञान-ध्यान तप कमाल का।
करता मंगल कार्य धरम की मशाल का॥
भक्ति करो अरज सुनके, गुरु मुस्करायेंगे। आरती...

३८. आतम की ज्योति जलाय

(लय-मंदिर हमारे में आ जइयौ)

आतम की ज्योति जलाय दइयौ, विद्या गुरुवर मोरे।
अँधयारौ मन कौ मिटाय दइयौ-विद्यागुरुवर मोरे॥
हमने तो केवल आरति उतारी, तुमने तो किस्मत रेखा सँवारी।
भक्तों में किरपा बना, रइयौ-विद्या गुरुवर मोरे॥ अँधयारा...
चरणा धुला हम पूजा रचाएँगे, शुद्धि से शुद्ध ही भोजन कराएँगे।
चौके में हमरे पधार जइयौ-विद्यागुरुवर मोरे॥ अँधयारा...
तुम ही हो धड़कन में तुम ही हो श्वाँसों में,
गिनती हमारी हैं गुरुवर के दासों में।
चरणों में हमखों लिपटा, रइयौ-विद्यागुरुवर मोरे॥ अँधयारा...
तुम बिन हमारो तौ कौनऊँ हैं नइयाँ, थामें तौ रइयौ हमारी जा बइयाँ।
तन्नक सौ अब तो मुस्काय दइयौ-विद्या गुरुवर मोरे॥
अँधयारा मन कौ मिटाय दइयौ-विद्या गुरुवर मोरे॥

३९. हाथों में लैं कैं दिया बाती,

(लय-मंदिर में बैठी चार सखियाँ...)

हाथों में लैं कैं दिया बाती, करौ विद्यासागर की आरती।
कोई कहे इनखों अरिहंत जैसौ, कोई कहे सिद्ध भगवंत जैसौ-२
हम तो कहें मोक्ष-सारथी, करौ विद्यासागर की आरती। हाथों...
पीड़ा हरे आचार्य गुरुवर की बातें, हरते उपाध्याय पापों की रातें-२
किरपा सभी को सँभारती, करौ विद्यासागर की आरती। हाथों...
तुमने जा दुनियाँ तौ झटके में त्यागी, आतम को ध्या तुम बनके बिरागी-२
तुमको पुकारें भारत-भारती, करौ विद्यासागर की आरति। हाथों में.....

हमने सुना तुमने लाखों को तारा, चमका दो हम सब की किस्मत का तारा-२
आँखें तुम्हीं को निहारती, करौ विद्यासागर की आरती। हाथों...

४०. उतार लइयौ आरती गुरु की

(लय-उतार दइयौ भव सागर सें...)

उतार लइयौ आरती गुरु की, गुरु भगवान हमारे।
गुरु की आरती करके देखों, काम बनेंगे सारे॥
बड़भागी गुरु-दर्शन पाते, गुरु के चरण धुलाते।
पूजन करते भजन सुनाते, गुरु की शरणा पाते॥
गुरु की किरपा पाकें देखौ, हो जैं वारे-वारे। उतार लइयौ...
भटक-भटक भव की गलियों में, दुख ही दुख हम पाते।
बड़े पुण्य से साँचे गुरुवर, हम सबको मिल पाते।
गुण गा लो ऐंसे गुरुवर के, गुरुवर गाँव पधारे। उतार लइयौ...
आदिनाथ की गुरुवर छाया, महावीर से पुजते।
जियो और जीने दो कहते, तीर्थंकर से लगते॥
चलते-फिरते तीरथ गुरुजी, तारणतरण सहारे। उतार लइयौ...
हमें कछू नंई चाने गुरुवर, बस हमखों अपना लो।
भवसागर में डूबी नैय्या, हाथ लगा तिरवा दो॥
मुस्का कें मंजूरी दै दो, खुल जैं भाग्य हमारे। उतार लइयौ...

४१. विद्या ज्योति बिन गुजर गईं

(लय-सोते सोते में निकर...)

विद्या ज्योति बिन गुजर गईं, कितनीं जिन्दगीं।
करके आरति सँवर गईं, कितनीं जिन्दगीं॥
ज्ञान कहो या विद्या कह लो, एकड़ बात रही जो।
वीतराग विज्ञान समझ लो, हित की बात कही जा॥
भरमत-भरमत में गुजर गईं, कितनीं जिन्दगीं। करके आरति...
मनमानी तौ खूब करी पै, करी न मन की मारी।
जवइँ भटक रइ चेतन भव-भव, देखो मारी-मारी॥
बिलखत-बिलखत में गुजर गईं, कितनीं जिन्दगीं। करके आरति...

जीवों की करुणा ने पाली, गुरु आज्ञ ने मानी।
दान दच्छना की ने सोची, बने मूढ़ अज्ञानी॥
खोजत-सोवत में गुजर गई, कितनीं जिन्दगी। करके आरति...

४२. कर लइयौ गुरुवर की आरति

(लय-काट लेओ करमन के फंदा...)

कर लइयौ गुरुवर की आरति-इतइं आके(
कर लइयौ गुरुवर की आरति॥
तीर्थंकर से तीरथ पाये, गुरु-मूरत भक्तों को भाये।
विद्यागुरु शिव सारथी-इतइं आके ॥ कर.....
गुरुवर साँचे धरम खजाने, दानी आये रतन लुटाने।
लूटो गुरु की भारती-इतइं आके ॥ कर.....
गुरु की महिमा जा, न वरणी, जैसी करनी वैसी भरनी।
कृपा गुरु की तारती-इतइं आके ॥ कर.....
गुरु के जो जन बने पुजारी, उनने पायी मोक्ष सवारी।
गुरु से माया भी हारती-इतइं आके ॥ कर...

४३. नन्हीं-नन्हीं थालियाँ

(लय-नन्हीं-नन्हीं कलियां...)

नन्हीं-नन्हीं थालियाँ, नन्हें-नन्हें दीपक।
नन्हीं-नन्हीं ज्योति जलाय कैं, गायें आरति के गीत...॥
पहली आरति आचार्य रूप की।-२
भक्ति की गंगा बहाय कैं, गायें आरति के गीत॥ नन्हीं...
दूजी आरति उपाध्याय रूप की।-२
श्रद्धा के दीप जलाए कैं, गायें आरति के गीत॥ नन्हीं...
तीजी आरति मुनि-साधु रूप की।-२
अपने उर में वसाए कैं, गायें आरति के गीत॥ नन्हीं...
चौथी आरति चिन्मय रूप की।-२
अपना शीश झुकाये कैं, गायें आरति के गीत॥ नन्हीं...
पंचम आरति गुरु उपकार की।-२
गुरु महिमा को गाय कैं, गायें आरति के गीत॥ नन्हीं...

४४. जगमग ज्योति, झिलमिल बाती

(लय-गुरु मन वसिया...)

जगमग ज्योति-झिलमिल बाती, हो! गुरु की कर लो आरतिया।
विद्या-गुरु शिव के सारथिया।
सभी पूर्णिमाओं में पूनम, शरद पूर्णिमा न्यारी। हो- शरद....
उसको जनमे विद्या गुरु की, महिमा अतिशयकारी।
ओ स्वामी! महिमा अतिशयकारी॥
निज के रसिया, गुरु मन वसिया, हो! गुरु की कर लो आरतिया।
विद्या-गुरु शिव के सारथिया॥ जगमग ज्योति...
देख आपकी कोमल काया, कलियाँ शरमा जाएँ। हो- कलियाँ...
कठिन साधना तूफानी लख, तूफाँ घबरा जाएँ। हो- तूफाँ...
ओ स्वामी! तूफाँ घबरा जाएँ॥
त्यागे दूषण, जग के भूषण, हो! गुरु की कर लो आरतिया।
विद्या-गुरु शिव के सारथिया॥ जगमग ज्योति...
मधुर सरस हितकर गुरु-वाणी, आगम मर्म बता,। हो-आगम...
मंत्र मुग्ध करतारी सुनके, मिश्री शरमा जाए।
ओ स्वामी! मिश्री शरमा जाए।
मन तेजस्वी, वच ओजस्वी, हो! गुरु की कर लो आरतिया।
विद्या-गुरु शिव के सारथिया॥ जगमग ज्योति...
गुरु-मुस्कान कीमती तोहफा, पुण्यवान ही पाते। हो-पुण्यवान...
जिसे देखकर खिले फूल भी, शरमा के झुक जाते।
ओ स्वामी! शरमा के झुक जाते॥
हैं सुखकारी, गुरु गम हारी, हो! गुरु की कर लो आरतिया।
विद्या-गुरु शिव के सारथिया॥ जगमग ज्योति...

४५. गुरु भक्तों को गुरु मिले तो, दीप जले हैं।

(लय-ऊँचे टीले पर गैया का...)

गुरु भक्तों को गुरु मिले तो, दीप जले हैं।
अरे! विद्यागुरु की आरति करके फूल खिले हैं॥

गुरु भक्तों को गुरु मिले, दीप जले हैं, दीप जले हैं।
गुरुवर विद्यासागर देखो, ज्ञान की ज्योति।
लुटा रहे हैं दया धर्म के हीरे मोती॥
गुरु कृपा से गुरुवर के सान्निध्य मिले हैं। अरे! विद्यागुरु...
चलते फिरते तीरथ गुरुजी, हैं भाग्योदय।
सिद्धोदय सर्वोदय गुरु जी रहे दयोदय॥
पुण्योदय से-शिवगामी गुरु-चरण मिले हैं। अरे! विद्यागुरु...
हम पर भी गुरुवर जी कृपा अब तो कर दो।
मुस्का के भक्तों की झोली, अब तो भर दो॥
गुरु- छइयाँ से मोह पाप अज्ञान टले हैं। अरे! विद्यागुरु...

४६. कभी दीप बनके, कभी ज्योति बनके

(लय-कभी राम बनके...)

कभी दीप बनके, कभी ज्योति बनके, तम मिटाना, गुरुजी-तम मिटाना।
कभी ज्ञान बनके, कभी विद्या बनके, गम मिटाना, गुरुजी - गम मिटाना॥
हम आरती रोज उतारें, गुरु-मूरत रोज निहारें।-२
कभी गीत बनके, मन मीत बनके, सुर सजाना, गुरुजी-सुर सजाना॥
कभी दीप बनके.....
तुम रत्नों के भण्डारी, हम तेरे दास भिखारी।-२
कभी ज्ञान दे के, कभी संयम दे के, पथ दिखाना, गुरुजी-पथ दिखाना॥
कभी दीप बनके.....
तुम भवसागर के तीरा, हरते सबकी भव पीड़ा।-२
कभी दान दे के, मुस्कान दे के, सुख लुटाना, गुरुजी-सुख लुटाना॥
कभी दीप बनके.....

४७. हो ! विद्या गुरुवर, जय-जय गुरुवर !

(लय-गरवा)

हो! विद्या गुरुवर, जय-जय गुरुवर!
हो! विद्या गुरुवर को भजो दिन या रात में।
करो आरति दिये लिए हाथ में॥

ये विद्या गुरुवर हैं जग से निराले, भक्तों के नाथ सबके रखवाले।
ये करते मंगल तो बात ही बात में, करो आरति...॥
गुरु की ज्योति की महिमा है न्यारी, हरती मोहों की रातें काली-काली।
रहती भक्तों के जो सदा ही साथ में, करो आरति...॥
ज्ञान ज्योति या विद्या की ज्योति, देती भक्तों को साँचे हीरा मोती।
हम भी पायें मुस्कान अब सौगात में, करो आरति...॥

४८. कितनी प्यारी ज्योति तुम्हारी

(लय-कितना प्यारा द्वार तुम्हारा...)

कितनी प्यारी ज्योति तुम्हारी, ऐसी जला दो ज्योति हमारी।
तेरे दरश की लगन से, लेके हाथों में दीपक, हमने आरति उतारी॥
विद्या के तुम रहे खजाने, हम तो आए तुम्हें मनाने।
सुन लो अरज हमारी, लेके हाथों में दीपक, हमने आरति उतारी॥
मन मन्दिर में भरो उजाला, भव कानन का करो किनारा।
अतिशय ज्योति तुम्हारी, लेके हाथों में दीपक, हमने आरति उतारी॥
मन वीणा के तार तुम्हीं हो, हमरी तो आवाज तुम्हीं हो।
तुम सुर ताल हमारी, लेके हाथों में दीपक, हमने आरति उतारी॥
ब्रह्मा विष्णु महेश तुम्हीं हो, आदि वीर परमेश तुम्हीं हो।
तेरे हम भक्त पुजारी, लेके हाथों में दीपक, हमने आरति उतारी॥
हमको कभी न आप भुलाना, चरणों से ना दूर भगाना।
दे दो मोक्ष सवारी, लेके हाथों में दीपक, हमने आरति उतारी॥

४९. गुरुवर की हो रही जय-जय

(लय-कैंसें धरै मन धीरा रे...)

गुरुवर की हो रही जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे! आरतिया उतारौ॥
मल्लप्पा श्रीमति के मोड़ा, ज्ञान गुरु से नाता जोड़ा।
शिष्य बनें गुरु स्वामी रे, गुरु-चरणा पखारौ॥ हाँ-हाँ रे! आरतिया...
थाल सजाऔ दीप जलाऔ, मंगल-मंगल महिमा गाऔ।
नाचौ, गाऔं, झूमौ रे, गुरु-मूरत निहारौ॥ हाँ-हाँ रे! आरतिया...

चलते फिरते तीरथ गुरुजी, सब खौं भव से तारत गुरुजी।
गुरु की शरणा पाऔ रे, गुरुवर खौं पुकारौ। हाँ-हाँ रे! आरतिया...
नगन दिगम्बर चारितधारी, ज्ञानी ध्यानी पाप निवारी।
जगत-पूज्य परमेष्ठी रे, मोरी किस्मत सँवारो॥ हाँ-हाँ रे! आरतिया...
गुरु दयालु करुणाधारी, अब तौ सुन लो विनय हमारी।
मुस्का कै 'सुव्रत' खौं तारो रे, भव दुख सै निकारौ॥ हाँ-हाँ रे! आरतिया...

५०. गुरु भज लो, गुरु भजलो

(लय-शुद्ध गीता)

गुरु भज लो, गुरु भजलो, गुरु भजने का मौका है।
करो आरति, करो आरति, यही तो काम चोखा है॥
गुरु माता-पिता साथी, गुरु दूल्हे हम बाराती।
गले में हार मुक्ति का, पड़ेगा जो अनोखा है॥ करो आरति...
कोई कैसा भी हो रोगी, दवाई सब यहाँ होगी।
गुरु हैं वैद्य वैद्यों के तभी भव रोग रोका है॥ करो आरति...
गुरु के ज्ञान का प्याला, हरे अज्ञान का हाला।
चखो व्यंजन गुरु के सब,यही तो मुफ्त चौका है॥ करो आरति...
गुरु की हर कला बाँकी, अरे! तुम देख लो झाँकी।
गुरु रत्नों के भण्डारी, जगत् तो खाली खोका है॥ करो आरति...
सभी रिश्ते सभी नाते, सभी हैं स्वार्थ के छाते।
गुरु का द्वार सुखकारा, दुखी संसार धोखा है॥ करो आरति...
हमें तो ठग रहे अपने, दिखाकर रोज कुछ सपने।
पतन की राह सब त्यागो, गुरु ने पाप रोका है॥ करो आरति...

❑ ❑ ❑

आरती—मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

सुव्रतसागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें थारी मूरत निहारें॥ सुव्रतसागरजी...

१. माँ चन्द्रानी के राजेश दुलारे,
पिता साबूलाल की आँखों के तारे।
जन्मे हैं पीपरा ग्राम, आज थारी...॥

२. विद्या गुरुवर से पाकर दीक्षा,
बनकर मुनि जब पाई है शिक्षा।
करने चले हो कल्याण, आज थारी...॥

३. जगमग दीपक हाथों में लाएँ,
मंगल-मंगल महिमा को गाएँ।
करके नमोऽस्तु बार-बार, आज थारी...॥

४. सुव्रत को पालें, सुव्रत के दाता,
भक्ति में रचते हैं लाखों गाथा।
सब पर लुटाते अपना प्यार, आज थारी...॥

❑ ❑ ❑

गुरु
उस दीपक की
भांति हैंजो
स्वयं प्रकाशित होकर
दूसरों को प्रकाशित करते हैं